2025-26

पहचान

राजभाषा गृह पत्रिका

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

महापुरुषों की वाणी में हिंदी का महत्व

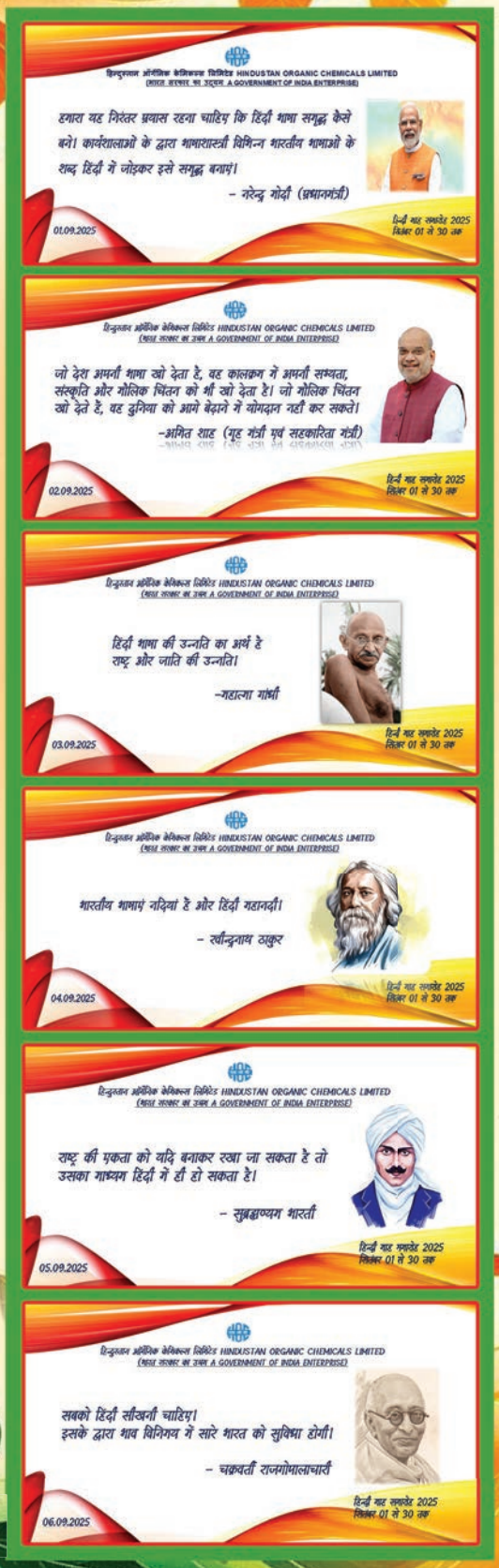

पहचान

राजभाषा पत्रिका

2025-26

संयुक्तांक

संरक्षक

एम.जे. जगदीश
कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक

बी. बालचन्द्रन
मुख्य महा प्रबंधक
(सामग्री/विपणन/मानव संसाधन/व्यापार विकास)
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा)

सम्पादन सहयोगी

अरुण एम.वी.
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

संपर्क

मुख्य संपादक,
एचओसीएल
अंबलमुगल
एरणाकुलम,
कोची -682302
दूरभाष 04842727201/298

- केवल आंतरिक परिचालन के लिए।
- पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से एचओसीएल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सूची

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) से उद्धरण 5
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री का संदेश 6
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 8
संसदीय राजभाषा समिति 9
निदेशक (वित्त) का संदेश 10
कार्यापालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी का संदेश 11
मुख्य संपादक की कलम से 12
इरिंगोल कावु भगवती मंदिर 13
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल की याद में हाथ बढ़ाना ही कविता है .. 15
कला की अनोखी प्रस्तुति - कोच्चि-मूज़ीरिस बिनाले 18
श्रीनिवासन - मलयालम की अद्वितीय प्रतिभा 20
धर्मेंद्र - हिंदी सिनेमा के "ही-मैन" 22
पद्म पुरस्कारों से अलंकृत शख्सियत- केरल के संदर्भ में 23
राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती समारोह का भव्य आयोजन 27
संपूर्ण अभिनेता एवं प्रतिष्ठित नायक 28
साइबर सुरक्षा जागरूकता माह 29
शब्दों का आदान-प्रदान और भाषा 35
अंतरिक्ष अनुसंधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: मानवता की अगली बड़ी छलांग 36
सिटी ऑफ जॉय- कलकत्ता 38
योग - मानव जाति के लिए वरदान है 41
सांस्कृतिक विरासत एवं कलात्मक उत्कृष्टता का पर्व - स्कूल कलोत्सव 43
स्वच्छ वायु, स्पष्ट/हमारी प्रतिबद्धता 45
मेरी प्यारी हिंदी 47
मेरी भाषा - मेरा गौरव 48
2026 में साइबर सुरक्षा 50
राष्ट्रीय विद्युत सुरक्षा सप्ताह अभियान-2025 52
संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, इंदौर 54
एचओसीएल में राजभाषा सेमिनार का सफल आयोजन 55
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2025 समारोह 56
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह-2026 58
यही है ज़िंदगी 59
हिंदी माह समारोह - 2025 राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन की दिशा में एक सशक्त पहल 60
पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक 62
एचओसीएल, में राजभाषा निरीक्षण 64
साँस संबन्धी समस्या: श्रमिकों को क्या जानना चाहिए 65
भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में युवाओं की भूमिका 67
संकल्पित सत्यनिष्ठा: डिजिटल युग का सतर्क प्रबंधक 69
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित तमिल कवि - आर. वैरामुथु 72
रचनात्मक कोना 74

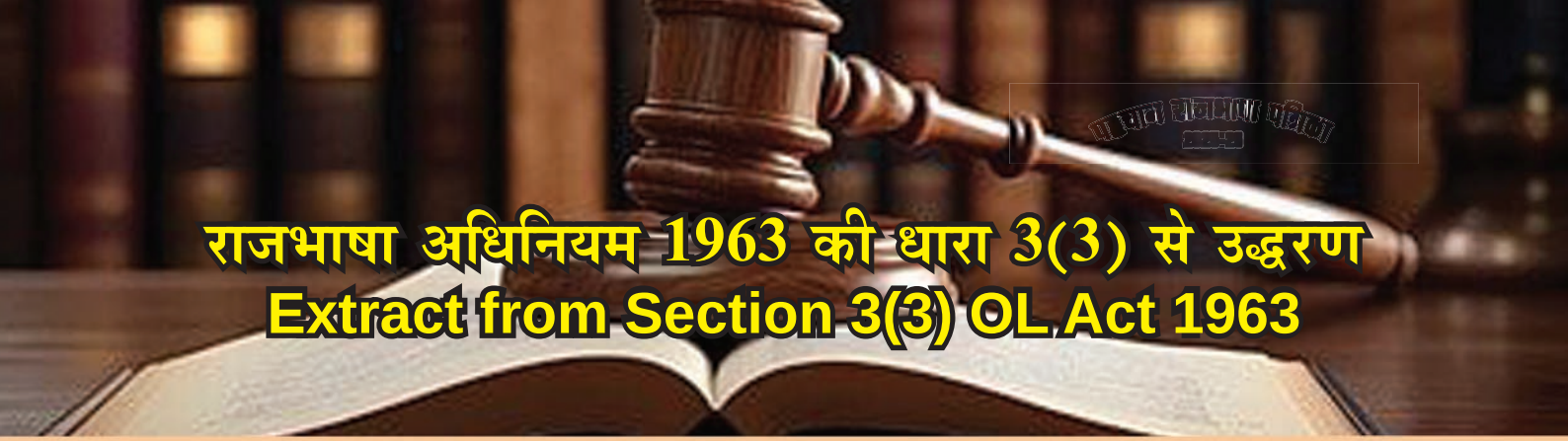

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) से उद्धरण
Extract from Section 3(3) OL Act 1963

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही-

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में/के या नियंत्रण में/के किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं;

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागजपत्रों के लिए;

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में/के या नियंत्रण में/के किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्रारूपों के लिए प्रयोग में लाई जाएंगी।

(3) Not with standing anything contained in sub-section (1), both Hindi and the English language shall be used for–

(i) Resolutions, general orders, rules, notifications, administrative or other reports or press communiques issued or made by the Central Government or by a Ministry, Department or office thereof or by a Corporation or Company owned or controlled by the Central Government or by any office of such Corporation or Company.

(ii) Administrative and other reports and official papers to be laid before a House or the Houses of Parliament.

(iii) Contracts and agreements executed, and licenses, permits, notices and forms of tender issued by or on behalf of the Central Government or any Ministry, Department or office thereof or by a Corporation or Company owned or controlled by the Central Government or by any office of such Corporation or Company.

राजभाषा नियम 1976 के नियम 6/Rule 6 of OL Rule 1976

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों का प्रयोग - / Use of both Hindi and English -

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

Both Hindi and English shall be used for all documents referred to in sub-section (3) of section 3 of the Act and it shall be the responsibility of the persons signing such documents to ensure that such documents are made, executed or issued both in Hindi and in English.

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

संदेश

प्रिय दोस्तों/सहकर्मियों,

आत्मनिर्भरता की राह पर तेज़ गति से बढ़ रहे देश में भाषा की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विश्व के सभी विकसित एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र अपनी भाषा में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। वैसे ही शिक्षा,विज्ञान,कानून,तकनीक एवं प्रशिक्षण सहित तमाम क्षेत्रों में हमें राजभाषा हिंदी और भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा ताकि हमारी नयी पीढ़ी को विशेषकर युवाओं को सशक्त करने और आत्मविश्वास के साथ अपनी भाषाओं में काम करने के लिए मजबूत किया जा सके।

बहुभाषी भारत में सभी भारतीयों को आपस में जोडनेवाली भाषा है हिंदी। हिंदी एक समृद्ध एवं सशक्त भाषा है। विविधता में एकता भारत की ताकत है जिसको कायम रखने में हिंदी की अद्वितीय भूमिका है। यह विदित है वर्तमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में कोई भी भाषा सूचना एवं प्रौद्योगिकी के साथ जुड़े बिना आगे बढ़ नहीं सकती। हिंदी भाषा भी आज सभी प्रकार के आईटी एवं एआई से सुसज्जित है। राजभाषा का कार्य संवैधानिक दायित्व से परे स्वाभिमान का कार्य भी है। मुझे गर्व हैं कि दैनिक काम-काज में हिंदी का प्रयोग हमारी संस्कृति का हिस्सा है। हमारी कंपनी में राजभाषा नीति का अच्छा कार्यान्वयन हो रहा है। वर्ष 2024-25 के लिए उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए हमारी कंपनी को प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार मिलना इसका नमूना है। हम राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए कार्यालय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में राजभाषा संबंधी अनेक गतिविधियों का आयोजन किए जा रहे हैं। विकसित भारत की अवधारणा में भाषा एवं पीएसयू की भूमिका महत्वपूर्ण है।

मुझे इस बात की खुशी है कि कंपनी की राजभाषा गृह पत्रिका 'पहचान' का नया अंक जो वर्ष 2025-26 का संयुक्तांक है, प्रकाशित किया जा रहा है। मैं इसके सम्पादन मंडल को धन्यवाद देना चाहता हूँ, साथ ही इस अंक को पठनीय एवं रोचक बनाने के लिए रचना सामग्री प्रदान किए गए सभी कार्मिकों का अभिनंदन एवं धन्यवाद देता हूँ। आप जानते हैं कि पत्रिका केवल राजभाषा के प्रचार -प्रसार का माध्यम नहीं, बल्कि कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच भी है।

आइए, हम सब मिलकर आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में अपना योगदान दें और राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करें।

जय एचओसीएल, जय हिन्द

संग्राम कुमार मिश्रा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संसदीय राजभाषा समिति
COMMITTEE OF PARLIAMENT ON OFFICIAL LANGUAGE

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन वर्ष 1976 में किया गया था। यह उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इसमें 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोकसभा से और 10 राज्यसभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। राजभाषा कार्य की प्रगति के निरीक्षण कार्य को सचारू रूप से चलाने के लिए इस समिति को तीन उप-समितियों में विभाजित किया गया है। समिति की ये तीनों उप-समितियों में अब तक 18,572 से अधिक कार्यालयों का निरीक्षण कर चकी हैं और लगभग 882 गणमान्य व्यक्तियों का मौखिक साक्ष्य भी ले चकी है, जिन में उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश,राज्यों के मुख्य मंत्री और राज्यपाल शामिल है। इसी कार्य के आधार पर समिति अब तक अपने प्रतिवदेन के बारह खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चकी है। नौ खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश हो गये है। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है।

The Committee of Parliament on Official Language was constituted in the year 1976 under the Official Languages Act, 1963. It is a highpowered Parliamentary Committee consisting of 30 Members of Parliament, 20 from Lok Sabha and 10 from Rajya Sabha. Hon'ble Union Home Minister is the Chairman of this Committee. To effectively carry out the task of monitoring the progress of official language work, this Committee has been divided into three sub-committees. These three sub-committees of the Committee have so far inspected more than 18,572 offices and taken oral evidence of about 882 dignitaries including Chief Justices of High Courts, Chief Ministers and Governors of States. Based on this work, the Committee has so far submitted twelve volumes of its recommendations to the President of India. The orders of the President of India have been passed on the recommendations made in nine volumes. The main objective of this Committee is to review the progress of use of official language Hindi in the working of the Government.

अध्यक्ष Chairman

श्री अमित शाह,केन्द्रीय गृह मंत्री

Shri Amit Shah, Union Home Minister

उपाध्यक्ष Deputy Chairman

श्री भर्तृहरि महताब, सांसद

Shri Bhartruhari Mahtab

डॉ. दिनेश शर्मा	श्री उज्ज्वल रमण सिंह	श्रीयुक्त श्रीरंग आप्पा चंदू बारणे
Dr Dinesh Sharma	Shri Ujjwal Raman Singh	Shri Shrirang Appa Chandu Barne
संयोजक Convenor	संयोजक Convenor	संयोजक Convenor
पहली उप-समिति	दूसरी उप-समिति	तीसरी उप- समिति
First Sub-Committee	Second Sub-Committee	Third Sub-Committee

संदेश

मुझे बड़ी खुशी है कि कंपनी की गृह पत्रिका 'पहचान' के वर्ष 2025-26 के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत सरकार की राजभाषा हिंदी, आज विश्व भर में भारत की भाषा और व्यापार की भाषा बन गयी है। हम इस भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। कंपनी को वर्ष 2024-25 में राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उत्तम कार्य के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार राजभाषा के प्रति हमारे प्रयास के लिए ऊर्जा एवं प्रोत्साहन है। इससे हमारे उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है।

वर्ष 2027 तक 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनने के भारत के आर्थिक लक्ष्य को साकार करने में कारोबार की भाषा के रूप में हिंदी बड़ी भूमिका निभा रही है। विश्व के सबसे बड़े बाजार की संभावनाओं का भरपूर लाभ उठाने के लिए बहुराष्ट्र कंपनियां भारत में निवेश बढ़ा रहे है। इस आर्थिक विनिवेश में वे हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का बखूबी प्रयोग कर रहे है। वे जानते हैं कि जब कारोबार/व्यवसाय भारत में करना है तो वहाँ की भाषाओं खासकर जन भाषा हिंदी का ज्ञान अपने कारोबार के लिए अनिवार्य है ताकि कारोबार में संवृद्धि मिल सके।

आत्मनिर्भर भारत के संकल्प साकार होने में सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों और बैंक जैसे आर्थिक संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है। सरकार की विविध योजनाओं के सफल कार्यान्वयन में प्रयोग करनेवाली भाषा हिंदी को बढ़ावा देना हमारा फर्ज़ बनता है। हमारी कंपनी में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सभी क्षेत्रों में किया जा रहा है। उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं का लाभ उठाते हुए कंपनी के काम-काज में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कंपनी द्वारा आयोजित विविध गतिविधियां इसका मिसाल है।

मैं पत्रिका 'पहचान' के संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सहयोग प्रदान किए गए सभी रचनाकारों का अभिनंदन करता हूँ।

जय हिन्द - जय हिन्दी

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला
निदेशक (वित्त)

संदेश

एचओसीएल परिवार के सभी सम्मानित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संगठन की हिन्दी पत्रिका 'पहचान' का नियमित प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। किसी भी संस्था की प्रगति केवल उसके कार्यों और उपलब्धियों से ही नहीं, बल्कि उसके कर्मचारियों की बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सक्रियता से भी परिलक्षित होती है। इस दृष्टि से 'पहचान' पत्रिका हमारे संगठन की रचनात्मक ऊर्जा और सामूहिक सहभागिता का एक सशक्त माध्यम है।

यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा, विचारों और अनुभवों को साझा करने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। इसके माध्यम से संगठन की विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों, नवाचारों तथा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की जानकारी भी सभी तक पहुँचती है, जिससे कर्मचारियों के बीच आपसी संवाद, सहयोग और संगठनात्मक भावना को और अधिक सुदृढ़ता मिलती है।

राजभाषा हिन्दी का प्रभावी क्रियान्वयन केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक विरासत और भाषाई समृद्धि से जुड़ा एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी एक सेतु भाषा के रूप में विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करती है। ऐसे में कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने और लिखने के लिए प्रेरित करना अत्यंत आवश्यक है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे संगठन में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न गतिविधियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि और आत्मविश्वास निरंतर बढ़ रहा है।

'पहचान' पत्रिका इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह न केवल कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है, बल्कि संगठन के भीतर सकारात्मक सोच, ज्ञानवर्धन और सांस्कृतिक चेतना को भी प्रबल बनाती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार संगठन की उपलब्धियों, कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा राजभाषा विभाग की टीम को उनकी सराहनीय पहल के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही, मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक कर्मचारी अपनी रचनाओं, विचारों और अनुभवों के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध बनाने में सक्रिय सहभागिता निभाएँगे।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य एवं संगठन की निरंतर प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

एम जे. जगदीश
कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी
एचओसीएल, कोची

मख्य संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों और सहयोगियों,

सप्रेम नमस्कार।

परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है, लेकिन उस परिवर्तन के बीच अपनी मौलिकता, मूल्यों और उत्कृष्टता को बनाए रखना ही किसी भी संस्थान की वास्तविक उपलब्धि होती है। मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है कि एचओसीएल पत्रिका का यह नवीन अंक एक नई ऊर्जा और दृष्टिकोण के साथ आपके हाथों में है। यह पत्रिका केवल कागजों का संकलन या सूचनाओं का आदान-प्रदान मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्थान की सामूहिक प्रगति, तकनीकी नवाचार और उस अटूट संकल्प का जीवंत प्रतिबिंब है जो हमें एक सूत्र में पिरोता है।

एक संस्थान की 'पहचान' केवल उसकी ईंटों, मशीनों या उत्पादों से नहीं बनती, बल्कि वह उन कर्मठ हाथों और उर्वर मस्तिष्क से परिभाषित होती है जो दिन-रात इसे संचालित करते हैं। आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में, जहाँ तकनीक और वैश्विक बाजार की माँगें हर क्षण बदल रही हैं, एचओसीएल ने न केवल अपनी विशिष्ट साख को अक्षुण्ण रखा है, बल्कि परिचालन दक्षता और गुणवत्ता के मानकों में नए आयाम भी स्थापित किए हैं। हमारी यह यात्रा चुनौतियों से भरी रही है, लेकिन प्रत्येक बाधा ने हमें और अधिक सशक्त और नवाचारी बनने की प्रेरणा दी है।

इस अंक के माध्यम से हमने अपने उन वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के अथक प्रयासों को स्वर देने की कोशिश की है, जो प्रयोगशालाओं और संयंत्रों में निरंतर नए प्रयोग कर रहे हैं। नवाचार और शोध ही वह आधारशिला है जिस पर हमारे भविष्य की मीनार खड़ी है। इसके साथ ही, हमारी कार्य-संस्कृति में 'सुरक्षा' को हमने केवल एक नियम नहीं, बल्कि एक संस्कार के रूप में अपनाया है। कार्यस्थल पर शून्य दुर्घटना के लक्ष्य की दिशा में हमारे बढ़ते कदम इस बात का प्रमाण हैं कि हमारे लिए मानवीय जीवन का मूल्य सर्वोच्च है।

संस्थान की प्रगति के तकनीकी पहलुओं के साथ-साथ, इस पत्रिका में हमारे कर्मचारियों की रचनात्मक संवेदनाओं को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है। उनकी कविताओं, संस्मरणों और कलाकृतियों में वह 'सांस्कृतिक चेतना' झलकती है जो मशीनरी के शोर के बीच मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखती है। यही वह संतुलन है जो हमें एक मशीन नहीं, बल्कि एक जीवंत परिवार बनाता है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी बढ़ती प्रतिबद्धता और 'हरित भविष्य' की ओर हमारे ठोस कदम यह दर्शाते हैं कि हम आने वाली पीढ़ियों के प्रति भी उतने ही उत्तरदायी हैं जितने कि वर्तमान लक्ष्यों के प्रति।

अंत में, मैं उन सभी सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपने लेखों, शोध और रचनात्मक योगदान से इस अंक को समृद्ध बनाया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के शब्द आपके भीतर गर्व और उत्साह का संचार करेंगे और हमें एक साझा भविष्य की ओर ले जाने में मार्गदर्शक की भूमिका निभाएंगे। आइए, हम अपनी उपलब्धियों का उत्सव मनाएं और एक अधिक समृद्ध, सुरक्षित और नवाचारी एचओसीएल के निर्माण हेतु पुनः संकल्पित हों।

शुभकामनाओं सहित,

बी. बालचन्द्रन
मुख्य महा प्रबन्धक
(सामग्री/विपणन/मानव संसाधन/व्यापार विकास)

इरिंगोल कावु भगवती मंदिर

सिन्धू डी.
मुख्य महा प्रबंधक (एफ एण्ड एस/ क्यूसी/एमएसएस/टीएसएस)

मुझे इस मंदिर और कावु (पवित्र वन) को पहली बार देखने का अवसर लगभग 1998-99 के दौरान मिला था। यह यात्रा एचओसीएल की मेरी महिला सहकर्मियों द्वारा फोरम ऑफ विमन इन पब्लिक सेक्टर नामक संगठन के माध्यम से आयोजित एक वन-डे ट्रिप का हिस्सा थी। उस वक्त समय की कमी के कारण हम केवल दूर से ही मंदिर देख सके और कावु व उसके आसपास के क्षेत्र का भ्रमण किया। वह मनोहारी दृश्य आज भी मेरी स्मृति में बसा हुआ है। इसके बाद पिछले वर्ष जुलाई महीने में, वैव्यक्तिक कारण से, मुझे फिर से इस मंदिर में आने का अवसर मिला। सहकर्मी अमलजीत से मंदिर के समय के बारे में जानकारी लेकर, मैं, मेरे पति और मेरी एक पड़ोसिन सुबह 6.30 बजे निकले और लगभग 7.30 बजे मंदिर पहुँच गए।

इरिंगोल कावु पेरुंबावूर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और 50 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ की मुख्य प्रतिष्ठा जगदीश्वरी और आदिपराशक्ति दुर्गा भगवती की है। प्रातःकाल में सरस्वती के रूप में, दोपहर में वनदुर्गा के रूप में और संध्या समय श्री भद्रकाली के रूप में यहाँ पराशक्ति की उपासना की जाती है। यह मंदिर एर्नाकुलम से लगभग 35 किलोमीटर दूर, अलुवा-मुन्नार रोड पर कुरुप्पमपडी और चेरुवट्टूर के बीच स्थित है। मंगलवार, शुक्रवार, पूर्णिमा, अमावस्या, नवमी, अष्टमी, नवरात्रि, विद्यारंभ, त्रिकार्तिक और हर महीने की पहली तारीख दर्शन के लिए विशेष मानी जाती हैं। वर्तमान में यह

मंदिर त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड के अधीन है। नैवेद्य के रूप में नेयपायसम, शक्कर पायसम तथा गेहूँ से तैयार की जाने वाली विशेष पायसम और चतुस्स्तम प्रमुख हैं। यहाँ विवाह, शबरिमला केट्टुनिरा और रामायण पाठ जैसे अनुष्ठान नहीं किए जाते। पूजा में सुगंधित फूलों का उपयोग नहीं किया जाता। यह इसकी एक विशेषता है। सुगंधित फूलों का और ऐसे फूल पहनने वाली महिलाओं को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है। सभी जाति-धर्म के लोग शुद्धता के साथ यहाँ प्रवेश कर सकते हैं। काव के चारों ओर स्थित वृक्षों में दैवी का अंश होने का विश्वास किया जाता है। यहाँ के पेड़ किसी भी परिस्थिति में नहीं काटे जाते और गिरे हुए वृक्षों के तनों का भी अन्य किसी प्रयोजन के लिए उपयोग नहीं किया जाता। इस अद्भुत प्रकृति-प्रेम के पीछे मजबूत पौराणिक मान्यताओं का प्रभाव है।

यह मंदिर जैव विविधता का एक समृद्ध भंडार है। व्यस्त शहरी जीवन से बिल्कुल विपरीत, यह स्थान गहन शांति का अनुभव कराता है। आँखों को सुकून देने वाले विशाल वृक्ष, लताओं से ढके ऊँचे-ऊँचे पेड़, उनमें बसे पक्षी, झींगुरों की गूंज से भरा वातावरण-यह काव एक अलग ही अनुभूति प्रदान करता है। यह शुद्ध वायु का अक्षय स्रोत है। मान्यता है कि इस शांत वन में स्थित मंदिर का निर्माण परशुराम ने किया था और इसकी आयु लगभग 1500 वर्ष मानी जाती है। तीन मुख्य मार्ग और कई छोटे पैदल रास्ते हमें अतीत की ओर ले जाते हुए इस मंदिर तक पहुँचाते हैं। पेड़ों की विशाल जड़ें काव को निरंतर जलसंपर्क में बनाए रखती हैं। यहाँ काली मिर्च, पिप्पली आदि औषधीय पौधों से युक्त एक औषधीय वन भी है। मधुमक्खियाँ, मकड़ियाँ, स्तनधारी, सरीसृप और वृक्षों में बसे पक्षी-ये सभी इस काव को विशिष्ट बनाते हैं। यह क्षेत्र राज्य की एक बायोडायवर्सिटी हेरिटेज साइट भी है। केरल के अन्य मंदिरों से भिन्न, यहाँ जुलूसों में हाथिनियों को निकाला जाता है। भीषण गर्मी में भी यहाँ का तीर्थकुंड कभी सूखता नहीं।

पौराणिक कथा:

द्वापर युग में, असुरराज कंस को यह ज्ञात हुआ कि देवकी और वसुदेव का पुत्र उसका वध करेगा। इस भय से उसने दोनों को कारागार में डाल दिया। आठवें संतान की प्रतीक्षा में रहे कंस को एक कन्या के जन्म का सामना करना पड़ा। वास्तव में देवकी-वसुदेव ने अपने पुत्र को गोकुल में यशोदा और नंदगोप के यहाँ जन्मी कन्या से बदल दिया था। जब कंस ने उस कन्या को मारने का प्रयास किया, तो वह उसके हाथों से फिसलकर आकाश में उठ गई और एक तारे की भाँति चमकी। साक्षात दुर्गा के रूप में प्रकट होकर उस देवी ने कंस को श्रीकृष्ण के जन्म की भविष्यवाणी सुनाई और अदृश्य हो गई। विश्वास है कि जहाँ वह दिव्य प्रकाश सबसे पहले गिरा, वहीं देवी ने वास किया-इसी कारण इस स्थान को इरिन्नोल नाम मिला, जो कालांतर में इरिंगोल बन गया।

इरिंगोल काव मंदिर की मेरी दूसरी यात्रा मुझे अत्यंत प्रिय लगी। फिर भी यहाँ का मना (नालुकट्टु), संग्रहालय और पार्क आदि अभी देखना शेष है। मन में यह प्रार्थना है कि अगली बार उन सबको देखने का अवसर मिले।

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल की याद में

हाथ बढ़ाना ही कविता है

दिव्या रामचन्द्रन
शोधार्थी, एसएसयुएस, कालडी

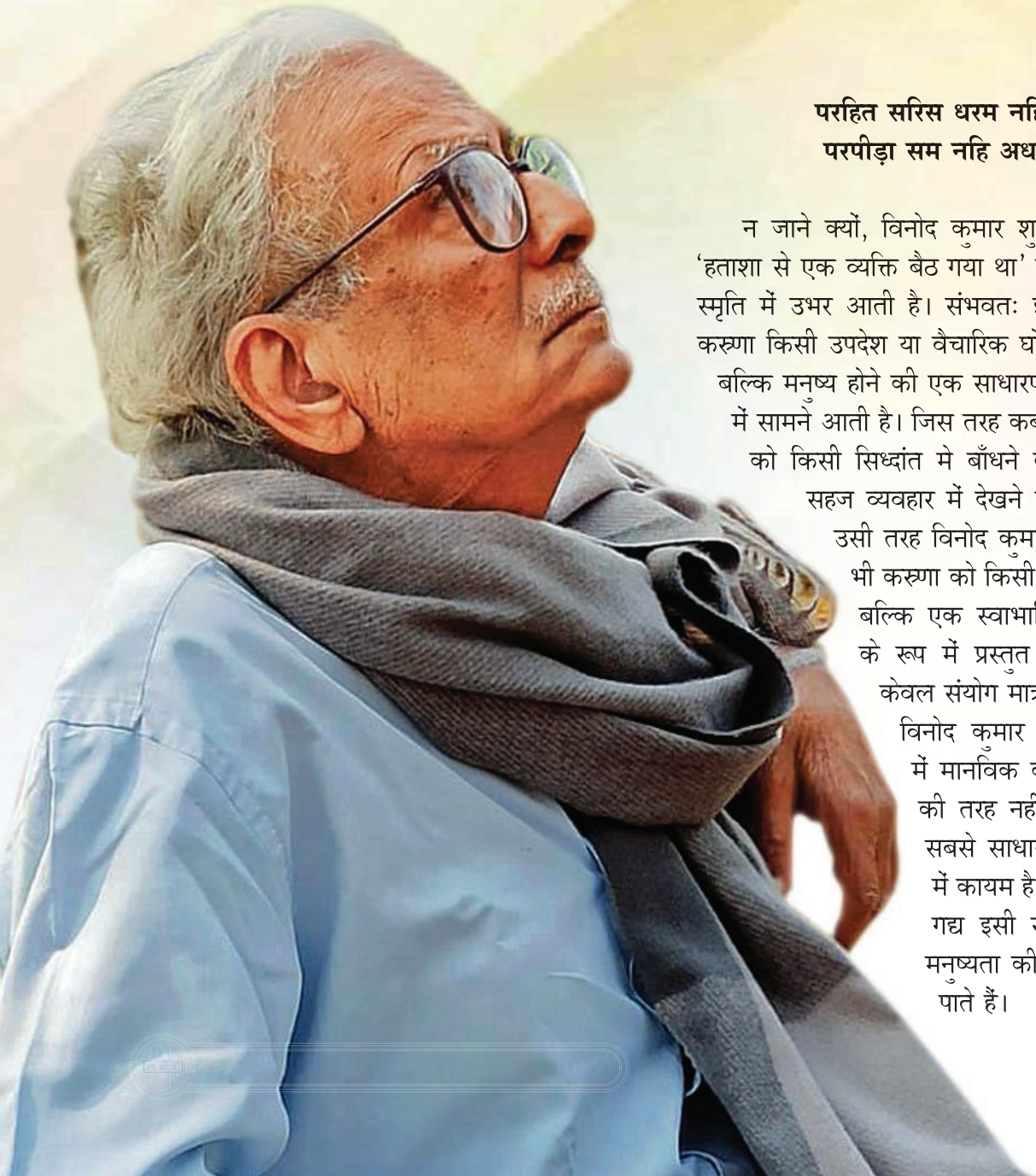

परहित सरिस धरम नहि भाई।
परपीड़ा सम नहि अधमाई।।

- कबीर

न जाने क्यों, विनोद कुमार शुक्ल जी की कविता 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' पढ़ते समय यह पंक्ति स्मृति में उभर आती है। संभवतः इसलिए कि यहाँ भी करुणा किसी उपदेश या वैचारिक घोषणा के रूप में नहीं बल्कि मनुष्य होने की एक साधारण अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। जिस तरह कबीर मनुष्य की करुणा को किसी सिध्दांत मे बाँधने के बजाय जीवन के सहज व्यवहार में देखने की कोशिश करते हैं उसी तरह विनोद कुमार शुक्ल की कविता भी करुणा को किसी घोषणा की तरह नहीं बल्कि एक स्वाभाविक मानवीय क्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। इसे हम केवल संयोग मात्र नहीं कह सकते कि विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में मानविक करुणा किसी सिद्धांत की तरह नहीं, बल्कि जीवन की सबसे साधारण क्रियाओं के रूप में कायम है। उनकी कविता और गद्य इसी साधारणता के भीतर मनुष्यता की खोज करते हुए हम पाते हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य में विनोद कुमार शुक्ल का रचनात्मक व्यक्तित्व किसी प्रस्तावित वैचारिक आंदोलन से नहीं, बल्कि जीवन की अत्यंत साधारण स्थितियों से निर्मित होता है। उनकी रचनाओं की तरफ सैर करेंगे तो हम यह पाते हैं कि उनकी रचना न तो किसी प्रकार के चीख-पुकार करते है और न ही पाठक पर किसी निष्कर्ष को थोपते है। उनकी कविता और कथा रचनाएँ जीवन के उन पलों को महत्व देती हैं, जो संभवतः बहुत छोटे, बहुत खास और बहुत सामान्य माने जाते हैं, और साथ ही जिनमें मनुष्यता की गहरी संभावना छिपी रहती है।

उन्होंने एक जगह पर यह कहा है कि वे भाषा में नहीं, छवियों में सोचते हैं। यह कथन उनके पूरे लेखन को समझने का काम करता है। उनकी रचनाओं में कल्पना और यथार्थ किसी विरोध की तरह उपस्थित नहीं होते बल्कि एक दूसरे में घुल मिलकर आते हैं। वे पहले दृश्य देखते हैं उन्हें अनुभव करते हैं और फिर उसे शब्दों का रूप देते हैं। यही कारण है कि उनकी कविता किसी विचारधारा की व्याख्या नहीं लगती बल्कि एक जीवित अनुभव की तरह सामने आती है।

उनकी कविता 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' इस काव्य दृष्टि की अत्यंत प्रतिनिधि रचना है। उनकी कविताओं की एक पैटर्न यह भी हैं कि कविताओं का अलग से कोई शीर्षक नहीं होता बल्कि हर एक कविता की शुरुवाती पंक्ति ही शीर्षक होती हैं। यह भी एक खासियत मान सकते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि किसी विस्तृत प्रसंग या घटना का विवरण नहीं करते बल्कि कविता सीधे एक मानसिक अवस्था से आरंभ होती है और वह अवस्था है 'हताशा'। यहाँ किसी भी व्यक्ति का नाम या उसकी कोई विशिष्ट पहचान का जिक्र कवि नहीं करते हैं। वह फलाना व्यक्ति कोई भी हो सकता है। हममें से या तुममें से कोई भी हो सकता हैं। कवि स्वयं यह बात भी स्वीकार करते है कि वह उस तमाम व्यक्ति को नहीं जानते हैं। किंतु इस बात पर गौर करते है कि वे उस व्यक्ति को तो नहीं जानता लेकिन उसकी हताशा को जरूर जानता था। यहीं वह पंक्ति हैं जहाँ कविता की संवेदना का केंद्र बिंदु है। कवि की पहचान व्यक्ति से नहीं, उसकी हताशा से यानी कि उसकी पीड़ा से है। वह व्यक्ति किस दौर से गुज़र रहा हैं उस अवस्था से कवि वाकिफ हैं। यही पर कवि और उस व्यक्ति के बीच साधारणीकरण हो जाता हैं। वे ज़िन्दगी के अनुभव से दो नहीं बल्कि एक बन जाते हैं।

आगे कविता में कवि का उस व्यक्ति के पास जाना, हाथ बढ़ाना और उसके साथ चल पड़ना किसी नाटकीय करुणा का मंचन नहीं बल्कि एक साधारण मानवीय प्रतिक्रिया है। यहाँ हाथ बढ़ाना कोई सामाजिक दायित्व बोध नहीं, बल्कि सहानुभूति से उपजा एक सहज व्यवहार है। कविता का यह संकेत अत्यंत महत्वपूर्ण है कि कभी-कभी जीवन में मनुष्य को समझाने वाले की नहीं बल्कि उसे समझने वाले की जरूरत होती हैं। आजकल पता नहीं क्यों, सभी जन दूसरों को ज्ञान देने में ही तुले हुए रहते हैं लेकिन उसके साथ खड़े होकर उसे सही दिशा दिलाने वाला शायद ही कोई होता हैं। यहाँ इंसान के साथ खड़े होने वाले लोगों की कमी होती है। लोग अक्सर सच्चाई को जाने बगैर जजमेंटल हो जाते हैं। सच्चाई तो यह है कि कोई भी व्यक्ति जिंदगी में दुखी रहना पसंद नहीं करता लेकिन परिस्थिति ही कुछ ऐसी हो जाती हैं कि अन्य कोई उपाय नहीं सूझता। यहाँ पर कवि उस अंजान व्यक्ति से बिना कोई सवाल किए उसके पास जाता हैं, उसकी तरफ हाथ बढ़ाता हैं, वह व्यक्ति खड़ा होता है और उसके साथ चल देता हैं। ऐसे में यह दृश्य केवल दो व्यक्तियों का नहीं रह जाता, बल्कि मानवता के पुनर्स्थापन का प्रतीक बन जाता है। यहाँ खड़ा होना केवल शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संबल का संकेत है। जिंदगी से हार जाने पर, उससे उत्पन्न निराशा केलिए कवि उसे कोसता नहीं, उसे दुर्बल घोषित नहीं करता उसे जिंदगी में सफल होने का नकली आश्वासन भी नहीं देता। बल्कि उसे जीवन में दुबारा खड़े रहने का केवल एक मौका देता हैं, उसका साथ देता हैं। कई लोग उस एक मौके की तलाश में रह जाते हैं। यहाँ समाधान नहीं, बल्कि भरोसे की शुरुआत है, जो अक्सर लोग एक दूसरे के ऊपर नहीं कर पाते।

यही विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं की एक बड़ी विशेषता है कि वह कवितार्थ को स्थिर नहीं करती। उनकी रचनाएँ किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँचती दिखाई पड़ती हैं। वे पाठक के लिए हमेशा खुले दरवाज़े की तरह होती हैं। यह एक कारण भी है कि उनकी कविताओं को लेकर पाठकीय प्रतिक्रियाएँ एक जैसी नहीं होतीं। किसी पाठक को उनकी कविता अत्यंत आत्मीय लगती है, तो किसी

को वह अर्थ के स्तर पर खुली हुई प्रतीत होती है। यह विविधता उनकी कविता की सीमा नहीं, बल्कि ताकत है। उनकी कविता किसी मौजूद काव्य परंपरा में सहजता से फिट नहीं बैठती। न उसमें शास्त्रीय अलंकरण का आग्रह है, न किसी पश्चिमी सिद्धांत की नकल। वे अपनी एक निजी काव्य भाषा निर्मित करते हैं। यह भाषा अत्यंत साधारण है, पर उसमें एक खास तरह की चमक और अपनत्व है। संवादात्मक लहजा, निजी स्वर और हल्की सी कुतूहलता उनकी कविता को विशिष्ट बनाती है। यह सर्वज्ञात है कि विनोद कुमार शुक्ल केवल कवि ही नहीं, बल्कि उपन्यासकार और बाल साहित्यकार भी हैं। उनकी कथा रचनाओं में भी वही संवेदना दिखाई देती है, जो उनकी कविता में मौजूद है। चाहे उपन्यास 'नौकर की कमीज' हो या बाल साहित्य की रचनाएँ हर जगह जीवन की साधारण स्थितियों के भीतर छिपी गहरी मानवीय परतें दिखाई देती हैं। उनके लिए साहित्य किसी बड़े विचार को स्थापित करने का माध्यम नहीं बल्कि जीवन को थोड़ा और बारीकी से समझने का प्रयास है। यह भी उल्लेखनीय है कि उनका लेखन किसी तरह की विभाजनकारी प्रवृत्तियों से दूरी बनाए रखता है। धर्म, जाति, राजनीति या वर्ग इन सबके पार जाकर वे मनुष्य को केंद्र में रखते हैं। उनकी कविता यह नहीं पूछती कि सामने वाला कौन है, बल्कि यह देखती है कि वह किस अवस्था में है। यही दृष्टि उनकी कविता को आज के समय में विशेष रूप से प्रासंगिक बनाती है।

आज के साहित्यिक परिदृश्य में जहाँ तीव्र प्रतिक्रिया, स्पष्ट पक्षधरता और वैचारिक घोषणाएँ अधिक दिखाई देती हैं, विनोद कुमार शुक्ल की कविता एक अलग राह चुनती है। वह पाठक से तेज़ संवाद से बेहतर उसे रुकने, देखने और महसूस करने का अवसर देती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विनोद कुमार शुक्ल की कविता 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' यह स्मरण कराती हैं कि मनुष्यता किसी बड़े आदर्श में नहीं, बल्कि छोटे मानवीय व्यवहारों में प्रकट होती है। किसी अजनबी के साथ कुछ दूर चल लेना शायद यही उनकी कविता का सबसे गहरा और सबसे मानवीय संदेश है।

स्वच्छता अभियान

कला की अनोखी प्रस्तुति - कोच्चि-मूज़ीरिस बिनाले

जितेन्द्र मलिक
मुख्य प्रबंधक (एमएसएस/वित्त/एचआर)

कोच्चि सिर्फ एक बंदरगाह शहर नहीं है, बल्कि एक वैश्विक गांव है। कोच्चि प्राचीन काल से ही यवन (यूनानियों और रोमनों) के साथ-साथ यहूदियों, सीरियाई, अरबों और चीनियों के लिए जाना जाता था। 'अरब सागर की रानी' के रूप में विख्यात कोच्चि कई शताब्दियों तक भारतीय मसाला व्यापार का केंद्र रहा है। पंद्रहवीं सदी से लेकर आज तक कोच्चि का जो विकास हुआ है उसमें सभी क्षेत्र के लोगों ने खासकर विदेशियों ने अपना योगदान दिया है। कोच्चि की सांस्कृतिक विशिष्टताओं में से एक विभिन्न धर्मों से संबंधित लोगों का सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व है। हिंदुओं के साथ ईसाई, यहूदी और मुसलमान लंबे समय से कोच्चि की विरासत को साझा करते हैं। एंग्लो इंडियन, जैन और सिख समुदाय के लोग सालों से एक मजबूत सामुदायिक भावना के साथ शांतिपूर्वक रहते हैं। साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत के साथ आज कोच्चि केरल का वाणिज्यिक केंद्र बन गया है। कोच्चि न केवल लुभावने प्राकृतिक और समृद्ध केरल के प्रवेश द्वार के रूप में ध्यान आकर्षित कर रहा है, बल्कि राज्य के सांस्कृतिक गंतव्य केंद्र के रूप में भी लोकप्रिय शहर बन रहे है। पर्यटन के लिए शीर्ष 10 शहरों में कोच्चि शहर का 7वां स्थान है। कोच्चि कला, संस्कृति, भोजन, कार्निवल और त्योहारों का जीवंत मिश्रण है। इसी कड़ी में अब कोच्चि मुज़रिस बिनाले उसकी बेशुमार सुंदरता को और निखारती दिख रही है।

कला, संस्कृति, विरासत और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक गैर-लाभकारी न्यास के रूप में कोच्चि बिनाले

फ़ाउंडेशन (केबीएफ) जो कलाकारों का एक समूह है, की स्थापना वर्ष 2010 में हुई। केबीएफ़ द्वारा हर दो साल में विरासत शहर कोच्चि में समकालीन कलाओं की एक प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। कोच्चि-मुजरिस बिनाले का पहला संस्करण वर्ष 2012 में सम्पन्न हुआ। पूरे भारत और विश्वभर के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा एकसाथ-एक छत के नीचे विविध विषयों पर केन्द्रित कलाओं की प्रदर्शनी तैयार की जाती है। केबीएफ़ के अध्यक्ष बॉस कृष्णमाचारी के शब्दों में 'कोच्चि संस्कृतियों और आस्थाओं का जीवंत संगम है। यह समकालीन कला का एक अस्थायी विश्वविद्यालय बन गया है। प्रत्येक बिनाले संस्करण कलाकारों, क्यूरेटरों, स्वयंसेवकों और स्थानीय समुदाय के बीच सहयोग पर बनाया गया है। इसका छठा संस्करण कला को शहर के साथ बातचीत करने के लिए नए स्थान खोलकर उस भावना को गहरा करता है।' "बिनाले ने कोच्चि को एक ऐसी जगह जहां वैश्विक बातचीत का जड़ जमा सकती है बनाकर उस इतिहास और विरासत को जारी रखा है"।

12 दिसंबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक 110 दिनों में कोची के विविध केन्द्रों- मट्टानचेरी, विल्लिंगटन आइलेंड और फोर्टकोची आदि केंद्रों में भारत का सबसे बड़ा समकालीन कला कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा है। हर एक बिनाले का एक क्यूरेटर होता है। छठा संस्करण का क्यूरेटर विख्यात कलाकार है निखिल चोपड़ा। वे गोवा केंद्रित कलाकारों का समूह एचएच आर्ट स्पेस के सह-संस्थापक है। ड्रॉयिंग, फोटोग्राफी, शिल्प, इंस्टलेशन आदि क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात अद्वितीय कलाकार है। आपकी राय में 'कला एक सामूहिक प्रयास है'। इस कला प्रदर्शनी का थीम रखा गया है 'फिलहाल के लिए' (For the time being)। यह वाक्यांश तत्काल और विराम दोनों को दर्शाता है, कला के साथ रहने, इसकी बातचीत में बने रहने और उस अनित्यता को स्वीकार करने का निमंत्रण जो हमारे जीवन को आकार देता है। 25 राष्ट्रों से आए 66 कलाकार विशेषकर शिल्पियों द्वारा उनकी कला/रचनात्मक सृष्टियाँ कोच्चि के आसपास 22 केन्द्रों में प्रदर्शित किया गया है। इससे कोच्चि शहर अपनी विरासत के अनुरूप विश्व के विविध कलाओं के समागम केंद्र बनेगा। एक दर्शक को इसका पूर्ण अनुभव लेने के लिए कम से कम तीन दिन चाहिए। अपनी मुख्य प्रदर्शनी के साथ-साथ, यह विविध विषयों पर चर्चा/बातचीत, फिल्म कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, निवासों और शैक्षिक परियोजनाओं का एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करता है, जिससे संवाद, आदान-प्रदान और खोज के लिए एक अनूठा मंच बनता है।

वर्ष 2025-26 के बिनाले की एक विशेषता यह है कि इसके साथ एक छात्र बिनाले (Student Biennale) भी है। मट्टानच्चेरी के वीकेएल वेयर हाउस में आयोजित छात्र बिनाले में भारत के 175 से अधिक कला संस्थानों से परियोजनाएं लायी गयी है। वर्तमान समाज की समस्याओं जैसे युद्ध, उत्पीड़न महिलाओं के खिलाफ हिंसा और जाति विभाजन के अंधेरे पक्ष को चित्रित किया गया है। इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण संपार्श्विक प्रदर्शनियों में से एक गुलाम मोहम्मद शेख पर है जिसकी प्रस्तुति किरण नदर कला संग्रहालय द्वारा दरबार हॉल में की गयी है।

केबीएफ़ के शब्दों में 'कोच्चि-मुज़रिस बिनाले हर दो साल समुद्र की ज्वार की तरह उठती है, कोच्चि के जर्जर गलियों में फैलती है, परित्यक्त गोदाम और आंगनों को दुनिया भर की आवाजों, शरीरों और विचारों से भरा देता है। यह दर्शकों को ऐसे स्थान पर आकर्षित करते हैं जहाँ इतिहास समकालीन विचारों से ओतप्रोत होता है, कला न केवल दीवारों पर प्रकट होती है बल्कि वहाँ बिताए क्षणों, प्रदर्शनों और महसूस किए अनुभवों को साझा करते हैं। यह केवल एक कला कार्यक्रम नहीं है उससे बढ़कर निरंतर बातचीत है।'

कला के इस दुर्लभ और अद्भुत संगम को हर एक केरलीय को देखना है। अपने अतीत और वर्तमान का सम्मिश्रण यहाँ आप अनुभव करेंगे। स्तरित इतिहासों का शहर, कोच्चि आज विश्वभर में इस अनोखा कला प्रदर्शन के लिए जाना जाता है और सॉफ्ट कल्चर का हब बन गया है।

श्रीनिवासन – मलयालम की अद्वितीय प्रतिभा

सूरज आई.एस.
सहायक प्रबंधक (एच आर)

सिनेमा एक सशक्त माध्यम है जिसका गहरा प्रभाव समाज पर पड़ता है। सिनेमा आम जनता को सबसे अधिक प्रभावित करता है। समाज के विभिन्न विषयों पर जागरूकता बढ़ाने का कार्य सिनेमा कर रहा है। नकारात्मक प्रभाव से बढ़कर सकारात्मक प्रभाव लाने में सिनेमा की बढ़ी ताकत है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हकीकत को प्रस्तुत करने में और समाज की आलोचना करने में एक कलाकार के रूप में श्रीनिवासन की अग्रणी भूमिका रही है। मलयालम सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता, पटकथाकार लेखक, निर्देशक और निर्माता श्रीनिवासन का निधन 20 दिसंबर 2025 को हुआ। उनका निधन न केवल सिनेमा जगत को बल्कि केरल के पूरे फिल्म प्रमियों के लिए अपूरणीय क्षति है।

श्रीनिवासन का सिनेमा जीवन 1976 में फिल्म 'मणिमुषक्कम' में हुआ। उस समय सिनेमा के सभी क्षेत्रों में समूल परिवर्तन हो रहे थे। एक नई पीढ़ी नई कथाओं के साथ नए फिल्म बनाने में तैयार हो गए। प्रचलित परम्पराओं को तोड़कर, मनोरंजन से बढ़कर, सामाजिक असलीयत को हास्य-व्यंग्य के साथ प्रस्तुत करने में श्रीनिवासन के सिनेमा सफल हुए। उनकी प्रारम्भिक फिल्में मलयाली समाज के यथार्थ को केन्द्रित रहे। समाज की आलोचना करना, मलयाली के पाखंड को उजागर करना, मानवीय दुर्बलताओं को हास्य के साथ चित्रित करना और दैनिक जीवन की साधारण घटनाओं को सरल रूप में पेश करना उनके फिल्म की विशेषता रही। उनके किरदार ज़्यादातर उनके असली ज़िंदगी के अनुभवों से लिए गए थे। वे किरदार कभी बेरोजगार रहे, आर्थिक असमानता के शिकार रहे, संघर्ष झेलनेवाले रहे। 1995 तक ऐसे फिल्म सभी प्रकार के दर्शकों को आकर्षित करते रहे।

उनकी पटकथा में बने फिल्मों में राजनीतिक टिप्पणी और सामाजिक आलोचना अधिक रही। 1991 में 'संदेशम' इस तरह का एक फिल्म है जिसकी चर्चा आज भी हो रही है या जिसका संदर्भ आज भी ले रहा है। शायद राजनीति की तीखी आलोचना जितनी इस फिल्म में हुई उतनी अन्य मलयालम फिल्म में नहीं हुई। राजनीति युवाओं को किस दिशा में ले जा रहा है उसका सुंदर चित्रण इसमें हुआ है। पैंतीस वर्षों के बाद आज भी इसका उल्लेख बराबर होता रहता है। उस समय इस फिल्म को अश्लील की संज्ञा भी दी गयी थी। श्रीनिवासन की पटकथा और सत्यन अंतिक्काड के निर्देशन में तैयार अनेक फिल्मों ने हास्य के माध्यम से समाज की कटु आलोचना की है। श्रीनिवासन ने सिनेमा में नायक का रोल बहुत कम किया है। लेकिन सह-अभिनेता के रूप में वे मलयालम के मशहूर नायक

मोहनलाल के साथ परदे पर है। फिल्म 'नाडोडी काटु', 'पट्टणा प्रवेशम' आदि में उनका जोड़ा बहुत सफल रहा। प्रियदर्शन के निर्देशन में बने फिल्म हास्य-व्यंग्य से भरपूर हैं।

श्रीनिवासन के निर्देशन में दो फिल्म बने हैं 'वडक्कुनोक्कियंत्रम' और 'चिंत्ताविष्टाय श्यामला'। 'चिंत्ताविष्टाय श्यामला' मलयाली ज़िंदगी की एक और झलक थी। इसने उन मलयाली लोगों के दिखावे को सामने लाया जो अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा किए बिना भक्ति में शरण लेते हैं। उन्होंने मलयाली लोगों की नकली आध्यात्मिकता का मज़ाक उड़ाया। फ़िल्म का हर डायलॉग मलयाली लोगों के दिखावे पर एक सवाल था। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनका हास्य-व्यंग्य राजनीतिक एवं सामाजिक आलोचना का साधन है यानि हास्य सोचने को प्रेरित करता है। 'अरबीकथा' के क्यूबा मुकुंदन, 'उदयनाणु तारम' के सरोजकुमार जैसे किरदार इस प्रकार के हैं। कई बार उनके सिनेमा को पटकथा, कथा, अभिनेता, निर्माता या निर्देशन आदि के लिए केरल सरकार का पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

श्रीनिवासन बहुमुखी प्रतिभा रहे, जिन्होंने मलयाली लोगों को खुद पर हंसना सिखाया और समाज की बेवकूफियों को आईना दिखाया, गंभीर विषयों को हल्के -फुल्के तरीके से प्रस्तुत किया। मलयालम सिनेमा ने एक दुर्लभ और ऐसी प्रतिभा खो दी जिसकी जगह कोई नहीं ले सकता। किसी ने सही कहा कि 'मलयाली सेन्सीबिलिटी को निखारनेवाली आवाज़' खो गया।

राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम

धर्मेंद्र

- हिंदी सिनेमा के "ही-मैन"

नितिन पेंढारकर
वरिष्ठ अधिकारी (समन्वयन)

धर्मेंद्र, जिनका पूरा नाम धर्मेंद्र सिंह देओल है, हिंदी सिनेमा के सबसे लोकप्रिय और सम्मानित अभिनेताओं में से एक हैं। उनका जन्म 8 दिसंबर 1935 को पंजाब के नसराली (जिला लुधियाना) में हुआ था। साधारण परिवार में जन्मे धर्मेंद्र ने अपने संघर्ष, मेहनत और प्रतिभा के बल पर फिल्म उद्योग में एक विशेष स्थान बनाया। उन्हें प्यार से 'ही-मैन' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने पर्दे पर एक सशक्त, साहसी और आकर्षक नायक की छवि स्थापित की।

धर्मेंद्र ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 1960 में फिल्म दिल भी तेरा हम भी तेरे से की। शुरुआती दौर में उन्होंने कई रोमांटिक और पारिवारिक फिल्मों में काम किया, जिनमें उनकी सादगी और भावनात्मक अभिनय को खूब सराहा गया। 1960 और 70 के दशक में वे हिंदी सिनेमा के शीर्ष अभिनेताओं में गिने जाने लगे। उनकी लोकप्रिय फिल्मों में फूल और पत्थर, सीता और गीता, चुपके चुपके और शोले जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं।

विशेष रूप से 1975 में प्रदर्शित फिल्म शोले में वीरू के किरदार ने उन्हें अमर बना दिया। इस फिल्म में उनकी जोड़ी अभिनेत्री हेमा मालिनी के साथ बेहद पसंद की गई। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की प्रेम कहानी भी काफी चर्चित रही, और बाद में दोनों ने विवाह किया। धर्मेंद्र की पहली पत्नी प्रकाश कौर से उनके चार बच्चे हैं, जिनमें अभिनेता सनी देओल और बॉबी देओल भी प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता हैं।

धर्मेंद्र केवल एक एक्शन हीरो ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और हास्य कलाकार भी रहे हैं। चुपके चुपके जैसी फिल्मों में उनकी कॉमिक टाइमिंग ने दर्शकों का दिल जीत लिया। उन्होंने अपने करियर में 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है, जो उनकी लोकप्रियता और मेहनत का प्रमाण है।

फिल्मों के अलावा धर्मेंद्र ने राजनीति में भी कदम रखा और वे भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर सांसद बने। अपने लंबे करियर में उन्हें कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया, जिनमें फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भी शामिल है।

धर्मेंद्र का व्यक्तित्व सादगी, विनम्रता और मेहनत का प्रतीक है। उन्होंने अपने अभिनय से कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है और आज भी वे भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक चमकते सितारे के रूप में याद किए जाते हैं। उनका जीवन संघर्ष से सफलता तक की प्रेरणादायक यात्रा का उदाहरण है।

धर्मेंद्र का लंबी बीमारी के बाद 24 नवंबर 2025 को 89 साल की उम्र में निधन हो गया। भारतीय सिनेमा में धर्मेंद्र के योगदान को इंटरनेशनल लेवल पर सम्मान दिया जा रहा है - उदाहरण के लिए, उन्हें BAFTA 2026 'इन मेमोरियम' ट्रिब्यूट में दिखाया गया, जो गुज़र चुके खास फिल्मी हस्तियों को पहचान देता है।

पद्म पुरस्कारों से अलंकृत शख्सियत- केरल के संदर्भ में

निधिन वी.वी.
सहायक प्रबंधक (एच आर)

देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर की जाती है। वर्ष 2026 के पद्म पुरस्कारों की घोषणा 77वें गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर की गयी। पुरस्कार विजेताओं यानि विशिष्ट व्यक्तियों की संख्या तीन श्रेणियों में कुल 131 हैं। पद्म पुरस्कार हमेशा विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। तीन श्रेणियों में विभाजित इन पुरस्कारों में पद्म विभूषण सबसे विशिष्ट है जो असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। इस बार पद्म विभूषण से अलंकृत पाँच विशिष्ट व्यक्तियों में मरणोपरांत प्रदान किए गए श्री धर्मेंद्र सिंह देओल मशहूर फिल्म अभिनेता है और श्री वी एस अच्युतानन्दन केरल के पूर्व मुख्यमंत्री रहे हैं। पद्म भूषण से अलंकृत विजेताओं की संख्या 13 हैं जो अपने-अपने क्षेत्रों में उच्चकोटि की विशिष्ट सेवा प्रदान की है। पद्म श्री से अलंकृतों की संख्या 113 हैं जिनका किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। सामान्यतः सार्वजनिक मामले, कला, सामाजिक कार्य और विज्ञान एवं इंजीनियरिंग आदि क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों पुरस्कारों से अलंकृत किया जाता है। पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रपति के कर-कमलों से प्रदान किए जाते हैं। केरल राज्य से पुरस्कार के लिए चयनित शख्सियतों के संक्षिप्त विवरण नीचे दिये जाते हैं :

वी एस अच्युतानन्दन

सार्वजनिक मामले की श्रेणी में असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए केरल के पूर्व मुख्यमंत्री श्री वी एस अच्युतानन्दन को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें मरणोपरांत प्रदान किया गया। श्री वी एस अच्युतानन्दन को केरल में वी एस नाम के दो अक्षरों से जाना जाता है। वेलिक्ककत्तू शंकरन अच्युतानन्दन का जन्म 20 अक्तूबर 1923 में आलप्पूषा, केरल में हुआ था। बचपन में ही उन्हें माता-पिता खो गए। इसके बाद सातवीं कक्षा पूरा करने तक अपनी पढ़ाई छोडनी पड़ी। अपनी आजीविका चलाने के लिए उन्हें अनेक प्रकार के काम करना पड़ा। आपने मजदूरों और श्रमिकों के शोषण और दुर्दशाओं को देखकर उन लोगों को एकत्रित करने का कार्य किया। शायद ये राजनीतिक कार्य वे ज़िंदगी भर करते रहे। कयर फैक्टरी के श्रमिकों को संगठित कर उनके जीवन स्तर उठाने का सार्थक प्रयास आपने किया।

वर्ष 1940 में वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। तब से राजनीति में सक्रिय वी एस ने केरल के मुख्यमंत्री बनने तक विविध प्रकार के आन्दोलनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। सार्वजनिक मुद्दों पर हमेशा जागरूक वे पार्टी की नीति से कभी-कभी भटकते थे। इसी कारण उन्हें कई बार पार्टी के पदों से हटाया गया। वर्ष 1992 में वे केरल विधान सभा के विपक्ष के नेता बन गए और वर्ष 1996 के चुनाव में हारने के कारण मुख्यमंत्री नहीं बने। वर्ष 2006 में वी एस मुख्यमंत्री बने। अपने कार्यकाल में उन्होने अनेक परियोजनाएं शूरु की, कई क्रांतिकारी परिवर्तन लाए गए, भूमि और लॉटरी माफिया के खिलाफ कार्रवाई की। वर्ष 2016 में उन्हें चुनाव एवं प्रशासनिक सुधार आयोग (2016-2021) के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। 20 अक्तूबर 2023 में वे 100 वर्ष के हो गए और वर्ष 2025 में उनका निधन हो गया।

एक जन नेता के रूप में आप केरल के प्रिय नेता रहे। आप केरल के 'फिडेल कास्ट्रो' के रूप में जाना जाता है। आप हमेशा किसानों,श्रमिकों और गरीबों के सामाजिक समस्याओं से जुड़े रहे और उनके समर्थन पर कार्य करते रहे। केरल की जनताओं के ह्रदय में विराजमान वी एस आदर्श एवं अनुकरणीय नेता रहे।

न्यायमूर्ति के टी थॉमस

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री के टी थॉमस को पद्म विभूषण प्रदान करना कानून के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट सेवा का सम्मान करना ही है। कल्लूपुराकल थॉमस का जन्म वर्ष 30 जनवरी 1937 में हुआ। स्कूली और कॉलेज शिक्षा के बाद मद्रास लॉ कॉलेज से विधि की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1960 में एक अधिवक्ता के रूप में दाखिल किया और कोट्टायम में एक कनिष्ठ अधिवक्ता के रूप में अपना करियर शुरू किया और अग्रणी अधिवक्ता बन गए। वर्ष 1977 में वे जिला न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुए। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में वर्ष 1985 में आपकी पदोन्नति हुई। वर्ष 1996 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में कार्यभार लिए और संवैधानिक कानून और आपराधिक कानून विषय पर न्यायमूर्ति द्वारा कई ऐतिहासिक फैसले दिए गए।

सेवानिवृत्त होने के बाद वे भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष बने। केरल सरकार ने उन्हें कई समितियों के अध्यक्ष बनाया जो कानून के क्षेत्र में उनकी विश्वसनीयता एवं अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। वर्ष 2006 में पद्म भूषण से सम्मानित न्यायमूर्ति के टी थॉमस,कई महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए जाना जाता है। आपकी सात किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी आत्मकथा 'हनीबीस ऑफ सोलोमन' का प्रकाशन वर्ष 2008 में हुआ। न्याय के क्षेत्र में आपके निर्णय प्रतिशोध की तुलना में करुणा पर ज़ोर देनेवाले असहमतिपूर्ण मतों का समावेश रहा है। मृत्युदंड पर न्यायमूर्ति के टी थॉमस का न्यायशास्त्र उनकी विरासत का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माना जाता है। आपकी राय में 'सभ्यता की प्रगति और मानवाधिकारों के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण के साथ मानव शरीर को प्रभावित करनेवाली किसी भी सज़ा को बर्बर माना जाता है'। आपने नागरिकता संशोधन अधिनियम और समान नागरिक संहिता का प्रगतिशील रूप में समर्थन किया जो न्यायसंगत और अधिकार - केन्द्रित सुधारों के लिए उनके निरंतर प्रयास को दर्शाता है। वे शिक्षा क्षेत्र के शुल्क संबंधी समिति (जस्टिस के टी थॉमस कमिटी), पुलिस रिफ़ोर्म्स एंड मॉनिटरिंग कमिटी और स्कूल रिव्यू कमीशन आदि के अध्यक्ष रहे हैं।

नारायणन जी

वरिष्ठ पत्रकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के अनुभवी कार्यकर्ता श्री पी नारायणन जी को भारत सरकार ने पद्म विभूषण से सम्मानित किया। आप मलयालम दैनिक समाचार पत्र 'जन्मभूमि' का सह-स्थापक एवं मुख्य संपादक रहे हैं। केरल के इडुक्की जिला के तोडुपुझा में वर्ष 1938 में आपका जन्म हुआ, अपनी प्रारंभिक पढ़ाई के बाद शिक्षा के क्षेत्र में आपका कॅरियर शूरु हुआ। आप वर्ष 1959 में आरएसएस की पत्रिका 'ओर्गनईसर' से जुड़े रहे। वर्ष 1970 से 1977 तक वे भारतीय जन संघ के केरल राज्य के महासचिव बने जो भारतीय जनता पार्टी का मूल पार्टी थी और स्वदेशी जागरण मंच में सक्रिय रहे। पत्रकार के रूप में आपने जन्मभूमि दैनिक में प्रमुख स्तंभकार के रूप में कार्य किया। आपने कई पुस्तकों की रचना और अनुवाद किया है। नारायणजी नाम से प्रसिद्ध आपको साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है।

मम्मूटी

केरल के सबसे मशहूर फिल्म अभिनेता श्री मम्मूटी को भारत के तीसरे उच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। भले ही वर्ष 1998 में उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया गया हो, यह पुरस्कार उनके प्रतिबद्ध कला जीवन के लिए प्रदत्त उत्कृष्ट सम्मान ही है। पिछले पाँच दशकों से मलयालम फिल्म दर्शकों के ह्रदय में अमिट छाप छोडनेवाले श्री मम्मूटी की लोकप्रियता केवल केरल में ही नहीं देश-विदेश में भी रही। वर्ष 1971 में 'अनुभवंगल पालिच्चकल' फिल्म से श्री मम्मूटी का सिनेमा जीवन प्रारम्भ हुआ। वर्ष 2026 तक उनके पच्चपन वर्ष के फिल्म जीवन अनके हिट एवं कला केन्द्रित फिल्मों को प्रदान करने में कामयाब रहे। इसी दौरान आपको तीन बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें ये राष्ट्रीय पुरस्कार वर्ष 1990 में 'ओरु वडक्कन वीरगाथा' और 'मतिलुकल', वर्ष 1994 में 'विधेयन' और पोंथनमाड़ा, वर्ष 1999 में 'डॉ बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर' के लिए प्राप्त हुए। केरल सरकार द्वारा उन्हें वर्ष 2022 में केरल के उच्चतम नागरिक पुरस्कार 'केरल प्रभा' से सम्मानित किया गया। पद्म भूषण पुरस्कार की सूचना उन्हें तब मिली जब वे 'भ्रमयुग' फिल्म के लिए केरल राज्य फिल्म पुरस्कार सातवीं बार स्वीकार करने के समारोह में शामिल हो रहे थे। आपने मलयालम के अतिरिक्त अन्य कई भाषाओं के फिल्मों में अभिनय का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बहुमुखी प्रतिभा से धनी श्री मम्मूटी सामाजिक मुद्दों एवं अनेक सामूहिक कार्यकलापों का समर्थन करते रहे। वे अनाथालयों और बच्चों की देखभाल करनेवाले संस्थाओं को सहयोग देते रहे। आप कई संस्थाओं का संरक्षक भी है। पद्म भूषण से सम्मानित मम्मूटी केरल के लाखों फिल्म दर्शकों के दिल में बसे लोकप्रिय कलाकार है।

वेल्लापल्ली नटेशन

श्री वेल्लापल्ली नटेशन केरल के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में पिछले छः दशकों से अपनी उपस्थिति दर्ज करनेवाले सशक्त व्यक्ति है। 'वेल्लापल्ली' नाम से लोकप्रिय श्री नटेशन 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' (एसएनडीपी) के महा सचिव है। एसएनडीपी इषवा समुदाय की सामाजिक उन्नति के लिए कार्यरत सामाजिक संस्था है। इषवा समुदाय के निर्विवाद नेता एवं व्यवसायी वेल्लापल्ली केरल की राजनीति में अपने दुर्लभ प्रभाव के लिए जाना जाता है। आप पिछले 30 वर्षों से एसएनडीपी योगम का महासचिव है। अपने समुदाय के समग्र विकास के लिए हमेशा सक्रिय श्री वेल्लापल्ली अपनी तीखी टिप्पणियों से किसी सरकार को घेरे में खड़ा करते थे।

हिन्दू एकता के लिए नायर समुदाय के साथ मिलकर कार्य करने का उनका संकल्प अभी साकार नहीं हुआ। वे हमेशा इसकी ओर प्रयासरत कार्यकर्ता है। वे बदलते राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में अपनी तेज़ टिप्पणियों के कारण हमेशा सुखियों में रहे हैं। बहु संख्यक समुदाय को हाशिए पर धकेलकर, अल्पसंख्यक समुदाय को सारी सुविधाएं प्रदान करने की नीति के विरुद्ध उनकी प्रतिक्रिया राजनीतिक क्षेत्र में उथल-पुथल मचा दिया। श्री नारायण न्यास (एसएन ट्रस्ट) के अधीन असंख्य शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्ग को सशक्त करने का आपके प्रयास सराहनीय है। आपको प्राप्त सम्मान पिछड़े वर्ग को प्राप्त सम्मान ही है।

देवकीअम्मा

पर्यावरण प्रेमी कोल्लाकल देवकी अम्मा को राष्ट्र ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों का एक जंगल उगाकर प्रकृति की सेवा में तल्लीन देवकीअम्मा वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक भी है। आपकी करीब पाँच एकड़ वनभूमि में लगभग 3000 से अधिक पेड़-पौधे हैं। आप केरल के

आलपुष़ा जिला के कंडालूर पंचायत में 'तपोवनम' नामक एक वन/जंगल सृजित करने में सफल हुई। एक ऐसा परिवार जो एकसाथ पेड़ और पौधों को लगाने, उगाने और संरक्षित करने का अनोखा कार्य कर रहे हैं, इससे प्रभावित होकर वर्तमान पीढ़ी बहुत खुशी से देश-विदेशों से पेड़-पौधे लाकर लगाने में सक्रिय है।

वे पर्यावरण विज्ञान या किसी भी संबन्धित विषय का विशेषज्ञ नहीं है, न ही उन्हें ग्लोबल वार्मिंग या पर्यावरण प्रदूषण पर किसी सेमिनार या कार्यशाला में भाग लेना का अनुभव नहीं है, बल्कि उन्हें पता है कि इस धरती को बचाने में पेड़ और वन की अपनी विशेष भूमिका है और यही इस धरती को बचा सकती है। आपका वन कई प्रकार की पक्षियों खासकर प्रवासी पक्षियों का अड्डा बन गयी। आपका वन प्रकृति स्नेहियों, शोधछात्रों और पक्षिप्रेमियों का पसंदीदा जगह है और हमेशा सभी को आकर्षित करते रहे। आपके जंगल में कई प्रकार के दुर्लभ पेड़-वृक्ष हैं जिनमें नक्षत्र वृक्ष, कमंडलु, कृष्णानाल, कायाम्बू, लक्ष्मी तरु, चाइनीस ऑरेंज आदि है। वर्ष 2003 में आपको इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार, 2010 में केरल सरकार का वनमित्र पुरस्कार, 2013 में हरितव्यक्ति पुरस्कार, 2014 में राज्य वन विभाग के प्रकृति मित्र पुरस्कार और 2018 में केंद्र सरकार की नारीशक्ति पुरस्कार मिलीं। यह प्रकृति संरक्षण को अपना लक्ष्य रखकर चलनेवाले परिवार की अद्वितीय जीवन है।

कलामंडलम विमला मेनॉन

कलामंडलम विमला मेनॉन एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय नृत्यांगना हैं। अनुभवी कलाकार विमलाजी का जन्म 1943 में केरल के त्रिश्शूर में हुआ था। शुरू में आपने त्रिपुनिथुरा विजया भानु के अधीन नृत्य में प्रशिक्षण लिया। वर्ष 1960 में केरल कलामंडलम में शामिल हुईं। प्रसिद्ध गुरुओं छिन्नम्मु अम्मा, कलामंडलम सत्यभामा और तंजावुर भास्कर राव के मार्गदर्शन में उन्हें मोहिनीयाट्टम की जटिल बारीकियों में गहराई से डूबने का मौका मिला। इस कठोर प्रशिक्षण ने न केवल त्रुटिहीन तकनीक बल्कि नृत्य के आध्यात्मिक और भावनात्मक आयामों की गहरी समझ भी पैदा की। आपके नृत्य प्रदर्शन उनकी लालित्य और तरलता प्रकट करती है। आपको सूक्ष्म हावभाव, मनोरम अभिव्यक्तियों और लयबद्ध आंदोलनों के माध्यम से जटिल कथाओं को व्यक्त करने की उल्लेखनीय क्षमता है। आप इस सुंदर नृत्य रूप के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कलाकार रही।

आप केरल नाट्य अकादमी के संस्थापक हैं और मोहिनीयाट्टम कलाकारों की अगली पीढ़ी का पोषण करती हैं। आप के योगदान मंच और कक्षा से परे हैं, कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और प्रदर्शनों का व्याख्यान देती हैं, दर्शकों को मोहिनीयाट्टम के इतिहास, दर्शन और सांस्कृतिक महत्व के बारे में शिक्षित करती हैं। अपने अथक प्रयासों के माध्यम से, विमलाजी ने इस उत्कृष्ट नृत्य रूप की निरंतर जीवंतता और वैश्विक मान्यता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक समर्पित शिक्षिका जिन्होंने कई प्रसिद्ध कलाकारों को और हजारों छात्रों को प्रशिक्षित किया है। पारंपरिक कला रूपों में तत्वों को सुधारने में उनका महत्वपूर्ण हाथ रहा है। मोहिनीयाट्टम वेशभूषा, मुद्रा और संगीत वाद्ययंत्र में परिवर्तन लाने और जोड़ने में उनका योगदान महत्वपूर्ण था। वह एक उल्लेखनीय कोरियोग्राफर भी हैं। मोहिनीयाट्टम पर उनके लेख कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आपने वेम्पति चिन्ना सत्यम के एक छात्र के रूप में कुचिपुड़ी नृत्य भी सीखा और मालती जी मेनन के तहत तिरुवाथिराकली का अध्ययन किया। आप एक प्रशिक्षित कर्नाटक संगीतकार हैं। श्रीमती विमला मेनन को केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और केरल कलामंडलम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। श्रीमती विमला मेनन को मोहिनीयाट्टम में उनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

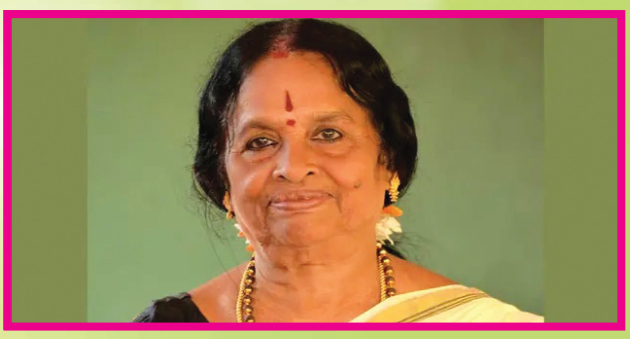

राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती समारोह का भव्य आयोजन

अरुण एम वी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 26 जून 2025 को भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में स्वर्ण जयंती समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में देशभर के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार थे। इस अवसर पर श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली, श्री बंडी संजय कुमार, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति, डॉ. सुधांशु त्रिवेदी, संसद सदस्य, राज्य सभा, श्रीमती सुधा मूर्ति, संसद सदस्य, राज्य सभा, श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली, डा. राजलक्ष्मी कृष्णन, हिंदी शिक्षाविद् एवं लेखक, दक्षिण भारत (तमिल) श्री बालेश्वर राय, पूर्व सचिव (सेवानिवृत्त), राजभाषा विभाग सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी देश की एकता, संवाद और सांस्कृतिक समन्वय का महत्वपूर्ण माध्यम है तथा राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सभी सरकारी कार्यालयों को निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

कार्यक्रम के अंतर्गत 'राजभाषा विभाग @50- प्रगति और समरसता की ओर' विषय पर एक विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विद्वानों, भाषा विशेषज्ञों और अधिकारियों ने हिंदी के प्रशासनिक, तकनीकी तथा डिजिटल प्रयोग के विस्तार पर अपने विचार व्यक्त किए। इसके अतिरिक्त युवा कलाकारों द्वारा देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी दी गईं, जिन्होंने समारोह को अत्यंत प्रेरणादायी बना दिया।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर हमारे संस्थान का भी प्रतिनिधित्व रहा। समारोह में हमारे प्रतिनिधि के रूप में श्री अरुण एम. वी., वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, श्री ए. एम. त्रिपाठी, सलाहकार, तथा श्री डी. एस. पटवाल, अधिकारी (प्रशासन) ने भाग लिया। उन्होंने कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करते हुए राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन से संबंधित विचारों एवं अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

स्वर्ण जयंती समारोह ने हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार, प्रशासनिक कार्यों में उसके प्रभावी उपयोग तथा राष्ट्र की भाषाई एकता को सुदृढ़ करने के संकल्प को और अधिक सशक्त बनाने का संदेश दिया। यह आयोजन राजभाषा के विकास और उसके उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

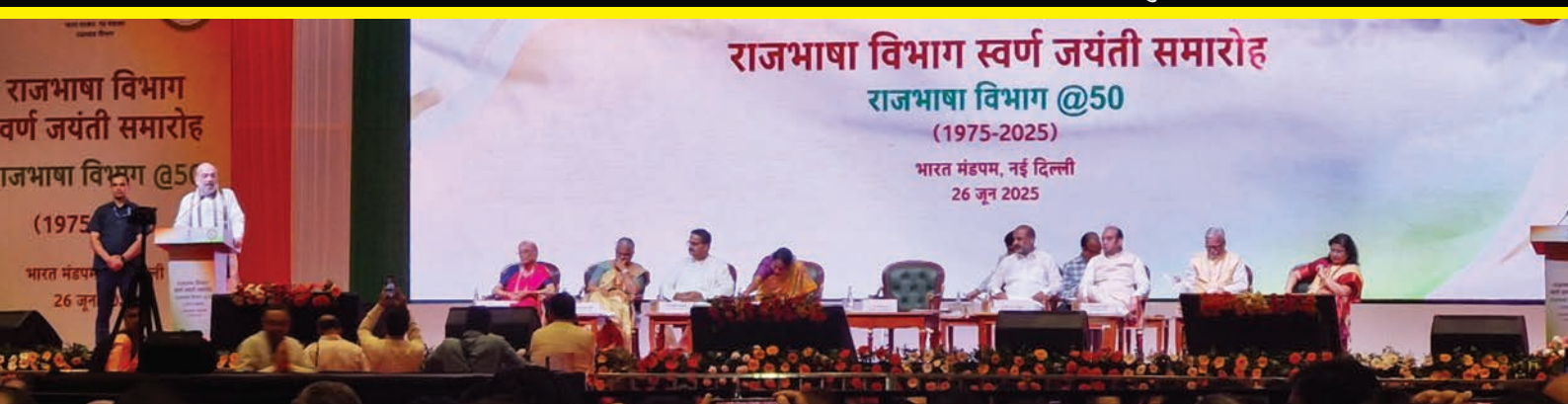

संपूर्ण अभिनेता एवं प्रतिष्ठित नायक

आतिरा के.बी.
प्रशिक्षु

कुछ पुरस्कार केवल किसी एक व्यक्ति की उपलब्धि बनकर नहीं रह जाते; वे एक युग, एक कलात्मक परंपरा और एक भाषा का प्रतिनिधित्व करने लगते हैं। मोहनलाल को प्राप्त भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च सम्मान दादासाहेब फाल्के पुरस्कार भी ऐसी ही एक मान्यता है। भारतीय सिनेमा की दीर्घ कला परंपरा में अपने असाधारण अभिनय से दशकों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते आए मोहनलाल एक बार फिर इतिहास में अपना स्थान दर्ज करा रहे हैं। मलयालम सिनेमा की वैश्विक आवाज़ बन चुके इस महान अभिनेता को मिला यह सम्मान केवल एक कलाकार के लिए पुरस्कार नहीं, बल्कि भारतीय सिनेमा के सांस्कृतिक इतिहास में अंकित होने वाला एक महत्वपूर्ण क्षण है।

चार दशकों से भी अधिक समय से मोहनलाल मलयालम सिनेमा का चेहरा और आत्मा बने हुए हैं। भले ही यह सम्मान कुछ देर से मिला हो, पर यह अनिवार्य था। क्योंकि मोहनलाल ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने मलयालम सिनेमा की आत्मा को उसके सबसे सूक्ष्म भावों सहित जीवंत किया है। उन्होंने सिद्ध किया कि अभिनय केवल संवाद या शारीरिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं होता। छोटे-बड़े हर प्रकार के चरित्र, मौन में भी बोल उठने वाले प्रदर्शन, लोकप्रियता और कलात्मक मूल्य का अद्भुत संतुलन-यही इस सम्मान के पीछे का वास्तविक कारण है।

अभिनय की कला को केवल 'वेश धारण करने' की सीमाओं से ऊपर उठाकर मानवीय अनुभवों की गहराइयों तक पहुँचाने का श्रेय भी उनके कौशल को ही जाता है। हर पात्र को जीवन के साथ जोड़ देने वाले कलाकार हैं मोहनलाल। उनका अभिनय केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा; वह मनुष्य की भावनाओं और संघर्षों को प्रतिबिंबित करने वाली कहानियों की आत्मा बन गया है। मलयालम सिनेमा की सीमाओं से आगे बढ़कर उन्होंने भारतीय सिनेमा के व्यापक सांस्कृतिक मानचित्र पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। समय के साथ बदलाव आते रहे, पर उनके अभिनय की तीव्रता और आत्मा कभी कम नहीं हुई।

मुख्यधारा और समानांतर सिनेमा, व्यावसायिक सफलता और कलात्मक साहस-इन सबके बीच संतुलन बनाते हुए अपने अभिनय जीवन को आगे बढ़ाना वास्तव में दुर्लभ है। इसलिए यह सम्मान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि एक पूरे युग की आधिकारिक स्वीकृति है। साथ ही यह नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए भी एक संदेश है। फाल्के की विरासत से जुड़ते हुए मोहनलाल अभिनय की एक कसौटी बन जाते हैं-ऐसे कलाकार जिनके लिए मौन भी एक सशक्त अभिव्यक्ति बन जाता है।

यह पुरस्कार मोहनलाल के करियर का केवल एक और मुकुट नहीं है; बल्कि यह मलयालम सिनेमा को मिला सम्मान है। छोटी भाषा से भी महान कलात्मक धाराएँ जन्म ले सकती हैं-यह बात भारतीय सिनेमा को निरंतर याद दिलाने वाला उद्योग है मलयालम सिनेमा। उसके प्रतिनिधि, उसकी आवाज़ और उसकी आत्मा के रूप में खड़े रहने वाले मोहनलाल को मिली यह मान्यता उसी सत्य की पुष्टि है। यह उस कलाकार की सफलता की गाथा है जिसने यह सिद्ध किया कि क्षेत्रीय सिनेमा भी विश्व सिनेमा से प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

एमएसएस विभाग की प्रस्तुति

साइबर सुरक्षा जागरूकता माह

साइबर सुरक्षित कार्यस्थल के लिए एचओसीएल कर्मचारी सहभागिता पहल

परिचय

हर अक्टूबर, दुनिया भर के लोग ऑनलाइन सुरक्षित रहने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा जागरूकता माह (NCSAM) मनाते हैं। भारत में, इस वर्ष की थीम 'साइबर जागृत भारत' है, जिसका अर्थ है 'साइबर सुरक्षित भारत'। यह अभियान इस बात पर प्रकाश डालता है जबकि साइबर सुरक्षा एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है, अंततः यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर करता है कि हम सतर्क रहें और डिजिटल दुनिया में स्वयं तथा दूसरों की सुरक्षा करें।

उद्देश्य

- कर्मचारियों के बीच एक मजबूत साइबर सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए।
- वर्तमान साइबर खतरों और सुरक्षित ऑनलाइन प्रथाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए।
- इंटरैक्टिव और व्यावहारिक सीखने के अनुभवों के माध्यम से कर्मचारियों को शामिल करने के लिए।

गतिविधियों का अवलोकन

साइबर सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी है - संवेदनशील जानकारी और कंपनी के संसाधनों की सुरक्षा में हर व्यक्ति, कर्मचारी और संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कर्मचारियों के बीच जागरूकता पैदा करना एक मजबूत साइबर सुरक्षा संस्कृति बनाने की कुंजी है। यह समझते हुए कि इंटरैक्टिव और रोचक खेल स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं, एचओसीएल ने अक्टूबर माह में विभिन्न प्रतियोगिताएँ और गतिविधियाँ आयोजित कीं।

खजाने की खोज

कर्मचारियों ने विभिन्न स्थानों पर छिपे सुरागों का पालन किया, प्रत्येक सुराग में सुरक्षित प्रथाओं को मजबूत करने के लिए एक साइबर टिप शामिल थी।

जहाँ लाइट्स चमकती हैं और पंखे जोर से घूमते हैं,
पहुँच सीमित है, भीड़ के लिए नहीं।
डेटा का दिल, सुरक्षित और ठंडा,
आपकी अगली क्लू वहीं है जहाँ बैकअप रखे जाते हैं।

साइबर प्रश्नोत्तरी

क्विज़ इवेंट्स वर्तमान साइबर खतरों और नवीनतम तकनीकों पर केंद्रित होते हैं, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों को विकसित हो रहे साइबर जोखिमों और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में शिक्षित करना है।

समस्या निवारण

कर्मचारियों को व्यावहारिक समस्या-समाधान कौशल बढ़ाने के उद्देश्य से समस्या का पता लगाने और हल करने के लिए वास्तविक परिदृश्य समस्याएँ प्रदान की गईं।

फिश को पहचानो

क्या आपने इस ईमेल में कोई समस्याएँ देखी हैं?

कर्मचारियों को सिम्युलेटेड ईमेल और संदेशों से फ़िशिंग प्रयासों की पहचान करने की चुनौती दी गई थी। यह फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग हमलों का पता लगाने में सुधार करने के लिए है।

पासवर्ड सुदृढ़ीकरण

"Pa$$w0rd" अब सुरक्षित क्यों नहीं माना जाता?

मजबूत पासवर्ड बनाने के सर्वोत्तम तरीकों को प्रदर्शित करने वाली गतिविधियाँ आयोजित की गईं ताकि मजबूत पासवर्ड का उपयोग और बेहतर क्रेडेंशियल प्रबंधन प्रोत्साहित किया जा सके।

प्रभाव और निष्कर्ष

साइबर सुरक्षा जागरूकता माह के दौरान आयोजित गतिविधियों ने कर्मचारियों को सक्रिय रूप से शामिल किया, जिससे साइबर सुरक्षा उनके दैनिक कार्य जीवन का एक संबंधित और व्यावहारिक पहलू बन गई। मनोरंजन, प्रतिस्पर्धा और शिक्षा को मिलाकर, एचओसीएल ने साइबर सुरक्षित भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत किया और अपनी कार्यबल को ऑनलाइन खतरों से खुद और संगठन की सुरक्षा करने के लिए सशक्त बनाया।

निष्कर्ष में, आइए हम खुद को याद दिलाएँ कि साइबर सुरक्षा केवल पासवर्ड और फायरवॉल के बारे में नहीं है - यह विश्वास, जागरूकता, और आंतरिक सतर्कता के बारे में है।

“जहाँ हर विवरण एक कहानी कहता है।”

"जहाँ हर विवरण एक कहानी कहता है।"

“जहाँ हर विवरण एक कहानी कहता है।”

“जहाँ हर विवरण एक कहानी कहता है।”

शब्दों का आदान-प्रदान और भाषा

साइजु वर्गीस
उप प्रबंधक (एच आर)

भाषा का विकास समय-समय पर होता रहता है। जिस भाषा समय के साथ चलती है उस भाषा का स्वरूप समयानुसर परिवर्तित होता है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप कई संस्कृतियों का मिलन हो गया जिससे भाषाओं में मिश्रण संभव हुआ। जहाँ तक भारत का संदर्भ है अंग्रेज़ी ने भारतीय भाषाओं से विशेषकर हिंदी से कई शब्द स्वीकार किया है वैसे ही हिंदी ने कई अंग्रेज़ी शब्दों को उसी प्रकार स्वीकार किया है। कुछ शब्दों का अनुकूलन किया और जिनका प्रयोग अधिक से अधिक करने लगा।

इंटरनेट और सामाजिक माध्यमों के लगातार प्रयोग के कारण कई भाषाओं में मिश्रित शब्द और बोलचाल में दो या तीन भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है। इस मिश्रण के कारण हिंग्लिश और मंग्लिश का संज्ञा देना भी प्रचलित है। वर्तमान पीढ़ी भाषा की शुद्धता पर ध्यान नहीं देता, बल्कि एक ही समय हिंदी और अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करता है। हिंदी का विकास तेज़ गति से हो रहा है। इसीलिए अंग्रेज़ी भाषा के प्रमुख शब्दकोश पिछले कई वर्षों से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाया है। हिंदी आज उच्च शिक्षा और सम्पूर्ण ज्ञान- विज्ञान का माध्यम बन गया है। हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं से अपनाए गए कुछ शब्द नीचे दिये जाते है:

शैम्पू Shampoo - हिंदी, बंगलो Bungalow - बंगाली, जंगल Jungle - हिंदी, कर्म - karma संस्कृत, योग - Yoga संस्कृत, करी Curry - तमिल, साड़ी - Sari हिंदी, लूट - Loot हिंदी, गुरु - Guru संस्कृत, ये सिलिसला जारी है और हर वर्ष ऑक्सफोर्ड या कोलिन्स या मेरियम वेबस्टर शब्दकोश अपनाए गए या लोकप्रिय शब्द पेश करते है। पिछले छः वर्षों के दौरान इन तीनों द्वारा अपनाए गए शब्द निमनुसार है:

वर्ष	ऑक्सफोर्ड	कोलिन्स	मेरियम-वेबस्टर
2025	रेज बेट- Rage Bait “online content deliberately designed to elicit anger or outrage.” ऑनलाइन सामग्री जानबूझकर क्रोध या आक्रोश उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन की गई है.	वाइब कोडिंग- Vibe Coding, “an emerging software development that turns natural language into computer code using AI” एक उभरता हुआ सॉफ्टवेयर विकास जो एआई का उपयोग करके प्राकृतिक भाषा को कंप्यूटर कोड में बदल देता है	स्लोप च्ध्दृद्र- “digital content of low quality that is produced usually in quantity by means of artificial intelligence” निम्न गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री जो आमतौर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से मात्रा में उत्पादित की जाती है
2024	brain rot*	brat	polarization
2023	rizz*	AI	authentic
2022	goblin mode*	permacrisis	Gaslighting
2021	vax*	NFT-non-fungible token	vaccine
2020	Aatmanirbharta* -Hindi word	lockdown	pandemic

भारतीय भाषाओं से शब्दों को स्वीकारने का अर्थ उस भाषा पर इनका बढ़ता प्रभाव है। भारतीय संस्कृति से जुड़े अनेक शब्द अपनाकर अंग्रेजी अपना शब्दकोश का विस्तार कर रही है।

*अर्थ के लिए वेब देखें।

अंतरिक्ष अनुसंधान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: मानवता की अगली बड़ी छलांग

रेवती हरिदास
कार्यालय सहायक, एफटीबी (एचआर)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का अर्थ है ऐसी मशीनें जो इंसानों की तरह सोच और सीख सकती हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान में एआई वैज्ञानिकों की मदद करती है, जहाँ इंसानों के पहुँचना मुश्किल होता है। अंतरिक्ष बहुत दूर है और संकेत पहुँचने में समय लगता है, इसलिए एआई अंतरिक्ष यान को छोटे-छोटे निर्णय खुद लेने में मदद करती है। इससे काम तेज़ और सुरक्षित होता है। स्पेस मिशन बहुत जोखिम भरे और महंगे होते हैं। एआई रोवर्स का मार्गदर्शन करती है, डेटा को समझती है, और अंतरिक्ष यात्रियों की मदद करती है। यह मानव की संभावित गलतियों को भी कम करती है।

एआई का अंतरिक्ष में प्रमुख उपयोग

1. **अंतरिक्ष यान को सुरक्षित रूप से चलाना**

   जैसे नासा के पर्सवरन्स रोवर में एआई पथ में आने वाले पत्थरों या गड्ढों को पहचानकर सही रास्ता चुनता है।

2. **अंतरिक्ष से प्राप्त डेटा का अध्ययन करना**

   एआई दूरबीनों और उपग्रहों से मिलने वाले विशाल डेटा का विश्लेषण करती है। इसके ज़रिए नए तारे, ग्रह और अंतरिक्ष पिंड खोजे जाते हैं।

3. **मशीनों की सेहत पर नज़र रखना**

एआई यह जांचती है कि उपग्रह या अंतरिक्ष यान में कोई खराबी तो नहीं है। यह पहले ही अलर्ट दे देती है ताकि समय पर सुधार किया जा सके।

4. **अंतरिक्ष यात्रियों की सहायता करना**

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर सिमोन जैसा रोबोट एआई की मदद से अंतरिक्ष यात्रियों का काम आसान बनाता है।

5. अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी

एआई बता सकती है कि कब सोलर स्टॉर्म (सौर तूफ़ान) आ सकता है। इससे उपग्रहों और अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा की जा सकती है।

भारतीय मिशन (इसरो) जिनमें एआई का उपयोग

मिशन	एआई की भूमिका
चंद्रयान-3	स्वचालित लैंडिंग और खतरों की पहचान
गगनयान (आगामी)	क्रू सुरक्षा सिमुलेशन और निर्णय समर्थन
कार्टोसैट व ओशनसैट	कृषि, बाढ़ और मौसम निगरानी हेतु एआई आधारित विश्लेषण
आदित्य-एल 1	सूर्य से आने वाले सौर तूफानों का अध्ययन

आगामी मिशन जिनमें एआई का उपयोग होगा

मिशन	स्पेस एजेंसी	एआई की भूमिका
आर्टेमिस (चंद्र मिशन)	नासा	एआई आधारित रोवर और चंद्र आधार निर्माण
मार्स सैंपल रिटर्न	नासा /ईएसए	लैंडिंग और सैंपल एकत्रीकरण में एआई
लुपेक्स(लूनर पोलर मिशन)	इसरो-जैकसा	चंद्र दक्षिण ध्रुव पर नेविगेशन हेतु एआई
युरोपा क्लिपर	नासा	जीवन के अनुकूल परिस्थितियों की पहचान

निष्कर्ष

अंतरिक्ष बहुत विशाल और रहस्यों से भरा हुआ है, जहाँ मनुष्य अकेले नहीं पहुँच सकता। एआई एक बुद्धिमान सहायक की तरह काम करती है जो अंतरिक्ष मिशनों को सुरक्षित, तेज़ और प्रभावी बनाती है। यह रोवर्स को ग्रहों पर चलना सिखाती है, अंतरिक्ष यात्रियों की मदद करती है और दूर स्थित तारों से आने वाले संकेतों का अध्ययन करती है। आने वाले वर्षों में एआई की भूमिका और भी बड़ी होगी क्योंकि मानव चाँद और मंगल पर रहने और काम करने की ओर बढ़ रहा है। एआई के साथ मिलकर हम ब्र्हमांड की गहराइयों तक पहुँच सकते हैं और अपने अस्तित्व को और बेहतर समझ सकते हैं।

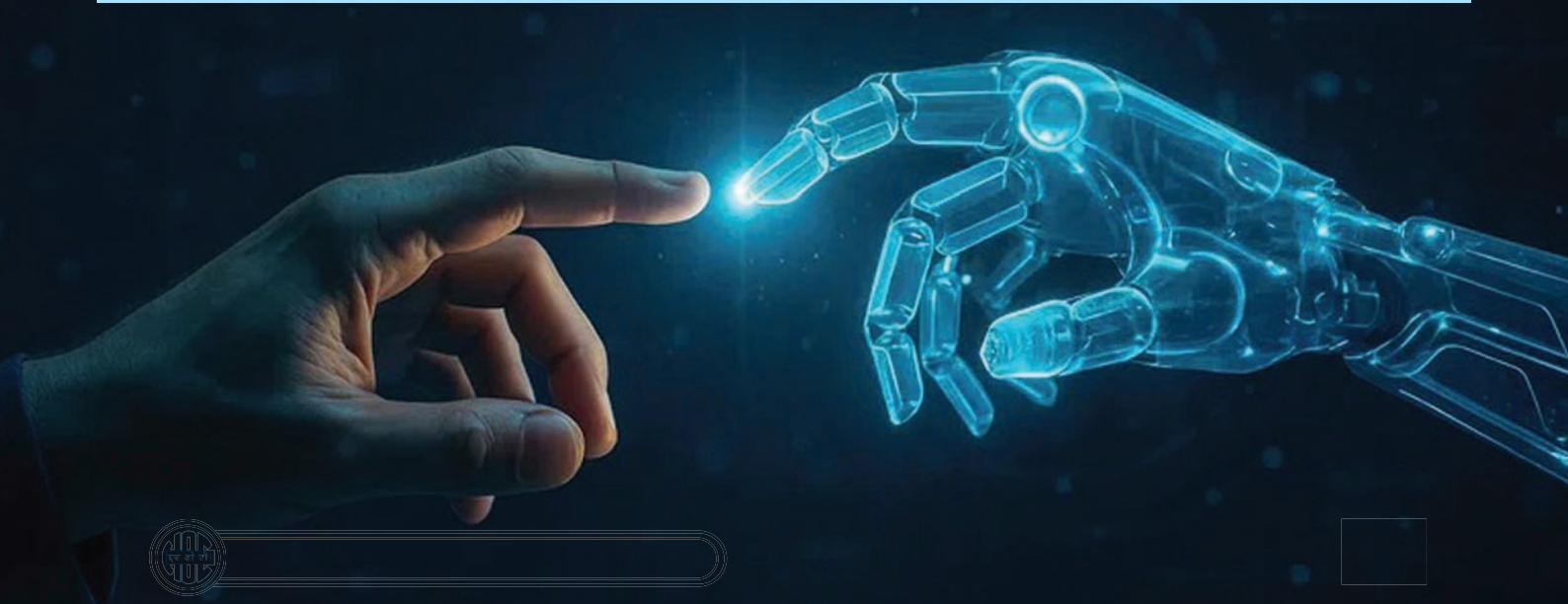

'सिटी ऑफ जॉय'– कलकत्ता

बिजु सी.जे.
उप प्रबंधक
(मानव संसाधन)

मुझे भारत के कलकत्ता शहर, जिसे 'सिटी ऑफ जॉय' कहा जाता है, की यात्रा करने का सौभाग्य अरुणाचल प्रदेश की यात्रा के दौरान मिला। कलकत्ता वर्ष 1911 तक ब्रिटिश शासन की राजधानी थी जो ब्रिटिश लंदन के बाद दूसरा सबसे बड़ा शहर था। अंग्रेजों ने दुनिया भर कॉलोनी बनाकर शासन किया था, भारत भी उसमें एक था। कलकत्ता कभी भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक राजधानी हुआ करता था। भारतीय साहित्य में इसका योगदान बहुत बड़ा था। कई नोबेल पुरस्कार विजेताओं, कई साहित्यकारों, स्वामी विवेकानंद, मदर टेरेसा, श्री रामकृष्ण परमहंस, रवींद्रनाथ टैगोर जैसे ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों का कार्यक्षेत्र कलकत्ता था।

पश्चिम बंगाल राज्य की राजधानी कलकत्ता, हुबली नदी के दोनों किनारों पर फैला हुआ है। यह नदी गंगा की उपनदी है। हम सुबह कलकत्ता पहुँच गए। हवाई अड्डे से शहर की दूरी 15 किमी है। कलकत्ता के बारे में जैसा सोचा था वैसा नहीं था, एक बड़ा शहर जो विशाल उद्यानों, सुंदर सड़कों, आसमान को छूती इमारतों और भूमिगत मेट्रो स्टेशन और कई फ्लाईओवर से भरा है। शहर के बीचोंबीच ट्राम की पटरियां, पुराने ब्रिटिश शैली में विशाल महल जैसे

भवन, मंदिर, मस्जिदें, हेरिटेज टैक्सी जैसे पीले एंबेसडर कार, हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शा, सड़क के किनारे बेंच लगाकर और बिना बेंच के भी बाल काटने वाले, सिटी बस, सड़क के किनारे प्लास्टिक के शेड में रहने वाले गरीब लोग, ये सब इस शहर में दिखाई देते हैं।

रास्ते से गुजरते वक्त हमने कलकत्ता के गौरव स्तंभ, हावड़ा पुल देखा। यह इंजीनियरिंग का चमत्कार, कैंटी लीवर पुल, 750 मीटर लंबा 8 लेन का पुल है, जो पूरी तरह से स्टील से बना है और केवल चार खंभों पर टिका है, जिसे 1942 में अंग्रेजों ने पूरा किया था। यहाँ सुबह में इतना भीड़ है, लगता है अरे, लोग दोनों तरफ भागते-रहते हैं। पुल के ठीक नीचे खूबसूरत हुबली नदी बह रही है। पुल से नीचे उतरने पर आपको एशिया के सबसे बड़े फूलों के बाजार की भीड़ दिखाई देगी। पुल के ठीक बगल में भारत का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है।

सुबह फ्रेश होकर चाय पीने के लिए सड़क पर उतरे। पास में एक छोटी सी दुकान है जहाँ मिट्टी के छोटे प्याले में चाय बेची जाती है। चाय के लिए बोला। चायवाला सबको आश्चर्य से देख रहा था। उबलते हुए अदरक और इलायची मिलाए चाय मिट्टी के बर्तन में दिया। इतने स्वाद (टेस्ट) के साथ चाय पहले कभी नहीं पी थी। चाय के दूकान में पीले रंग के एम्बसडर टैक्सी के चालक से मिला। मिस्टर अख्तर जो साठ उम्र के है, ने अपने एम्बेसडर कार में कम कीमत पर शहर दिखाने का वादा किया। हम शहर के चारों ओर घूमने के लिए अख्तर की विरासत टैक्सी में सवार हुए। अख्तर बिहार राज्य से नौकरी करने के लिए यहां आए। मुलाक़ात किए गए लोगों में से अधिकांश अन्य राज्यों से नौकरी के लिए आए हुए हैं।

अख्तर ने सबसे पहले हमें पार्क स्ट्रीट ले गए। यह इस शहर का मुख्य आकर्षण केंद्र है और समृद्ध इलाका भी है। ऐसा लगा कि हम विदेश राष्ट्र में पहुँच गए। ब्रिटिश शासन के पुराने बहुमंजिला भवन विभिन्न कार्यालयों के रूप में दिखते हैं। अच्छी सड़कें, बीच-बीच में ट्राम ट्रेनें, आईटी कंपनियां, पब, बड़े-बड़े होटल, चौड़ी सड़कें। ये सब उस समय ब्रिटिशों द्वारा प्लान करके निर्मित शहर का हिस्सा है। ब्रिटिश शासन के सचिवालय बहुत ही सुंदर 'रायटरर्स बिल्डिंग' आज राज्य सरकार का सचिवालय है। भारतीय डाकघर का मुख्यालय ब्रिटिश महल की तरह दिखता है। अख्तर ने हमें एक ही चक्कर में मोहन बगान स्टेडियम, ब्रिटिश द्वारा निर्मित दुनिया का सबसे बड़ा पानी का टैंक, हुबली नदी पर निर्मित नई शालीमार झूला आदि दिखाया।

इसके बाद हम 1847 में निर्मित कलकत्ता के सबसे बड़ा और सुंदर गिरिजाघर 'सेंट पोल्स कत्रेडल' गए। चर्च के भीतर पूजा (मास) हो रही थी। कुछ देर वहाँ रुकने के बाद, हमने पास के बिड़ला प्लेनिटोरियम को देखने की कोशिश की। लेकिन समय की कमी के कारण ज़्यादा रुका नहीं। बाद में इसके निकट स्थित 1921 में निर्मित विक्टोरिया मेमोरियल, जो एक संगमरमर की इमारत है, आज भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संग्रहालय है, देखने गए। यहाँ की कारीगरी और दुनिया के सबसे बड़े तेल चित्रों की सूची में शामिल विशाल पेंटिंग भी एक दुर्लभ दृश्य है। ब्रिटिश शासन की महारानी, महारानी विक्टोरिया, जिन्होंने पूरी दुनिया को अपने अधीन कर लिया था, कभी भारत नहीं आयी थी। करीब एक घंटे के बाद, साइंस सिटी देखने गए।

लगभग दो बजे, कलकत्ता के एक होटल में बिरयानी खाने के लिए निकल गए। मटन बिरयानी खाए, जिसमें कुछ मटन और एक बड़ा आलू थे, उतना अच्छा नहीं लगा। खाने के बाद ट्राम ट्रेन में चढ़ने का फैसला लिए। 1873 में जब पहली ट्राम शुरू हुई थी, तब यह एक घोड़ा-खींची गाड़ी थी। 1902 के बाद यह बिजली से चलने लगा। कलकत्ता कभी एशिया में प्रथम और सबसे बड़ा शहर रहा था, अब यात्रियों की कमी और शहर में यातायात की भीड़ के कारण ट्राम बहुत कम चलता है। शहर में कहीं भी जाने के लिए इसकी पटरी देखा जा सकता है। मैंने अखबारों में पढ़ा कि यह भी जल्द ही बंद कर दिया जाएगा। वैसे, एक ट्राम शाही गर्व के साथ आ रहा है। बस हाथ हिला दिया। गाड़ी रोक दी गई। चढ़ गए, चालक सबसे आगे खड़े होकर गाड़ी चला रहा है। यात्रियों की संख्या बहुत कम है। बीच-बीच में ट्रैक पर खड़ी गाड़ियों को हटाने तक रुक जाता है। आधे घंटे की यात्रा के लिए टिकट दर केवल 6 रुपए है। दो डिब्बे, ऊपर छत पर पंखे। भीतरी हिस्सा बस जैसा। एक तार पीछे से ऊपर की ओर बिजली के लाइन से जुड़ी हुई है। खैर, इसमें यात्रा करने का मौका मिला।

घूमने की दौड़ में अख्तर ने हमें माँ देवी के 51 शक्तिपीठ में से एक दक्षिणेशवर मंदिर पहुँचाया। वहाँ की पूजा के पुष्प चंपा हैं। ये हर जगह दिखाई देते हैं। गाड़ी से

ही उतरते ही मंदिर के लोग हमें घेर लेंगे। उन्हें पैसा देने पर देवी का सीधे दर्शन की अनुमति मिलता। भीड़भाड़ के कारण दर्शन के बिना वहां से वापस आए। शहर की ओर जाते समय रास्ते में बिड़ला मंदिर, बेलूर मठ, रामकृष्ण मठ (विवेकानंद द्वारा स्थापित), मदर टेरेसा का घर, भारतीय संग्रहालय,1864 में स्थापित एडन गार्डन स्टेडियम, उच्च न्यायालय भवन, आदि देखें।

छोटा सा ब्रेक के बाद, हम हावड़ा रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, जिसकी शुरुआत 1854 में हुई थी। 23 प्लेटफॉर्म और 25 ट्रैक वाला यह स्टेशन दुनिया के सबसे भीड़ वाले बड़ा स्टेशन है। प्रतिदिन 750 ट्रेनें स्टेशन आती-जाती हैं। शाम होते ही स्टेशन के अंदर और बाहर भीड़ उमड़ पड़ी। यह विश्व प्रसिद्ध हावड़ा पुल के ठीक बगल में है। उसके ऊपर से हम पैदल चले। पुल में 8 लेन का मार्ग है। ब्रिटिश शासकों द्वारा निर्मित एक मजबूत स्टील पुल आज भी ताकत से खड़ा है। पुल के नीचे सड़क पर एक सुंदर दृश्य। हाँ, यह एशिया का सबसे बड़ा फूलों का बाजार है। वहाँ भी भीड़ लगी हुई हैं।

1690 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार लाइसेंस प्राप्त किया और धीरे-धीरे कलकत्ता पर शासन किया। ब्रिटिश इंडिया की राजधानी के रूप में इसे विकसित किया, जो बाद में ब्रिटिश साम्राज्य का दुनिया के दूसरा सबसे बड़ा शहर बन गया। यही विरासत आज भी इस शहर की ताकत हैं। 1947 में यह एक बड़ा औद्योगिक शहर रहा था। शहर आज भी झुग्गी-झोपड़ियों और गरीब लोगों का केंद्र है। सरकार ने रिक्शा चालकों की एक और पीढ़ी को रिक्शा चलाने की अनुमति दे दी। परिचित मलयाली ने कहा कि सरकार पिछले दस वर्षों से खोया हुआ गौरव वापस पाने की कोशिश कर रही है और उसमें सफलता भी मिल रही है। साहित्य में चित्रित, सामाजिक माध्यमों में खूब प्रचलित कलकत्ता शहर आज भी सुंदर है।

कर्मयोगी प्रशिक्षण

योग

- मानव जाति के लिए वरदान है

राजु टी.के.
मुख्य महा प्रबंधक
(अभियांत्रिकी)/ एमआर/एफएम

यदि आपने आज - अधोमुख श्वानासन' (डाउनवर्ड डॉग) योग मुद्रा किया है, तो आप शायद अधिक आराम महसूस कर रहे हैं। योग में आपकी विशेषज्ञता स्तर के बावजूद, यदि आप नियमित रूप से अभ्यास कर रहे हैं, तो आप सिर से पैर तक बेहतर महसूस कर सकते हैं। योग सभी उम्र के लोगों के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। यदि आप किसी बीमारी से गुज़र रहे हैं, सर्जरी से ठीक हो रहे हैं या पुरानी स्थिति के साथ जी रहे हैं, तो योग आपके उपचार का एक अभिन्न अंग बन सकता है और संभावित रूप से जल्दी ठीक हो सकता है।

1. योग की शक्ति से संतुलन और लचीलेपन में सुधार

धीमी गति से चलने और गहरी सांस लेने से रक्त प्रवाह बढ़ता है और मांसपेशियां गर्म होती हैं, जबकि मुद्रा धारण करने से ताकत बढ़ सकती है।

इसे आजमाएं: वृक्षासन (ट्री पोज)

एक पैर पर संतुलन, दूसरे पैर को अपने जांघ के या घुटने के ऊपर (लेकिन घुटने पर कभी नहीं) एक समकोण पर रखते हुए। एक मिनट के लिए संतुलन बनाते हुए अपने सामने एक स्थान पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करें।

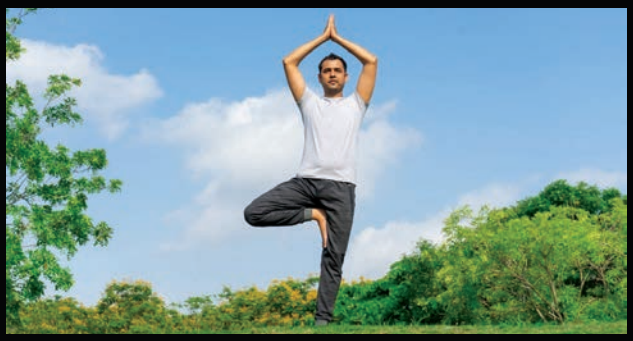

2. योग कमर दर्द से राहत दिलाने में मदद करता है।

पीठ के निचले हिस्से में दर्द वाले लोगों में दर्द को कम करने और गतिशीलता में सुधार के लिए योग उतना ही अच्छा है जितना बुनियादी खिंचाव। अमेरिकन कॉलेज ऑफ फिजिशियन पुराने कम पीठ दर्द के लिए प्रथम-पंक्ति उपचार के रूप में योग की सिफारिश करता है।

इसे आजमाएं: कैट-काउ पोज

सभी चौकों पर खड़े हो जाएं, अपनी हथेलियों को अपने कंधों के नीचे और अपने घुटनों को अपने कूल्हों के नीचे रखें। सबसे पहले, श्वास लें, जैसा कि आप अपने पेट

को नीचे फर्श की ओर गिराते हैं। फिर, साँस छोड़ते हुए, अपनी नाभि को अपनी रीढ़ की ओर खींचे, अपनी रीढ़ को एक बिल्ली की तरह खींचे।

3. योग गठिया के लक्षणों को कम कर सकता है।

हाल के अध्ययनों के अनुसार, योग गठिया से पीड़ित लोगों के लिए सूजे हुए जोड़ों की कुछ परेशानी को कम करने के लिए दिखाया गया है।

4. योग ह्मदय स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाता है।

नियमित योग अभ्यास तनाव के स्तर और पूरे शरीर में सूजन को कम कर सकता है, स्वस्थ दिल के लिए योगदान कर सकता है। उच्च रक्तचाप और अधिक वजन सहित ह्मदय रोग में योगदान देने वाले कई कारकों को भी योग के माध्यम से सही किया जा सकता है।

5. योग आपको आराम देता है, जिससे आपको बेहतर नींद आने में मदद मिलती है।

अनुसंधान से पता चलता है कि सोने के समय योग की नियमित दिनचर्या आपको सही मानसिकता में लाने में मदद कर सकती है और आपके शरीर को सो जाने और सोते रहने के लिए तैयार कर सकती है।

इसे आज़माएं: लेग्स-अप-द-वॉलपोज

अपनी बाईं ओर एक दीवार के साथ बैठें, फिर धीरे से दाएं मुड़ें और दीवार के खिलाफ आराम करने के लिए अपने पैरों को ऊपर उठाएं, अपनी पीठ को फर्श पर और अपनी बैठी हुई हड्डियों को दीवार के करीब रखें। इस स्थिति में आप 5 से 15 मिनट तक रह सकते हैं।

6. योग का मतलब अधिक ऊर्जा और उज्ज्वल मूड हो सकता है।

आप नियमित योगाभ्यास करने के बाद बढ़ी हुई मानसिक और शारीरिक ऊर्जा, सतर्कता और उत्साह में वृद्धि और कम नकारात्मक भावनाओं को महसूस कर सकते हैं।

7. योग आपको तनाव को प्रबंधित करने में मदद करता है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ के अनुसार, वैज्ञानिक प्रमाण बताते हैं कि योग तनाव प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य, सचेतनता, स्वस्थ भोजन, वजन घटाने और अच्छी नींद का समर्थन करता है।

कोशिश करो: शव मुद्रा (शवासन)

अपने अंगों को धीरे से फैलाकर, शरीर से दूर, अपनी हथेलियों को ऊपर की ओर करके लेट जाएं। गहरी सांस लेते हुए अपने दिमाग को साफ करने की कोशिश करें। इस मुद्रा को आप 5 से 15 मिनट तक होल्ड कर सकते हैं।

8. योग आपको एक समुदाय से जोड़ता है।

योग कक्षाओं में भाग लेने से अकेलापन कम हो सकता है और समूह उपचार और सहायता के लिए वातावरण प्रदान कर सकता है। आमने-सामने के सत्रों के दौरान भी अकेलापन कम हो जाता है क्योंकि व्यक्ति को एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसे सुना जाता है और व्यक्तिगत योग योजना के निर्माण में भाग लिया जाता है।

सांस्कृतिक विरासत एवं कलात्मक उत्कृष्टता का पर्व - स्कूल कलोत्सव

आतिरा टी.एस.
कार्यालय सहायक, एफटीबी (एचआर)

कला व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है। यह व्यक्ति की रचनात्मक, भावनात्मक, कल्पनात्मक एवं समग्र विकास के लिए मूलभूत तत्व है। संगीत, नृत्य, रेखाचित्र और अभिनय जैसे विविध क्षेत्रों में अपने कौशल दिखाने का अवसर हर एक को मिलता है। कला और साहित्य हमारी सामाजिक ताने-बाने के हिस्से है। विविध प्रकार की प्रतिभा से धनी कई छात्र हमारे विद्यालय में पढ़ रहे हैं। कला कौशल व्यक्ति केन्द्रित है, अभ्यास / शिक्षण से भी अर्जित कर सकता है। कला गतिविधियों में शामिल कोई भी छात्र पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करते हैं और उनकी सांस्कृतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलती हैं। भले ही स्कूल पाठ्यक्रम में कला को विकल्प के रूप में रखा गया है, आज शिक्षा में इसका महत्व स्वीकार किया गया है। कला मानव को अच्छे इंसान बनने में मदद करते है। इस संदर्भ में केरल में प्रतिवर्ष आयोजित एशिया या दुनिया के सबसे बड़ा स्कूल कलोत्सवम (स्कूल फेस्टिवल) की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

शैक्षणिक वर्ष 2025-26 का स्कूल फेस्टिवल जनवरी 2026 माह में केरल की सांस्कृतिक राजधानी त्रिशूर में सम्पन्न हुआ। केरल के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित पाँच/सात दिवसीय युवा उत्सव में केरल के 14 जिलाओं से आए छात्रों द्वारा पारंपरिक एवं समकालीन कलाओं की प्रस्तुति की जाती है। इस कला पर्व में 14000 छात्र भाग लिए और शहर के 25 विविध केन्द्रों में 249 विभिन्न कला प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। प्रतिवर्ष इसका आयोजन केरल के किसी जिला केंद्र में किया जाता है। इसमें हाईस्कूल, हायर सेकंडरी स्कूल और वोकेशनल हायर सेकंडरी स्कूलों से जिला स्तर में सबसे अच्छे प्रदर्शन/प्रथम आए चयनित छात्र भाग लेते हैं। इसके साथ ही संस्कृत और अरबी कलाओं के लिए अलग-अलग उत्सव आयोजित किए जाते हैं।

किसी एक प्रतियोगिता में कम से कम 14 जिला का प्रतिनिधित्व करनेवाले छात्र होंगे और घंटों तक प्रतियोगिता चलती रहती है और कभी-कभी देर रात जारी रहेगी। इसको देखने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों, अधिकारियों तथा केरल के कला दर्शकों की बड़ी तादाद में उपस्थिति होगी।

इसका आयोजन सबसे प्रतिष्ठित एवं व्यवस्थित माना जाता है। वास्तव में यह केरल की सांस्कृतिक उत्सव है और केरल की पहचान भी है। अपनी प्रतिभा की चमक दिखाने का अवसर हर एक छात्र को मिलता है।

इस कलोत्सव का प्रारम्भ वर्ष 1957 में हुआ है। केरल के पहला शिक्षा निदेशक के नेतृत्व में राज्य के स्कूल छात्रों के लिए कला महोत्सव आयोजित किया गया। सरकारी महिला विद्यालय, कोची में पहला केरल राज्य अंतर विद्यालय महोत्सव शूरु हुआ। इसकी 18 प्रतियोगिताओं में करीब 800 छात्रों ने भाग लिया। यहाँ से शूरु हुए इस महोत्सव प्रति वर्ष आयोजित कर 64वें संस्करण में पहुँच गया। इस कला प्रतियोगिता की देन है केरल के अनगिनत कलाकार। गीत प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त मशहूर गायक के जे येशुदास, पी जयचंद्रन और के एस चित्रा से लेकर नृत्य में विनीत और मंजूवारियर तक अनेक फिल्म सितारे। हर वर्ष ऐसे अनेक प्रतिभाओं को जन्म देने में ये महोत्सव सफल हुए।

इस उत्सव की विशेषता यह है कि इसमें विविध प्रकार की 250 प्रतियोगिताएं शामिल है। शास्त्रीय नृत्य, जिसमें मोहिनीयाट्टम, भरतनाट्यम, कुचपुड़ी आदि, समूहनृत्य, ओप्पना, संगीत वह भी भारतीय से लेकर पश्चिमी संगीत तक, उपकरण संगीत,समूह गान, कविता पाठ, भाषण जैसी 250 प्रतियोगिताएं, वह भी उत्कृष्ट श्रेणी की एक ही शहर में उपलब्ध है। इसमें केरल के विविध प्रान्तों की प्रादेशिक कलाओं को भी शामिल किया गया है। प्रतियोगिताओं में हजारों छात्रों का शानदार प्रदर्शन वास्तव में कला का महाकुम्भ ही है। यह भारत में ही नहीं, दुनिया में इस तरह का सांस्कृतिक आयोजन दुर्लभ है। इसीलिए इसका आस्वादन करने वाले कला प्रेमियों की संख्या वर्ष भर में बढ़ जाती है, जो केरल से नहीं, बल्कि अन्य राज्यों और राष्ट्रों से भी आते हैं।

इसके विजेताओं को ए ग्रैड से सी ग्रेड तक और नकद पुरस्कार दिया जाता है। इसके अलावा छात्रों को वार्षिक परीक्षा में ग्रेड के आधार पर पूरक अंक भी दिया जाता है। सबसे अधिक अंक प्राप्त जिला को सरकार द्वारा प्रायोजित रोलिंग स्वर्ण कप दिया जाता है। कलोत्सवम के सभी दिन इससे जुड़े सभी को तीन बार भोजन दिया जाता है जिसमें केरलीय सद्या/ दावत (बड़ा खाना) भी शामिल है जिसकी तैयारी प्रसिद्ध शेफ द्वारा की जाती है। कलोत्सव का मानुअल देखिए। सत्रह अध्याय में दिये गए विवरण, निर्देश, मूल्यांकन तरीका, हर एक दायित्व को विस्तार से दिया गया है। अध्यापकों और सभी स्तर के कर्मचारियों और जन प्रतिनिधियों के सम्मलित प्रयास से हर साल कलोत्सवम अच्छी तरह सम्पन्न हो जाता है। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं है। शिक्षा का मकसद बच्चों में अंतर्निहित रचनात्मक क्षमता को पोषित करना भी है। कला सबको जोड़ती है और उत्सव रूपी इस सूत्र में पिरोती है। पिछले सत्तर वर्षों से केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत - युवा कलोत्सव इस संकल्प को साकार कर रहा है।

स्वच्छ वायु, स्पष्ट/ हमारी प्रतिबद्धता

तरुणदेव ए.पी.
मुख्य प्रबन्धक (फायर एंड सेफ़्टी/
टीएसएस/ सतर्कता)

बेहतर वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) की दिशा में एचओसीएल का योगदान

हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड (एचओसीएल) में पर्यावरण संरक्षण हमारी कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। जैसे-जैसे उद्योग विकसित हो रहे हैं, वैसे-वैसे सतत विकास के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ती जा रही है। आज पर्यावरणीय प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण सूचक है वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) – जो यह दर्शाता है कि हमारे आसपास की हवा कितनी स्वच्छ और स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित है।

यह लेख बताता है कि एक्यूआई क्या है, इसकी गणना कैसे की जाती है और एचओसीएल किस प्रकार बेहतर वायु गुणवत्ता बनाए रखने में सार्थक योगदान दे रहा है।

वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) को समझना

वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) एक मानकीकृत सूचकांक है, जिसका उपयोग यह बताने के लिए किया जाता है कि वर्तमान में हवा कितनी प्रदूषित है या भविष्य में कितनी प्रदूषित हो सकती है। भारत में एक्यूआई की निगरानी और विनियमन केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड – (सीपीसीबी) द्वारा किया जाता है।

एक्यूआई जटिल वायु गुणवत्ता आंकड़ों को एक एकल संख्या, रंग और श्रेणी में परिवर्तित करता है, जिससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को आसानी से समझा जा सके।

एक्यूआई की गणना में शामिल प्रदूषक

एक्यूआई की गणना निम्नलिखित प्रमुख प्रदूषकों की सांद्रता के आधार पर की जाती है:

- $PM_{2.5}$ (सूक्ष्म कण पदार्थ)
- PM_{10} (स्थूल कण पदार्थ)
- सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2)
- नाइट्रोजन ऑक्साइड (NO_x)
- कार्बन मोनोऑक्साइड (CO)
- ओज़ोन (O_3)
- अमोनिया (NH_3)
- सीसा (Pb)

प्रत्येक प्रदूषक को उसकी सांद्रता के आधार पर एक उप-सूचकांक (उप इंडेक्स) दिया जाता है। जिस प्रदूषक का उप-सूचकांक सर्वाधिक होता है, वही उस स्थान का समग्र एक्यूआई निर्धारित करता है।

भारत में एक्यूआई की श्रेणियाँ

एक्यूआई सीमा	श्रेणी	स्वास्थ्य प्रभाव
0-50	अच्छा	न्यूनतम प्रभाव
51-100	संतोषजनक	संवेदनशील व्यक्तियों को हल्की असुविधा
101-200	मध्यम	फेफड़ों के रोगियों को सांस लेने में कठिनाई

201-300	खराब	अधिकांश लोगों को सांस लेने में असुविधा
301-400	अत्यंत खराब	लंबे समय तक संपर्क में रहने पर श्वसन रोग
401-500	गंभीर	गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव

एचओसीएल के लिए एक्यूआई का महत्व

एक औद्योगिक संगठन के लिए एक्यूआई केवल एक नियामक आवश्यकता नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का मापदंड है। एक्यूआई की निगरानी से:

- पर्यावरणीय मानकों का अनुपालन सुनिश्चित होता है
- कर्मचारियों और आसपास के समुदायों की सुरक्षा होती है
- सार्वजनिक डेटा प्रणाली के माध्यम से पारदर्शिता बनी रहती है
- उत्सर्जन नियंत्रण में निरंतर सुधार संभव होता है

बेहतर एक्यूआई हेतु एचओसीएल की पहल

1. एलएनजी का उपयोग - स्वच्छ ईंधन रणनीति

प्रबंधन द्वारा लिया गया एक महत्वपूर्ण निर्णय है लिक्विफाइड नेचुरल गैस (एलएनजी) का उपयोग:

- बॉयलरों में
- हॉट ऑयल फर्नेस में

एलएनजी पारंपरिक ईंधनों की तुलना में अधिक स्वच्छ है क्योंकि:

- इसमें सल्फर उत्सर्जन नगण्य होता है
- कण पदार्थ का उत्सर्जन अत्यंत कम होता है
- नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्सर्जन कम होता है
- कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन तुलनात्मक रूप से कम होता है

इस परिवर्तन से स्टैक उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आई है, जिससे संयंत्र एवं आसपास के क्षेत्र की वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

2. 24 × 7 ऑनलाइन उत्सर्जन निगरानी

एचओसीएल सतत उत्सर्जन निगरानी प्रणाली (CEMS) का संचालन करता है, जिससे:

- उत्सर्जन मापदंडों की रियल-टाइम निगरानी
- सीपीसीबी एवं केएससीपीबी सर्वर पर कच्चे आंकड़ों का स्वतः अपलोड
- पूर्ण पारदर्शिता एवं नियामक अनुपालन सुनिश्चित

यह 24×7 प्रणाली किसी भी विचलन की स्थिति में तुरंत सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करती है और पर्यावरणीय जवाबदेही को मजबूत बनाती है।

3. हरित परिसर – प्राकृतिक कार्बन संतुलन

एचओसीएल का हरित परिसर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है:

- वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण करते हैं
- ऑक्सीजन स्तर में वृद्धि करते हैं
- परिवेशीय तापमान को नियंत्रित करते हैं
- धूल के स्तर को कम करते हैं
- जैव विविधता को बढ़ावा देते हैं

परिसर की हरियाली संतुलित कार्बन चक्र और स्वस्थ सूक्ष्म-जलवायु बनाए रखने में सहायक है।

4. डिजिटलीकरण – अप्रत्यक्ष पर्यावरणीय लाभ

पर्यावरणीय उत्तरदायित्व केवल उत्सर्जन नियंत्रण तक सीमित नहीं है। एचओसीएल ने निम्नलिखित उपायों द्वारा अपने पारिस्थितिक प्रभाव को कम किया है:

- ऑनलाइन वर्क परमिट प्रणाली का कार्यान्वयन
- भौतिक कैंटीन कूपन प्रणाली के स्थान पर डिजिटल व्यवस्था
- कागज़ आधारित दस्तावेज़ीकरण में कमी

इन उपायों से कागज़ की बचत, अपशिष्ट में कमी और कागज़ उत्पादन से संबंधित कार्बन उत्सर्जन में अप्रत्यक्ष कमी हुई है।

साझा जिम्मेदारी

एक्यूआई में सुधार एक बार का प्रयास नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

- स्वच्छ ईंधन (एलएनजी) का उपयोग
- निरंतर उत्सर्जन निगरानी
- हरित परिसर का संरक्षण
- संसाधनों की बचत हेतु डिजिटलीकरण

इन सभी प्रयासों के माध्यम से एचओसीएल स्वच्छ वायु और स्वस्थ पर्यावरण के लिए अपनी सर्वोत्तम भूमिका निभा रहा है।

एचओसीएल – औद्योगिक विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण की प्रतिबद्धता।

जयदास कांब्ले
वरिष्ठ अधिकारी प्रशासन

मेरी प्यारी हिंदी

ना झिझक के ना हिचकके
मैं हिंदी भाषा से प्यार करना हुं
क्योंकी मैं दिल से हिंदी अपनाना हुं
हिंदी जोडती है सब दिल को
हिंदी समझ आती है सबको
जिसकी तरफ से सब को आशा है
इसलिए ये सबसे मशहूर भाषा है
सभी संगीतों में है हिंदी
कभी नहीं किसको सम्मान देने अड़ी
चाहे करो कोई भाषण
या करो इसभाषा में गायन
संभाषण से सबको मिलती बड़ी आशा है
कितने कवि हुए इसके
हिंदी भरी है हर एक नस में
लेखन और समर्पक इतने
हिंदी भाषा है प्यार से मनमे
येही हिंदी से हमे अभिलाष है
सभी राज्य की जनता इसमे
भाग के रही है अपने मनसे
हिंदी मिलती है सबके दिलको
मार्ग दिलाती है ये सबको
यही योग है इसका और यही प्यारी भाषा है
हिंदी ऐसी ही बढती रहे
सबके दिलों को संझाती रहे
और बड़े और फुले फिले
सबको इसकी सौगात मिले
यही हिंदी भाषा से हमे आशा है
दूर दूर तक हिंदी रहे
हिंदी पानी के तरह बढती रहे
झन-झन मन में लहराती रहे
सही तो हमारी अभी भाषा है

मेरी भाषा - मेरा गौरव

भाषा केवल संचार का साधन नहीं है। किसी जन-समुदाय के, प्रदेश के सांस्कृतिक और परम्परगत जीवन की प्रगति का इतिहास भाषा से जुड़ा हुआ है। जनता की संस्कृति का प्रतीक है भाषा। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक हस्तांतरण अपनी भाषा के माध्यम से होता है। किसी अन्य भाषा में कहनेवली खूबसूरती शब्दों की तुलना में, प्यार से गले लग जाना, चूमना और सहलाना कितना कोमल, आरामदायक और सुखदायक है। जब हमारी सोच, हमारी भावनाएं और हमारे अनुभवों की अभिव्यक्ति मातृभाषा में होते हैं तब वे पूर्ण और समग्र होते हैं। व्यक्ति के रूप में और समाज के रूप में किसी की पहचान उनकी अपनी भाषा में प्रतिबिंबित होती है। भाषा एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें यह साबित करने और मजबूत करने में मदद करती है कि हम किस संस्कृति का हिस्सा हैं। नागरिकों में आत्म-सम्मान की भावना स्वभाषा से ही जागृत होती है।

समाज को आपस में जोड़ने के लिए भाषा की क्षमता संबंधी राष्ट्रीय विचार आज एक प्रबल राजनीतिक मुद्दा भी है। भाषा के आधार पर राज्यों को गठित करने का कारण भी यही है। इस प्रकार भाषा के आधार पर राज्यों के गठन के पैसठ वर्ष के बाद भी मातृभाषा/राज्य की भाषा की स्थिति पर विचार करने पर,विशेषकर जीवन,शासन और शिक्षा के क्षेत्र में,निराशाजनक ही है। बहुभाषी समाज में किस भाषा में शिक्षा दी जानी है, शिक्षा की भाषा कौन सी है, यह भी चर्चा का प्रमुख विषय है। शोधकर्ताओं और विद्वानों के बीच इस बात पर आम सहमति है कि शिक्षा का माध्यम

षाजी आर.
यांत्रिक अभियंता (पारी)

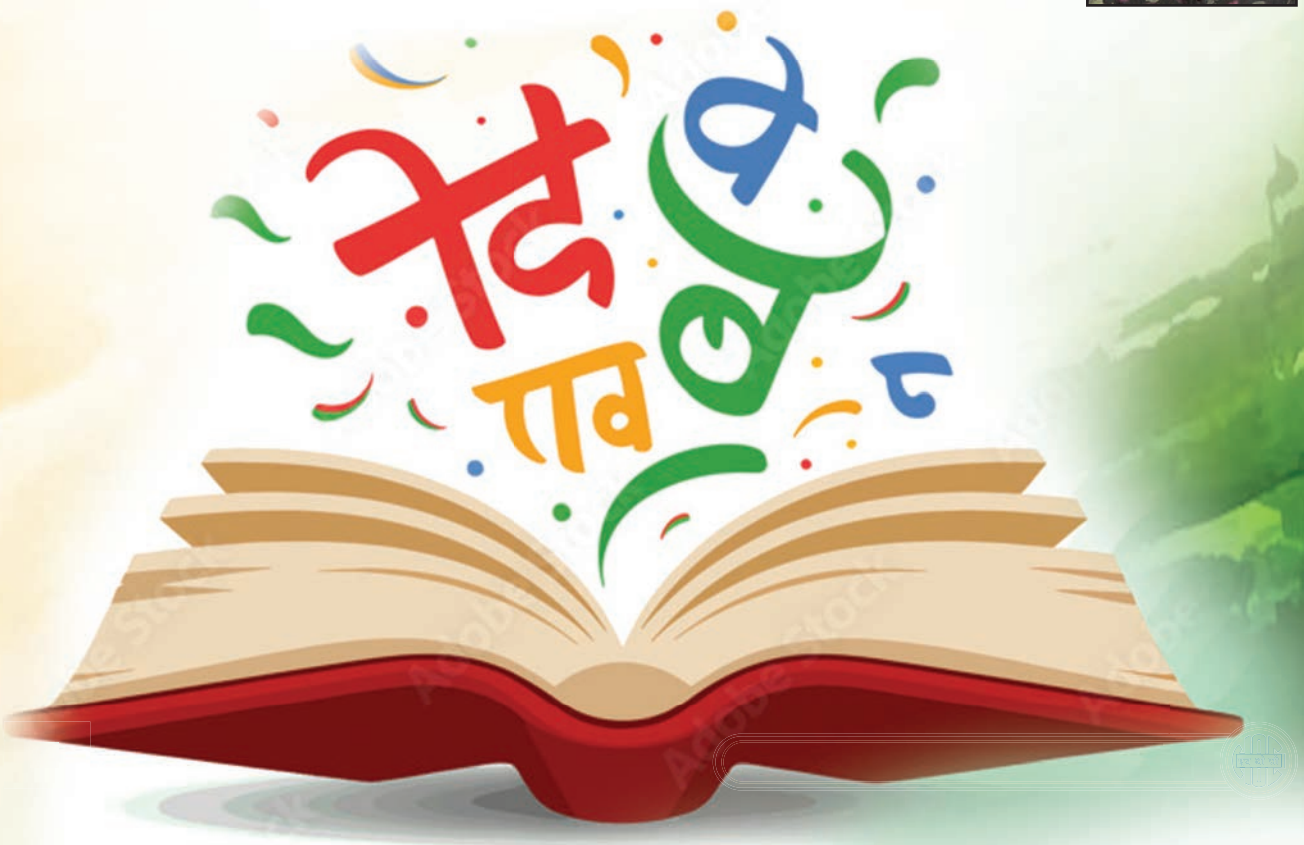

किसी समाज या राज्य में सबसे अधिक लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा होनी चाहिए।

मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर जोर दिया है कि शिक्षा का माध्यम बच्चे की भावनात्मक संतुष्टि का निदान है जो उनकी मातृभाषा है । जब इसको प्रभावी ढंग से लागू करने की चर्चा होती है ,तब इस पर जोरदार तर्क दिया जाता है, और स्वार्थ केन्द्रों से उठने वाली आपत्ति यह है कि यह 'भाषाई आतंकवाद है', इस तरह की आपत्ति को केवल तर्क के रूप में माना जा सकता है। भाषा के प्रति सम्मान रखने वाले लोग स्वाभाविक रूप से "एन पिल्ला – पोन पिल्ला" (मेरा बच्चा सबसे अच्छा) का भाव व्यक्त करते हैं, जो गलत नहीं है। यह खुद अपनी संस्कृति और विरासत पर गर्व की भावना से उपजा है। पुराणों में कहा गया है कि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं। ऐसी सामाजिक जीवन में मनुष्यों को जोड़ने वाली धागा है भाषा। आपसी सहयोग और सह-अस्तित्व बनाए रखने के लिए मातृभाषा ही आवश्यक है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान से भरपूर एक जनसमुदाय के लिए अपनी भाषा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि प्राणवायु। मलयालम के महाकवि वल्लात्तोल नारायण मेनॉन की भाषा संबंधी पंक्तियों में यह स्पष्ट है कि मातृभाषा का महत्व कितना अधिक है। "मिंडितुंडुंगान श्रमिकुन्ना पिंचिलम, चुंडिनमेलअम्मिंजपाल" एंटे भाषा (मेरी भाषा) कविता की पंक्तियों में कवि कहता है कि मातृभाषा जन्म देनेवाली माँ की भाषा है और अन्य भाषाएँ पालन पोषण करनेवाली सौतली माँ की भाषाएँ हैं।

आधुनिक जीवन भाषाओं की सीमाओं को लांघकर एक नया आकार बन रहा है, इसके दूसरे पहलु पर ध्यान देने की आवश्यकता है। संपर्क जीवन की विशाल दुनिया सभी द्वार खुली रखी है। स्वभाषा पर गर्व करते हुए जब हम एनपिल्ला को 'पोनपिल्ला' (मेरा बच्चा सबसे अच्छा) कहते हैं, तो हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि 'अन्य-बच्चे' 'भ्रष्ट-बच्चे' नहीं हैं। स्थानीय भाषा और वैश्विक भाषा के बीच जमींदार-गुलाम का संबंध भी नहीं होना चाहिए। किसी भी भाषा को विश्व भाषा वाली पुष्प शाखा के हिस्से के रूप में माना जाना चाहिए। तभी मैं अपनी भाषा को मेरा गौरव के रूप में पूरी तरह से कह सकता हूँ। भाषा संबंधी ज़िद/हठ पर नहीं रहना है किसी दूसरे पर न थोपना। जिस प्रकार हवा और पानी सीमाओं को पार करते हैं उसी प्रकार भाषाओं का सभी सीमाएँ तोड़ना चाहिए।

मेरी भाषा-मेरा गर्व है। ऐसा कहना है तो, व्यवहार और शिक्षा के माध्यम में इसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। व्यवहार में भाषा का प्रयोग होने पर भाषा और संस्कृति जीवंत रह सकती हैं। यदि कोई अपनी भाषा का प्रयोग नहीं करता, तब उस भाषा स्वाभाविक रूप से लुप्त होती है। बाद में यह अकादमिक भाषा में रह जाती है। केवल नाम के वास्ते रहती तो किसी के लिए काम के लायक नहीं रहती। वर्तमान में, हमारी मातृभाषा की सुंदरता और लचीलापन मिटती जा रही है। आपसी बातचीत में मातृभाषा का प्रयोग न करनेवालों की संख्या बढ़ रही है। इनमें दो तरह के लोग शामिल हैं- (पहला) किसी भी मुद्दे पर प्रतिक्रिया न देनेवाले लोग और (दूसरा) औपचारिक भाषा में बातचीत करनेवाले, वह केवल दिखावा रह जाती है। ऐसे घर, कार्यालय, समूह और संस्थानों की संख्या बढ़ रही हैं जहां लोग आपसे में बातचीत कर रहे हैं। जब गहरी रिश्ता नष्ट हो जाती है,तब मातृभाषा की ताकत कम हो जाती है। यह देखकर दुख होता है कि मातृभाषा के प्रति लोगों की उदासीनता और बढ़ रही है। निष्क्रिय लोग बुरे शासकों के माता-पिता और अभिभावक होते हैं। जब तक इस स्थिति में परिवर्तन नहीं होता,तब तक मैं अपनी भाषा को अपनी शान नहीं कह सकता। भाषा को सक्रिय करना, उसे नवीनीकृत करना ही भाषा को श्रेष्ठ बनाने का सबसे आसान तरीका है।

भाषा पर गर्व होना केवल भावनात्मक नहीं है। इस भाषा को अपनी नींव समझने और जीवंत बनानी है तो हमेशा भाषा, हमारी पहचान बन जाती है और कर्म की भाषा होती है। मलयालम भाषा के सशक्त हस्ताक्षर एम टी वासुदेवन नायर के शब्दों "मेरी भाषा, मेरा घर है, मेरा आकाश है, मेरे तारे हैं जिसे मैं देखता हूँ, वह हवा है जो मुझे सहलाती है, वह शीतल जल है जो मेरी प्यास बुझाती है, मेरी माँ का प्यार और फटकार है, मेरी भाषा मैं ही हूं, किसी भी देश में हो, सपना मैं अपनी भाषा में देखता हूं, मेरी भाषा मैं ही हूं, मेरी भाषा-मेरा गौरव है।"

2026 में साइबर सुरक्षा

पी. मिधुन बाबू
उप प्रबन्धक (सामग्री/एमएसएस)

वर्ष 2026 में साइबर सुरक्षा का स्वरूप आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की तेज़ प्रगति के कारण काफी बदल गया है। पहले भी ऑनलाइन धोखाधड़ी और फिशिंग जैसी घटनाएँ होती थीं, लेकिन 2026 में एआई की मदद से ये हमले अधिक तेज़, अधिक चालाक और अधिक विश्वसनीय हो गए हैं। साथ ही, सुरक्षा प्रणालियाँ भी एआई के कारण अधिक मजबूत और स्मार्ट बनी हैं। आम नागरिकों के लिए इन नए खतरों और सुरक्षा उपायों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

2026 का सबसे बड़ा खतरा एआई आधारित डीपफेक और वॉइस क्लोनिंग ठगी है। अब ठग सोशल मीडिया या सार्वजनिक वीडियो से किसी व्यक्ति की आवाज़ की नकल कर सकते हैं। वे परिवार के सदस्य, मित्र या बैंक अधिकारी की तरह लगने वाली नकली कॉल करके तुरंत पैसे भेजने के लिए कह सकते हैं। कुछ मामलों में नकली वीडियो कॉल (डीपफेक) भी किए जा रहे हैं। चूंकि ये तकनीक अब आसानी से उपलब्ध है, ऐसे धोखों में वृद्धि हुई है। इसलिए किसी भी आपातकालीन वित्तीय अनुरोध को पूरा करने से पहले, ज्ञात नंबर पर दोबारा कॉल करके सत्यापन करना आवश्यक हो गया है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली जैसे Unified Payments Interface (UPI) 2026 में और अधिक तेज़ तथा बायोमेट्रिक तकनीक से जुड़ी हो गई है। फेस ऑथेंटिकेशन और फिंगरप्रिंट से भुगतान की सुविधा बढ़ी है, लेकिन इसके साथ मोबाइल सुरक्षा भी मजबूत होनी चाहिए। यदि फोन चोरी हो जाए और उचित सुरक्षा न हो, तो बायोमेट्रिक का दुरुपयोग संभव है। इसलिए रिमोट लॉक, सिम लॉक और डिवाइस ट्रैकिंग सुविधा सक्रिय रखना जरूरी है।

2026 में एआई से तैयार किए गए धोखाधड़ी संदेश भी बड़ी समस्या बन गए हैं। पहले फर्जी संदेशों में अक्सर वर्तनी की गलतियाँ होती थीं, जिससे उन्हें पहचानना आसान था। अब एआई विभिन्न भारतीय भाषाओं में शुद्ध और पेशेवर संदेश तैयार कर सकता है। ये संदेश व्यक्तिगत जानकारी के साथ भेजे जाते हैं, जिससे वे अधिक विश्वसनीय लगते हैं। इसलिए किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट को सीधे ब्राउज़र में टाइप करके जांच करना अधिक सुरक्षित है।

एआई आधारित निवेश घोटाले भी बढ़े हैं। फर्जी ट्रेडिंग ऐप और क्रिप्टो योजनाएँ एआई चैटबॉट का उपयोग कर लोगों से बातचीत करती हैं और विश्वास जीतती हैं। ये चैटबॉट तुरंत जवाब देते हैं और वास्तविक लगते हैं। यदि कोई योजना कम समय में अधिक लाभ की गारंटी देती है, तो वह संदिग्ध हो सकती है। निवेश से पहले कंपनी की आधिकारिक पंजीकरण स्थिति की जांच अवश्य करनी चाहिए।

सकारात्मक पक्ष यह है कि एआई सुरक्षा को भी मजबूत बना रहा है। बैंक और डिजिटल प्लेटफॉर्म अब एआई आधारित सिस्टम से संदिग्ध लेनदेन को तुरंत पहचानते हैं। यदि कोई असामान्य गतिविधि होती है, तो लेनदेन रोक दिया जाता है और उपयोगकर्ता को तुरंत सूचना मिलती है। कई स्मार्टफोन में 2026 तक एआई सुरक्षा सहायक भी शामिल हैं, जो संदिग्ध वेबसाइट या कॉल के बारे में चेतावनी देते हैं।

भारत सरकार ने भी साइबर अपराध से निपटने के लिए त्वरित शिकायत और सहायता प्रणाली को मजबूत किया है। नागरिक National Cyber Crime Reporting Portal पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते हैं, तथा हेल्पलाइन नं. 1930 पर तुरंत कॉल कर सकते हैं, जिससे धोखाधड़ी लेनदेन को रोकने की संभावना बढ़ जाती है। Indian Computer Emergency Response Team (CERT-In) समय-समय पर एआई आधारित खतरों के संबंध में चेतावनी और दिशा-निर्देश जारी करता है।

2026 में एक और उभरता खतरा स्मार्ट उपकरणों की हैकिंग है। कई भारतीय घरों में अब स्मार्ट टीवी, सीसीटीवी कैमरा, स्मार्ट स्पीकर और अन्य इंटरनेट से जुड़े उपकरण उपयोग में हैं। यदि वाई-फाई पासवर्ड कमजोर है या राउटर की डिफ़ॉल्ट सेटिंग नहीं बदली गई है, तो हैकिंग का खतरा बढ़ जाता है। मजबूत पासवर्ड, एन्क्रिप्शन और नियमित सॉफ्टवेयर अपडेट से इस जोखिम को कम किया जा सकता है।

बच्चे और बुजुर्ग विशेष रूप से संवेदनशील हैं। बुजुर्गों को वॉइस क्लोनिंग और नकली सरकारी कॉल के बारे में जागरूक करना जरूरी है। बच्चों को सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के बारे में सिखाना और अभिभावकीय निगरानी रखना भी आवश्यक है।

अंत में, 2026 में साइबर सुरक्षा एआई तकनीक से प्रभावित है - जहाँ एक ओर अपराधी एआई का उपयोग कर अधिक उन्नत धोखाधड़ी कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सुरक्षा प्रणालियाँ भी अधिक बुद्धिमान हो गई हैं। आम भारतीय नागरिकों के लिए सतर्कता, सत्यापन और त्वरित शिकायत ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। जैसे हम अपने घर की सुरक्षा के लिए ताला लगाते हैं, वैसे ही डिजिटल जीवन की सुरक्षा के लिए भी सावधानी और जागरूकता आवश्यक है।

राष्ट्रीय विद्युत सुरक्षा सप्ताह अभियान–2025

जाने-माने वैज्ञानिक निकोला टेस्ला ने एक बार कहा था, 'मुझे नहीं लगता कि इंसान के दिल में वैसा रोमांच हो सकता है जैसा आविष्कारक के दिल में होता है... सिवाय शायद किसी झटके से बचने के रोमांच के।'

बिजली हमारी आज की दुनिया को चलाने वाली सबसे बड़ी खोजों में से एक है, लेकिन जैसा कि टेस्ला ने मज़ाक में कहा, इसके लिए सम्मान और सावधानी दोनों की ज़रूरत होती है। वही ताकत जो हमारे घरों को रोशन करती है, हमारी इंडस्ट्री को चलाती है, और हमारे डिवाइस को जोड़ती है, अगर लापरवाही से इस्तेमाल की जाए तो गंभीर चोट, आग या मौत भी हो सकती है।

विद्युत सुरक्षा सिर्फ़ एक तकनीकी ज़रूरत नहीं है - यह विद्युत प्रणाली के साथ या उसके आस-पास काम करने वाले हर किसी की बुनियादी ज़िम्मेदारी है। जोखिमों को समझना, सुरक्षित तरीकों को अपनाना और सही उपकरण को बनाए रखना दुर्घटनाओं को होने से पहले ही रोक सकता है। चाहे घर हों, कार्यालय हों, या औद्योगिक संयंत्र हों, सुरक्षा जागरूकता से शुरू होती है और लगातार ज़िम्मेदारी भरे कामों से जारी रहती है।

राष्ट्रीय विद्युत सुरक्षा सप्ताह भारत में एक वार्षिक जागरूकता अभियान है, जिसे नेशनल सेफ्टी काउंसिल (एनएससी) और सेंट्रल इलेक्टि

अखिल हरिकुमार
सहायक प्रबंधक (विद्युत)

्रसिटी अथॉरिटी (सीईए) मिलकर चलाते हैं, और यह विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है। हर साल राष्ट्रीय विद्युत सुरक्षा सप्ताह 26 जून से 2 जुलाई तक मनाया जाता है। इस सप्ताह का मुख्य उद्देश्य जनता और उद्योग में विद्युत सुरक्षा की अहमियत के बारे में जागरूकता बढ़ाना और बिजली का सुरक्षित इस्तेमाल पक्का करने के हमारे सामूहिक प्रतिबद्धता को फिर से जगाना है। यह पहल कर्मचारियों और जनता दोनों को शामिल करके विद्युत सुरक्षा के लिए एक प्रतिभागी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। यह याद दिलाता है कि सुरक्षा सबकी ज़िम्मेदारी है, और छोटे-छोटे काम भी - जैसे सही वायरिंग का इस्तेमाल करना, ओवरलोडिंग से बचना, और नियमित जांच - जान बचा सकते हैं।

इस मौके पर, एचओसीएल ने कर्मचारियों के बीच विद्युत सुरक्षा संस्कृति को मज़बूत करने के लिए कई पहल कीं। इस मौके पर एक विद्युत जागरण प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया - जो एचओसीएल में अपनी तरह का पहला कार्यक्रम था। प्रदर्शनी/एक्सपो में कई तरह के सुरक्षा उपकरण, सुरक्षात्मक उपकरण, विद्युत उपकरण और उत्तम संस्थान प्रथा दिखाए गए, जिसका मकसद सुरक्षित विद्युत प्रणाली और पुर्जों की समझ बढ़ाना था। यह एक जानकारी देने वाला प्लेटफॉर्म था जहाँ कर्मचारी सरकुट प्रोटेक्शन डिवाइस, अर्थिंग सिस्टम, इंसुलेशन मटीरियल और इलेक्ट्रिकल मेंटेनेंस में इस्तेमाल होने वाले व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण जैसी चीज़ों को देख और सीख सकते थे।

इस कार्यक्रम को ज़बरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जिसमें अलग-अलग विभाग के लगभग 170 कर्मचारी आए और बड़ी स्रचि से प्रदर्शनी देखी। कई गैर विद्युत लोगों के लिए, यह एक नया और ज्ञान बढ़ाने वाला अनुभव था, जिससे उन्हें रोज़ाना के कामों में विद्युत सुरक्षा की अहमियत के बारे में कीमती जानकारी मिली। प्रदर्शनी की आदान-प्रदान प्रतिभागिता को अपनी शंकाएँ दूर करने, असल ज़िंदगी में सुरक्षा उपकरण को समझने और दुर्घटनाओं को रोकने और विश्वसनीय कार्यप्रणाली पक्का करने में सुरक्षित विद्युत प्रणाली की अहम भूमिका को समझने के लिए बढ़ावा दिया।

एक सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया, जिसका संचालन एक विशेषज्ञ संसाधन व्यक्ति ने किया - जो विद्युत सुरक्षा, निरीक्षण और वैधानिक अनुपालन के क्षेत्र में व्यापक अनुभव रखने वाले सेवानिवृत्त विद्युत निरीक्षक हैं। सत्र में विद्युत के मूल सिद्धांत, सुरक्षित विद्युत कार्य प्रक्रियाएँ, जोखिम की पहचान, जोखिम आकलन और आपातकालीन प्रतिक्रिया जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया गया। विशेषज्ञ ने अपने वर्षों के फील्ड अनुभव से प्राप्त मूल्यवान वास्तविक जीवन के उदाहरण और अंतर्दृष्टियाँ साझा कीं, जिससे सत्र अत्यंत संवादात्मक और रोचक बन गया। प्रतिभागियों ने औद्योगिक वातावरण में आने वाली सामान्य विद्युत सुरक्षा चुनौतियों पर सक्रिय रूप से चर्चा की और विद्युत दुर्घटनाओं को रोकने के व्यावहारिक उपायों के बारे में सीखा। यह सत्र अत्यंत जानकारीपूर्ण और लाभदायक सिद्ध हुआ, जिसने प्रतिभागियों की सुरक्षित कार्य पद्धतियों की समझ को बढ़ाया और विद्युत सुरक्षा बनाए रखने में निरंतर सतर्कता के महत्व को सुदृढ़ किया।

कर्मचारियों की भागीदारी और ज्ञान साझा करने को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं, जिनमें विद्युत सुरक्षा विषयों पर निबंध लेखन और सुरक्षा सुझाव प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। इन गतिविधियों ने जागरूकता बढ़ाने, सक्रिय सुरक्षा व्यवहार को प्रोत्साहित करने और संगठन के भीतर सुरक्षित और विश्वसनीय विद्युत वातावरण बनाए रखने के महत्व को सुदृढ़ करने में मदद की।

विद्युत सुरक्षा सप्ताह केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि एक साझा सीखने का अनुभव था जिसने सभी को सुरक्षा को दैनिक आदत के रूप में महत्व देने के लिए प्रेरित किया। कर्मचारियों के उत्साह और सक्रिय भागीदारी ने सुरक्षित और विश्वसनीय कार्यस्थल बनाए रखने के लिए संगठन की सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाया। यह जागरूकता की भावना सप्ताह से आगे भी जारी रहे, हमें यह याद दिलाते हुए कि 'सुरक्षा कभी-कभार की चीज़ नहीं है - यह निरंतर है और इसकी शुरुआत हम में से प्रत्येक से होती है।'

संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, इंदौर

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (एचआर/राजभाषा)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने एवं उत्कृष्ट कार्यान्वयन किए गए सरकारी संगठनों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए प्रति वर्ष राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष के सम्मेलन की विशेषता यह है चार क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों यथा मध्य, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 20.01.2026 को इंदौर, मध्यप्रदेश में आयोजित किया गया है।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, खंडवा रोड,इंदौर के लोकमाता देवी अहिल्या सभागार, तक्षशिला परिसर में आयोजित एक दिवसीय राजभाषा सम्मलेन में चार क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के अधीन के कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों और संस्थानों के वरिष्ठ अधिकारियों और राजभाषा कर्मियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इसके अतिरिक्त इन चारों क्षेत्रों के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्षों और सदस्य सचिवों ने भी भाग लिया। इस समारोह में वर्ष 2024-25 में राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए विभिन्न श्रेणियों के तहत केन्द्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों को उत्कृष्ट राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार मुख्य अतिथि रहे। इंदौर के माननीय लोकसभा सांसद श्री शंकर लालवाणी उपस्थित थे। इसके अलावा डॉ राकेश सिंघई, कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, श्री जे एल रेड्डी, हिन्दी शिक्षाविद, इंदौर, श्री नर्मदा प्रसाद, हिन्दी शिक्षाविद, इंदौर, डॉ सुदाम पी खाड़े, मण्डल आयुक्त इंदौर आदि समारोह में उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग ने सभा का स्वागत किया और संयुक्त सचिव डॉ निधि पांडे ने धन्यवाद व्यक्त किया। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय,कोची, बेंगलुरु, मुंबई एवं भोपाल के उप निदेशकों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर विभिन्न कार्यालयों और कंपनियों की पत्रिकाओं का विमोचन भी किया गया।

एचओसीएल में राजभाषा सेमिनार का सफल आयोजन

संघ सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने तथा कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड (एचओसीएल), कोच्चि में दिनांक 07 अगस्त 2025 को एक दिवसीय राजभाषा सेमिनार का सफल आयोजन किया गया। इस सेमिनार में कोच्चि स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंकों तथा सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यरत हिंदी कर्मियों और हिंदी समन्वयकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सेमिनार का विषय था - **'राजभाषा कार्यान्वयन में प्रौद्योगिकी का बढ़ता योगदान'**, जो वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप अत्यंत प्रासंगिक रहा।

कार्यक्रम का उद्घाटन कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (प्रभारी) तथा निदेशक (वित्त) श्री योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि हिंदी देश की संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उसके प्रभावी क्रियान्वयन की जिम्मेदारी हम सभी की है। उन्होंने सभी राजभाषा कर्मियों से आग्रह किया कि वे अपने-अपने कार्यालयों में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के लिए सक्रिय प्रयास करें और नई तकनीकों का लाभ उठाकर राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ बनाएं।

सेमिनार की अध्यक्षता एचओसीएल, कोच्चि के कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी श्री एम. जे. जगदीश ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि वर्तमान डिजिटल युग में प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को और अधिक सरल तथा प्रभावी बनाया जा सकता है। उन्होंने इस प्रकार के सेमिनारों को राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

मानव संसाधन प्रस्तुति

इस अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (पीएसयू), कोच्चि की सचिव श्रीमती एम. सी. शीला ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम में श्री अभिलाष आर., मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन) ने उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया तथा श्री रमेश ओ., प्रबंधक (मानव संसाधन/राजभाषा) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सेमिनार के तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। श्री एस. एन. महेश, सहायक निदेशक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं रोबोटिक्स केंद्र, बेंगलुरु तथा श्री प्रशांत जी पई, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बैंक, एर्नाकुलम ने संकाय सदस्य के रूप में अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अनुवाद उपकरणों, ऑनलाइन प्लेटफार्मों तथा तकनीकी साधनों के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला। उनके व्याख्यान प्रतिभागियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुए।

कार्यक्रम के दौरान अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2025 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। इससे प्रतिभागियों में भाषा के प्रति जागरूकता और उत्साह को और अधिक प्रोत्साहन मिला।

सेमिनार में उपस्थित प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से अपने विचार साझा किए और राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अनुभवों का आदान-प्रदान किया। इस प्रकार के कार्यक्रमों से विभिन्न कार्यालयों के बीच समन्वय, सहयोग और राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता को नई दिशा मिलती है।

सेमिनार का समापन सौहार्दपूर्ण एवं प्रेरणादायक वातावरण में हुआ। प्रतिभागियों ने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार के आयोजन भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी कार्यान्वयन को नई गति प्रदान करेंगे।

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2025 समारोह

मानव संसाधन प्रस्तुति

देश के प्रत्येक शहर या नगर में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का एक संयुक्त मंच है नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति। समिति द्वारा प्रतिवर्ष दो बैठकों का आयोजन किया जाता है। साथ ही राजभाषा के प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करने और अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष राजभाषा समारोह/संगोष्ठी आयोजित की जाती है। समिति द्वारा विविध कार्यक्रमों यथा संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह, संयुक्त हिन्दी कार्यशाला, राजभाषा अभिमुखीकरण एवं प्रबंधन कार्यक्रम आदि के माध्यम से सदस्य कार्यालयों को राजभाषा कार्यान्वयन में बांधने का सराहनीय प्रयास किया जाता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोची के तत्वावधान में वर्ष 2025 -26 के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह दिनांक 04 से 18 फरवरी तक मनाया गया। समारोह का उदघाटन 04 फरवरी को बीएसएनएल भवन में हुआ। कार्यक्रम का उदघाटन बीएसएनएल के प्रधान महा प्रबंधक टेलीकॉम एवं अध्यक्ष, नराकास (पीएसयू) डॉ के फ्रांसिस जेकब आईटीएस ने किया। आपने नराकास (पीएसयू), कोची द्वारा आयोजित गतिविधियों की सूचना दी और जनवरी माह में सम्पन्न संसदीय राजभाषा समिति के आलेख एवं साक्ष्य उप समिति की बैठक के बारे में बताया। बैठक में हमारी समिति को उत्कृष्ट प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। श्री राजीव एस के महा प्रबन्धक (योजना), बीएसएनएल, मेजर राशिद बिन इस्माइल, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) एफ़एसीटी, श्री कुलमाला विजयकुमार, सहायक महा प्रबन्धक (प्रशासन एवं कानून) और सुश्री संयुक्ता एस., उप प्रबंधक (वित्त), एच एच एल, कोच्ची ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती एम सी शीला, सदस्य सचिव, नराकास (पीएसयू), कोची सभी का स्वागत किया और सुश्री सरिता, प्रबन्धक (राजभाषा) ने आभार व्यक्त किया। उदघाटन सत्र के बाद सुलेख, प्रशासनिक शब्दावली, टिप्पणी और अनुवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

10 फरवरी 2026 को हमारी कंपनी में सुगम संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गयी। महिलाएँ और पुरुष श्रेणी में आयोजित इसमें विविध कंपनियों के करीब 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के निर्णायक के रूप सुप्रसिद्ध मलयालम पार्श्व गायिका सुश्री चित्रा अरुण और कलाकार श्री राधाकृष्णन शामिल हुए। कविता रचना, निबंध रचना,

कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी विविध कार्यालयों में सम्पन्न हुई। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति की नई प्रश्नावली पर सदस्य कार्यालयों के हिन्दी कर्मियों एवं समन्वयकों के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन बीएसएनएल भवन में 06.02.2026 को चलायी गयी। छोटे सदस्य कार्यालयों के लिए संयुक्त हिन्दी कार्यशाला 16.02.2026 को आयोजित की गयी। 11.02.2026 को एचपीसीएल, कोची में कर्मचारियों के लिए राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम और कोच्चिन पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। समापन समारोह और विजेताओं का पुरस्कार वितरण गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया, कोची के सहयोग से किया जा रहा है। इस अवसर पर वर्ष 2024-25 के लिए विविध श्रेणियों में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सदस्य कार्यालयों को ट्रॉफी और प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह 2026

अभिलाष आर.
मुख्य प्रबंधक (एच आर)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 20 फरवरी 2026 को श्री शंकरा विद्यापीठम कॉलेज, वलयंचिरंगरा के पुस्तकालय सभागार में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कॉलेज के हिंदी विभाग तथा हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड (एचओसीएल), कोच्चि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यशाला का विषय 'मातृभाषा का गौरव और राजभाषा हिंदी: एकता से आत्मनिर्भरता तक' रखा गया था।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ। हिंदी विभाग की सह-आचार्या एवं विभागाध्यक्ष डॉ. पूर्णिमा आर. ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) सुधाकरन के.एम. ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने मातृभाषा के महत्व तथा भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन डॉ. शीला पी. सी., सचिव, सेंट्रल ज़ोन, श्री शंकरा ट्रस्ट द्वारा किया गया। उन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का आधार है और इसके माध्यम से ही हम अपने विचारों और परंपराओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र (प्रातः 10:30 से 11:50 बजे तक) में श्री रमेश ओ., मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), एचओसीएल, कोच्चि ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने राजभाषा हिंदी और रोजगार से संबंधित विषयों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इस सत्र में डॉ. सुचित्रा ए. ने आशीर्वाद भाषण प्रस्तुत किया तथा डॉ. रेखा के.आर., सहायक आचार्या, हिंदी विभाग ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

द्वितीय सत्र (दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक) की शुरुआत डॉ. निशा उन्नीकृष्णन, सहायक आचार्या, हिंदी विभाग के स्वागत भाषण से हुई। इस सत्र में एचओसीएल, कोच्चि के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री एम.वी. अरुण ने 'राजभाषा हिंदी और रोजगार के अवसर' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के बढ़ते महत्व, सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में हिंदी के उपयोग तथा रोजगार की संभावनाओं के बारे में उपयोगी जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. पूर्णिमा आर. द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों और अध्यापकों की उत्साहपूर्ण सहभागिता देखने को मिली। कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों को मातृभाषा के महत्व, हिंदी की उपयोगिता तथा राष्ट्रीय एकता और रोजगार के क्षेत्र में इसकी भूमिका के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ।

इसी अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'डिजिटल युग और क्षेत्रीय भाषाओं का भविष्य' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य डिजिटल युग में क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व, उनके संरक्षण तथा तकनीकी विकास के साथ उनके भविष्य की संभावनाओं पर कर्मचारियों को विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना था। कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया और अपने लेखों के माध्यम से मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता के माध्यम से कर्मचारियों में भाषा के प्रति जागरूकता तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिला।

यही है ज़िंदगी

देवेंद्र सिंह पटवाल
अधिकारी प्रशासनिक

प्रिय सज्जनों

अगर परखो तो कोई अपना नहीं है
अगर समझो तो कोई पराया नहीं है

चेहरे की हंसी से ग़म भुला देना
कम बोलो पर सब कुछ बता देना
खुद न रूठो पर सबको हंसा देना
यही है ज़िंदगी का असली राज

खुद जियो और औरों को भी जीना सिखा देना
ग़मों को दिल से मिटा देना
यदि कोई ग़म हो तो भी अपने दिल को मना लेना
और अगर दिल न माने तो ये समझा लेना
इसी का नाम ज़िंदगी है
जिसमें कभी खुशी है तो कभी ग़म है

खुशियाँ लाती हैं अपने साथ मौक़े हज़ार
और दे जाती हैं उस ग़म को भुलाने के लिए यादें अपार

बस इसी का नाम ज़िंदगी है
तो हँसते मुस्कुराते रहो
और दिल से कहो हर बार
सब बढ़िया है
सब बढ़िया है

हिंदी माह समारोह - 2025

राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन की दिशा में एक सशक्त पहल

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा संघ सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने तथा राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सरकारी संगठनों को सम्मानित करने के उद्देश्य से 14 एवं 15 सितंबर 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर (गुजरात) में हिंदी दिवस समारोह तथा पाँचवाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा किया गया।

इस राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, अनेक सांसदगण, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, देशभर के विभिन्न संस्थानों के निदेशक, स्वायत्त निकायों के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सार्वजनिक उपक्रमों के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक तथा भाषा से जुड़े अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सम्मेलन में देशभर में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन, उसकी प्रगति तथा भविष्य की कार्ययोजना पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में हमारे कार्यालय की ओर से मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन/राजभाषा) ने भाग लेकर संस्था का प्रतिनिधित्व किया।

मानव संसाधन प्रस्तुति

राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन और कार्यालयीन कार्यों में उसके अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एचओसीएल में **01 से 30 सितंबर 2025 तक** 'हिंदी माह समारोह' का आयोजन बड़े उत्साह एवं सक्रियता के साथ किया गया। हिंदी माह का मुख्य उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि, जागरूकता तथा आत्मविश्वास विकसित करना और दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार करना रहा।

कंपनी में हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों, निकटवर्ती सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों, इकाई के कर्मचारियों के बच्चों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए विविध प्रतियोगिताओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

किया गया। इन गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को हिंदी भाषा के प्रयोग, लेखन एवं अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विशेष कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग, राजभाषा नीति के प्रावधानों तथा तकनीकी माध्यमों से हिंदी के उपयोग पर विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए कंप्यूटर आधारित हिंदी प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। विभागाध्यक्षों के लिए एक विशेष प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी उपयोग पर बल दिया गया।

कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं में सुलेख, प्रश्नोत्तरी, हिंदी टंकण, श्रुतलेख, सुगम संगीत, रचना लेखन, हिंदी शब्दावली, टिप्पणी लेखन तथा अनुवाद प्रतियोगिता प्रमुख रूप से शामिल थीं। इन प्रतियोगिताओं ने कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रचनात्मक अभिरुचि को

प्रोत्साहित किया तथा उन्हें अपनी भाषा दक्षता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया।

इसके अतिरिक्त पीआरएनएसएस कॉलेज, मट्टन्नूर तथा कुसाट (हिंदी विभाग) के विद्यार्थियों के लिए विशेष कक्षाओं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कर्मचारियों के बच्चों के लिए ऑनलाइन वाचन प्रतियोगिता का भी सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिसने बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि और आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया।

हिंदी माह के अंतर्गत आयोजित सभी कार्यक्रमों में प्रतिभागियों ने अत्यंत उत्साह और सक्रियता के साथ भाग लिया। इन गतिविधियों के माध्यम से न केवल हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और लगाव में वृद्धि हुई, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को भी प्रोत्साहन मिला।

इस प्रकार हिंदी माह समारोह 2025 ने राजभाषा हिंदी के प्रसार, प्रोत्साहन तथा उसके प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक भूमिका निभाई।

‘पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक’

विश्व हिंदी दिवस 2026

के.के. रामचंद्रन
उपनिदेशक (सेवानिवृत्त) आयकर विभाग, कोची

आजकल हिन्दी भाषा अपनी विकास यात्रा में राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर दुनिया के कोने कोने तक अपनी अलग पहचान दिखाई जा रही है। भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव के कारण दुनिया के कई राष्ट्रों में हिंदी भाषा-शिक्षण की पहल प्रारंभ की गई है। हिन्दी की महत्ता को देखते हुए विदेशी सहित अधिक से अधिक लोग यह भाषा सीखने के लिए आगे आ रहे हैं। फिलहाल दुनिया भर में सौ से अधिक राष्ट्रों में करीब 770 संस्थानों द्वारा हिंदी भाषा सिखाई जा रही है। हमारे लिए गर्व की बात है कि कई विदेशी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में भाषा पाठ्यक्रम, अनुसंधान और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी पढ़ाई जा रही है। निस्संदेह हम कह सकते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं भाषा का दर्जा निकट भविष्य में हिंदी को प्राप्त होगी। विश्व भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से वर्ष 2006 में प्रारम्भ किए गए विश्व हिंदी दिवस का लक्ष्य कूट नीति (डिप्लोमेसी), शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सहित अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है। सबको विदित है कि वर्ष 1975 में नागपुर में संपन्न प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन की याद में हर साल जनवरी 10 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जा रहा हैं जिससे क्लासिकल साहित्य से लेकर एआई, कोडिंग और डिजिटल इंटरफेस एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के ज़रिए हिंदी का विकास सुनिश्चित किया जाता है। विश्व हिन्दी दिवस के थीम - हिंदी: पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक - से यही परिलक्षित होता है ।

पिछले सालों की भांति वर्तमान साल भी एचओसीएल द्वारा विश्व हिन्दी दिवस, 2026 विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। कार्यालयों में व्यावहारिक हिन्दी के प्रचार को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों के लिए हिन्दी समाचार वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 15 से अधिक कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड, कोची
HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED, KOCHI
(भारत सरकार का उद्यम A Govt. of India Enterprises)
विश्व हिन्दी दिवस समारोह
WORLD HINDI DAY CELEBRATION
हिन्दी विभाग श्री केरल वर्मा कॉलेज, त्रिश्शूर के सहयोग से
In Collaboration with Dept. of Hindi Sree Kerala Varma College, Thrissur
9 जनवरी JANUARY 2026

और तृतीय स्थान प्राप्त कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा कंपनी द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं में प्रशिक्षण प्राप्त सभी कार्मिकों को अपने दैनिक कामकाज कम्प्यूटरों के माध्यम से अधिक से अधिक हिन्दी में करने का आग्रह भी समारोह के दौरान किया गया।

इस साल के विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 9 जनवरी 2026 को कंपनी द्वारा श्री केरलवर्मा कॉलेज, तृश्शूर में एक पूर्ण दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन श्री केरलवर्मा कॉलेज के प्राचार्य डॉ के जयनिशा ने किया। हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ के राजेश्वरी ने अपने स्वागत भाषण में कार्यकम का संक्षिप्त परिचय दिया और छात्रों के लिए ऐसे एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड को धन्यवाद दिया।

साहित्यिक एवं व्यावहारिक हिन्दी तथा राजभाषा से जुड़े विभिन्न विषयों पर छात्रों के लिए एचओसीएल के मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा) श्री ओ रमेश द्वारा आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताके साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरान्त श्री पी के पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबन्धक(से.नि), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, कोयंबत्तूर ने 'विश्व भाषा हिन्दी और छात्र' विषय पर प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी। श्री एम पी दामोदरन, क्षेत्रीय उप निदेशक (से.नि), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली ने द्वितीय सत्र में हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में विकसित करने में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका पर व्याख्यान दिया जो छात्रों के लिए एक नया अनुभव रहा। दोपहर के सत्रों में श्री के के रामचंद्रन, उप निदेशक (रा भा) (से.नि), आयकर विभाग, कोच्ची एवं श्री रमेश ओ, मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा), एचओसीएल ने क्रमशः राजभाषा नीति-नियमों का संक्षिप्त परिचय तथा राजभाषा संबंधी केंद्र सरकारी/राज्य सरकारी कार्यालयों में उपलब्ध रोजगार के अवसरों पर विस्तृत चर्चा की।

इस विशेष कार्यक्रम में 60 से अधिक छात्र उपस्थित रहे। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यक्रम के अंत में पुरस्कार प्रदान किए गए। कॉलेज के अध्यापक बंधुओं ने छात्र-छात्राओं को राजभाषा पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करके एक नया अनुभव प्रदान करने के लिए एचओसीएल को अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। छात्रों ने अपनी प्रतिक्रिया में सूचित किया कि वे इस कार्यक्रम से बहुत से लाभान्वित हुए हैं और ऐसा ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आगे भी नियमित रूप से आयोजित करें। सभी प्रतिभागियों और अध्यापकों को एचओसीएल की तरफ से कंपनी के प्रतीक चिह्न लगाए उपहार भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम शाम को 4.00 बजे समाप्त हुआ।

एचओसीएल, में राजभाषा निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन को अधिक प्रभावी एवं कारगर बनाने में निरीक्षण का विशेष महत्व है। कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का आकलन करने तथा कार्यान्वयन को सुगम बनाने के लिए समय-समय पर निरीक्षण किया जाना आवश्यक है। निरीक्षण के माध्यम से न केवल हिंदी के प्रयोग की वास्तविक स्थिति का पता चलता है, बल्कि निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में आने वाली बाधाओं तथा उन्हें दूर करने के उपायों पर भी चर्चा एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

रिपोर्ट के माध्यम से प्राप्त जानकारी और आँकड़ों के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। साथ ही निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श कर राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सुझाव भी दिए

जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में यह निर्देश दिया गया है कि मंत्रालयों/विभागों के संबंधित अधिकारी समय-समय पर केंद्र सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण करें।

मानव संसाधन प्रस्तुति

इसी क्रम में श्री काले खाँ, सहायक निदेशक, डीसीपीसी, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 15.10.2025 को एचओसीएल, कोच्चि कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण से पूर्व विभाग द्वारा भेजी गई प्रश्नावली को भरकर मंत्रालय को प्रेषित किया गया था।

निरीक्षण के दौरान कंपनी में राजभाषा से संबंधित फाइलों, अभिलेखों तथा विभिन्न दस्तावेजों का अवलोकन किया गया। इसके पश्चात विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में सहायक निदेशक ने राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी सुझाव और मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस अवसर पर कंपनी के अधिकारियों ने भी राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। श्री काले खाँ ने अधिकारियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और भविष्य में भी हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया।

साँस संबन्धी समस्या: श्रमिकों को क्या जानना चाहिए

व्यावसायिक स्वास्थ्य जागरूकता

डॉ. दयालक्ष्मी एस
चिकित्सा अधिकारी

परिचय

आग और रासायनिक दुर्घटनाएं उन सबसे गंभीर आपात स्थितियों में से हैं जो औद्योगिक कार्यस्थल पर हो सकती हैं। जहाँ त्वचा पर जलने के निशान आसानी से दिखाई देता है, वहीं धुआं, गर्म गैसें या जहरीले रसायन सांस के ज़रिए अंदर जाने से होने वाली चोटें आसानी से दिखाई नहीं देतीं, लेकिन वे कहीं ज़्यादा खतरनाक हो सकती हैं। कारखानों, रासायनिक संयंत्रों और अन्य बंद कार्य क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिकों को इन जोखिमों के बारे में पता होना चाहिए और उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि ऐसी आपात स्थिति में तेज़ी से प्रतिक्रिया कैसे दें।

औद्योगिक इतिहास ने दिखाया है कि जहरीली गैसों को साँस के ज़रिए अंदर लेना कितना खतरनाक हो सकता है। इसका सबसे त्रासद उदाहरण भारत में 1984 की भोपाल गैस त्रासदी है। भोपाल में एक कीटनाशक संयंत्र से 40 टन से अधिक मिथाइल आइसोसाइनेट गैस का रिसाव हुआ, जिससे तत्काल कम से कम 3,800 लोगों की मौत हो गई और हज़ारों अन्य लोग गंभीर रूप से बीमार पड़ गए या उनकी समय से पहले मौत हो गई। इसे दुनिया की सबसे बड़ी औद्योगिक आपदा माना जाता है।

इनहेलेशन इंजूरी (साँस से होने वाली समस्या) क्या है?

एक इनहेलर चोट तब होती है जब कोई व्यक्ति गर्म हवा, भाप, धुआँ, ज़हरीली गैसें और रासायनिक धुएँ जैसे हानिकारक पदार्थों को साँस के ज़रिए अंदर लेता है। औद्योगिक वातावरण में, इनहेलेशन इंजरी औद्योगिक आग, रासायनिक रिसाव या फैलाव, ज़हरीली गैसों के संपर्क में आने और बंद जगहों में खराब वेंटिलेशन के कारण हो सकती है।

यह खतरनाक क्यों है?

इन रसायनों/गैसों को साँस के ज़रिए अंदर लेने से थर्मल इंजूरी (गर्मी से होने वाली चोट) हो सकती है, खासकर ऊपरी श्वसन मार्ग में। इससे सूजन हो सकती है,जो वायुमार्ग को संकुचित या अवरुद्ध कर सकती है जिससे सांस लेना मुश्किल हो सकता है। ये रसायन फेफड़ों में गहराई तक जाकर सूजन, ब्रेंकोस्पाज्म, पल्मोनरी एडिमा का कारण बन सकते हैं।

ये सिस्टमिक टॉक्सिसिटी (पूरे शरीर में ज़हर फैलना) भी पैदा कर सकते हैं, जिससे फेफड़ों में ऑक्सीजन का आदान-प्रदान कम हो जाता है। गंभीर मामलों में, इससे श्वसन तंत्र फेल हो जाता है। यह स्थिति लगभग 30% मामलों में जानलेवा हो सकती है।

इनहेलेशन इंजूरी जलने के 20% मामलों को और भी जटिल बना देती है, खासकर चेहरे के जलने के मामलों में। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि आग लगने की दुर्घटनाओं में होने वाली 80% से ज़्यादा मौतें इनहेलेशन इंजरी से जुड़ी होती हैं, जिसमें कार्बन मोनोऑक्साइड ज़हर मुख्य कारण होता है।

धुआँ साँस में जाने के लक्षण

जिन लोगों ने धुआँ या ज़हरीली गैसें साँस में ली हैं, उनमें ये लक्षण दिख सकते हैं:

- ❖ साँस की नली में जलन के कारण लगातार खाँसी आना
- ❖ आवाज़ में बदलाव, भारीपन या घरघराहट (stridor)
- ❖ साँस लेने में तकलीफ़ या तेज़ी से साँस लेना
- ❖ साँस लेते समय सीटी जैसी आवाज़ या घरघराहट होना
- ❖ बलगम का ज़्यादा बनना (बलगम काला या साफ़ हो सकता है)
- ❖ मुँह या नाक के अंदर कालिख जम जाना
- ❖ चेहरे, होंठ, जीभ, मुँह, गले या नाक की अंदरूनी झिल्ली पर जलने के निशान
- ❖ सिरदर्द या चक्कर आना
- ❖ होश कम होना, भ्रम या बेचैनी होना

लक्षण तुरंत या कुछ घंटों बाद दिख सकते हैं।

चिकित्सा सहायता कब लेनी चाहिए?

धुएं का साँस लेना जल्दी गंभीर हो सकता है या व्यक्ति शुरू में ठीक हो सकता है लेकिन समय के साथ लक्षण बिगड़ते जाएँ। अगर किसी व्यक्ति ने धुआँ साँस में लिया है और उसमें ऊपर बताए गए कोई भी लक्षण दिखते हैं, तो तुरंत चिकित्सीय मदद लेनी चाहिए:

प्रारंभिक चिकित्सा मूल्यांकन जटिलताओं को रोक सकता है और ठीक होने की प्रक्रिया बेहतर हो सकती है।

कार्यस्थल पर रोकथाम

औद्योगिक जगहों पर साँस से जुड़ी चोटों को रोकना बहुत ज़रूरी है। निम्नलिखित सुरक्षा उपाय जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं:

- ❖ काम करने की जगहों पर हवा आने-जाने का सही इंतज़ाम (वेंटिलेशन)
- ❖ ज़रूरत पड़ने पर व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, जैसे रेस्पिरेटर मास्क का इस्तेमाल
- ❖ रसायनों को संभालने के लिए कड़े नियम-कायदों का पालन
- ❖ गैस लीक या अजीब गंध आने पर तुरंत उसकी जानकारी देना
- ❖ आग से बचाव की नियमित ट्रेनिंग और आपातकालीन अभ्यास (ड्रिल)
- ❖ आपातकालीन दरवाज़ों और बाहर निकलने के रास्तों की जानकारी होना
- ❖ कर्मचारियों को हमेशा कार्यस्थल पर सुरक्षा से जुड़े निर्देशों का पालन करना चाहिए और कंपनी द्वारा दिए गए सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करना चाहिए।

धुएं के संपर्क में आने पर प्राथमिक चिकित्सा

यदि किसी व्यक्ति को धुएं या जहरीली गैसों को अंदर लेने का संदेह है:

1. व्यक्ति को तुरंत ताज़ी हवा वाली जगह पर ले जाएँ।
2. आपातकालीन बचाव टीम या मेडिकल यूनिट को जानकारी दें।
3. तंग कपड़ों को ढीला कर दें और व्यक्ति को शांत रखने की कोशिश करें।
4. अगर व्यक्ति बेहोश है, लेकिन साँस ले रहा है, तो उसे 'रिकवरी पोज़िशन' (एक करवट) में लिटा दें।
5. अगर साँस रुक जाए और नब्ज़ महसूस न हो, तो तुरंत सीपीआर देना शुरू करें और आपातकालीन चिकित्सीय मदद के लिए फ़ोन करें।

तुरंत प्राथमिक उपचार देने से जान बचाई जा सकती है और जटिलताओं को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

धुआँ साँस में जाने से होने वाली चोट एक गंभीर समस्या है, जिससे मृत्यु और बीमारी का जोखिम काफ़ी ज़्यादा होता है; लेकिन आग लगने या रासायनिक दुर्घट नाओं के दौरान अक्सर इस पर ध्यान नहीं दिया जाता। लक्षणों को जल्दी पहचानना, तुरंत प्राथमिक उपचार देना और सुरक्षा के कड़े नियमों का पालन करना-इन चोटों को काफ़ी हद तक रोकने में मदद कर सकता है।

सुरक्षा के प्रति मज़बूत जागरूकता बनाए रखकर और कार्यस्थल के दिशा-निर्देशों का पालन करके, हम सभी के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ कार्य-वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में युवाओं की भूमिका

अरुण एम वी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

किसी भी राष्ट्र की प्रगति और भविष्य उसकी युवा पीढ़ी की सोच और कार्यों पर निर्भर करता है। आज के समाज में भ्रष्टाचार हमारे विकास और नैतिक मूल्यों को कमजोर करने वाली एक बड़ी चुनौती बन चुका है। इस चुनौती का सामना करने के लिए सबसे शक्तिशाली शक्ति युवा पीढ़ी ही है। उनकी सत्यनिष्ठा और प्रतिबद्धता समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

भारत एक युवा देश है - यहाँ की लगभग 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। यदि यह युवा शक्ति भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकजुट होकर कार्य करे, तो असंभव प्रतीत होने वाली यह लड़ाई भी सफल हो सकती है।

भ्रष्टाचार हमारे समाज की प्रगति को बाधित करने वाली सबसे बड़ी सामाजिक बुराइयों में से एक है। यह न केवल देश की आर्थिक उन्नति को रोकता है, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी कमजोर करता है। इसलिए भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में युवा पीढ़ी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

युवा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। उनमें ऊर्जा, उत्साह और परिवर्तन की भावना होती है। यदि वे भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद करें, तो समाज में बड़ा परिवर्तन संभव है।

युवाओं की भूमिका केवल शिकायत करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जिम्मेदारी को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

सोशल मीडिया, जनआंदोलन और जागरूकता अभियानों के माध्यम से वे लोगों को प्रेरित कर सकते हैं। युवाओं को भ्रष्टाचार विरोधी विचारों से जोड़ने के लिए

विद्यालयों और महाविद्यालयों में भ्रष्टाचार विरोधी क्लबों की स्थापना की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं की निगरानी करके यह सुनिश्चित करने में भी युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं कि उनका दुरुपयोग न हो।

युवाओं को यह समझना चाहिए कि केवल नारे लगाने या पोस्टर लगाने से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होगा। प्रत्येक युवा को अपने जीवन में सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। यदि हर व्यक्ति भ्रष्टाचार को 'नहीं' कहने का साहस दिखाए, तो यह बुराई धीरे-धीरे समाप्त हो सकती है। युवा अपने परिवार, मित्रों और समाज में नैतिक मूल्यों का प्रचार कर दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं।

1. भ्रष्टाचार के दुष्परिणाम

- सरकारी तंत्र और संस्थाओं में जनता का विश्वास कमजोर हो जाता है।
- विकास योजनाएँ वास्तविक लाभार्थियों तक नहीं पहुँच पातीं।
- देश की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है।
- समाज में ईमानदार लोग हतोत्साहित हो जाते हैं।

2. युवाओं की जिम्मेदारी

- युवाओं में उत्साह, ऊर्जा और परिवर्तन लाने की क्षमता होती है।
- वे समाज में नई सोच और नैतिकता का संचार कर सकते हैं।
- युवाओं को 'मैं नहीं, हम' की भावना के साथ कार्य करना चाहिए।

3. भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष के उपाय (युवा)

- स्वयं ईमानदारी का पालन करें और दूसरों को प्रेरित करें।
- रिश्वत न लें और न ही दें।
- सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता फैलाएँ।
- स्कूलों और कॉलेजों में भ्रष्टाचार विरोधी क्लब बनाकर अभियान चलाएँ।
- सरकारी योजनाओं की जानकारी एकत्र कर पारदर्शिता सुनिश्चित करें।
- मतदान करते समय ईमानदार और योग्य उम्मीदवारों को चुनें तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें।
- अपने मताधिकार का जागरूकता के साथ उपयोग करें और स्वच्छ राजनीतिक मूल्यों को बढ़ावा दें।
- कहीं भी भ्रष्टाचार दिखाई देने पर संबंधित विभाग में शिकायत दर्ज कराएँ।

4. युवाओं को आदर्श बनना चाहिए

- अपने कार्यों के माध्यम से एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करें।
- परिवार, मित्रों और समाज में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करें।
- डिजिटल इंडिया और तकनीक का सही उपयोग करके पारदर्शी व्यवस्था को बढ़ावा दें।

युवा पीढ़ी का उत्साह और सत्यनिष्ठा हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। जब युवा भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकजुट होकर कार्य करेंगे, तभी हम एक पारदर्शी और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकेंगे। भ्रष्टाचार-मुक्त भारत का सपना युवाओं की जागरूकता और संकल्प पर ही निर्भर करता है।

यदि युवा यह दृढ़ निश्चय करें कि वे स्वयं भ्रष्टाचार में भाग नहीं लेंगे और समाज में इसके प्रति जागरूकता फैलाएँगे, तो भारत निश्चित रूप से भ्रष्टाचार-मुक्त राष्ट्र बन सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था...

'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको।'

युवाओं को इस संदेश को अपनाकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक नई क्रांति का आरंभ करना चाहिए।

संकल्पित सत्यनिष्ठा:
डिजिटल युग का सतर्क प्रबंधक

आज की सार्वजनिक प्रशासन व्यवस्था में सतर्कता केवल एक वैधानिक या नियामक दायित्व नहीं रहा है, बल्कि यह संस्थागत सत्यनिष्ठा बनाए रखने और शासन के प्रत्येक स्तर पर पारदर्शिता को प्रोत्साहित करने का एक सक्रिय और महत्वपूर्ण कार्य बन चुकी है। तीव्र डिजिटलीकरण के वर्तमान परिदृश्य में, प्रबंधकों और अधिकारियों के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियाँ उपस्थित हैं, जहाँ पारंपरिक सतर्कता व्यवस्थाओं को तकनीकी प्रगति, जटिल नियामक परिवेश तथा केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) द्वारा निर्धारित नवीनतम ढाँचों के अनुरूप बढ़ती पारदर्शिता की अपेक्षाओं के साथ स्वयं को निरंतर अनुकूलित करना आवश्यक है। आज की सक्रिय सतर्कता का उद्देश्य भ्रष्टाचार की रोकथाम, जवाबदेही को सुदृढ़ करना तथा ऐसे सशक्त और लचीले तंत्र विकसित करना है, जो मानवीय त्रुटियों और दुर्भावनापूर्ण कृत्यों-दोनों का को प्रभावी ढंग से संभालती हैं।

आधुनिक सतर्कता सिद्धांतों को तकनीकी परिवर्तन से उत्पन्न हो रहे नए जोखिमों का सामना करने हेतु निरंतर विकसित होना चाहिए, साथ ही ईमानदारी, निष्पक्षता और जन विश्वास जैसे शाश्वत मूल्यों को भी बनाए रखना चाहिए।

जितेन्द्र मलिक
मुख्य प्रबंधक (एमएसएस/वित्त/एचआर)

सतर्कता के समक्ष समकालीन चुनौतियाँ

सरकारी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यकलापों में डिजिटल परिवर्तन ने जहाँ निरीक्षण और निगरानी के नए साधन उपलब्ध कराए हैं, वहीं कुछ नई कमियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। कुछ प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

- सूचना सुरक्षा से जुड़े खतरे: डिजिटल संचार, क्लाउड स्टोरेज और संघटित डेटाबेस के बढ़ते उपयोग के साथ संवेदनशील सूचनाओं के अनधिकृत प्रकटीकरण का जोखिम बढ़ गया है। मानवीय त्रुटियाँ, कमजोर पासवर्ड और अपर्याप्त प्रशिक्षण डेटा उल्लंघन और सूचनाओं के रिसाव का कारण बन सकते हैं। असुरक्षित प्लेटफार्मों पर आंतरिक दस्तावेज़ साझा करना या फ़िशिंग ई मेल का शिकार होना, आकस्मिक रिसाव या जानबूझकर की गई चोरी के जोखिम को बढ़ाता है।

- डिजिटल कार्यान्वयन का दबाव: डिजिटल परिवर्तन को शीघ्र रूपांतरण करने की अपेक्षा कभी कभी आवश्यक सुरक्षा एवं अनुपालन प्रक्रियाओं को दरकिनार करने की प्रवृत्ति को जन्म देती हैं। ई गवर्नेंस परियोजनाओं का जल्दबाज़ी में कार्यान्वयन कमज़ोर प्रणालियों या सत्यनिष्ठा उल्लंघन के बढ़ते जोखिम का कारण बन सकता है। सख्त समय सीमा को पूरा करने हेतु यदि विक्रेताओं की पृष्ठभूमि जाँच नहीं की जाती, तो इससे संदिग्ध या अनैतिक ठेकेदार प्रणाली में प्रवेश कर सकते हैं।
- जटिल होता नियामक परिवेश: अब अनुपालन की आवश्यकताएँ केवल पारंपरिक प्रशासनिक कानूनों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और डिजिटल ऑडिट से संबंधित प्रावधान भी सम्मिलित हैं। प्रबंधकों को नवीनतम सीवीसी दिशा निर्देशों तथा डेटा संरक्षण नियमों से निरंतर अवगत रहना आवश्यक है, क्योंकि तकनीक और खतरों के साथ ये नियम तेजी से परिवर्तित होते रहते हैं। जो प्रक्रियाएँ पिछले वर्ष तक अनुपालक मानी जाती थीं, वे आज अधिक कठोर मानकों के अनुरूप अपर्याप्त हो सकती हैं।

डिजिटल युग की इन चुनौतियों से आगे रहने के लिए, पेशेवरों को ऐसी जागरूकता रणनीतियाँ विकसित करनी होंगी जो समस्याओं के घटित होने से पहले ही उनकी रोकथाम कर सकें, न कि केवल बाद में प्रतिक्रिया दें।

डिजिटल परिवेश में सतर्क अधिकारी के लिए आवश्यक सिद्धांत

आइए उन प्रमुख सिद्धांतों पर विचार करें जिन्हें आज के डिजिटल वातावरण में प्रत्येक अधिकारी को समझना और अपनाना चाहिए। ये सिद्धांत अधिकारियों को जागरूक बनाने, निर्णय क्षमता को सुदृढ़ करने तथा उभरते डिजिटल जोखिमों के प्रति तैयार रहने में व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इन सिद्धांतों की स्पष्ट समझ अधिकारियों को जिम्मेदारी से, सक्रिय रूप से और अपनी दिन-प्रतिदिन की भूमिकाओं में अधिक आत्मविश्वास के साथ कार्य करने में सक्षम बनाएगी।

1. डिजिटल एवं भौतिक आचरण में सत्यनिष्ठा

भौतिक और डिजिटल - दोनों क्षेत्रों में अडिग ईमानदारी का पालन करें। आपके कार्य, चाहे वे व्यक्तिगत हों, ई मेल के माध्यम से हों या किसी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर, निरंतर निगरानी में रहते हैं और दूसरों के लिए मानक निर्धारित करते हैं। डिजिटल नैतिकता संचार के साझा करने, पोस्ट करने और प्रेषित करने में विशेष सावधानी की अपेक्षा करती है। प्रबंधकों को यह समझना चाहिए कि उनकी डिजिटल छाप (ई मेल, संदेश, सिस्टम लॉग) भी उनके पेशेवर आचरण का ही हिस्सा है। अन्य लोग ऑनलाइन और ऑफ़लाइन दोनों में सही और गलत के संकेतों के लिए आपको देखते हैं।

2. निरंतर अनुपालन

नवीनतम नियमों, मानक परिचालन प्रक्रियाओं, डिजिटल गवर्नेंस नीतियों और वर्तमान के सीवीसी परिपत्रों की भी जानकारी रखें। आईटी सुरक्षा प्रोटोकॉल, ई गवर्नेंस प्रक्रियाओं और डेटा गोपनीयता से संबंधित कानूनी दायित्वों से अवगत रहना। यह प्रबंधकों को स्पष्ट, नियम-आधारित औचित्य के साथ सही निर्णय लेने और विकल्पों का बचाव करने की अनुमति देता है, खासकर जब डिजिटल अनुपालन मानकों को अक्सर अपडेट किया जाता है।

3. संरचित एवं पारदर्शी डिजिटल कार्यप्रणाली अपनाना

ऐच्छिक या तदर्थ निर्णय प्रक्रियाओं के स्थान पर सुव्यवस्थित और डिजिटल रूप से प्रलेखित कार्यप्रवाह अपनाएँ। परियोजना प्रबंधन और वर्कफ़्लो टूल्स निर्णयों की तार्किक श्रृंखला स्थापित करते हैं, जिससे त्रुटियों की संभावना कम होती है और ऑडिट हेतु स्पष्ट अभिलेख उपलब्ध रहते हैं।

4. डिजिटल वित्तीय शुचिता

वित्तीय शक्तियों का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग करें, जीईएम या ईआरपी सिस्टम जैसे प्लेटफार्मों पर प्रत्येक डिजिटल लेनदेन को सावधानीपूर्वक प्रलेखित और उचित ठहराया जाए। आवश्यकता, दक्षता और अनुपालन के लिए सभी लागतों की जांच करें, और वित्तीय प्रणालियों में मजबूत आंतरिक नियंत्रण पर जोर दें। उचित डिजिटल रिकॉर्ड और ऑडिट ट्रेड्स जानबूझकर धोखाधड़ी और अनजाने में वित्तीय चूक दोनों को रोकने में मदद करते हैं, व्यक्तिगत और संगठनात्मक जवाबदेही का समर्थन करते हैं

5. व्यापक डिजिटल रिकॉर्ड-रखने को बनाए रखें

प्रत्येक चरण के लिए तर्क को कैप्चर करने वाले

स्पष्ट रिकॉर्ड और डिजिटल दस्तावेज़ीकरण के माध्यम से सभी निर्णयों, विशेष रूप से उच्च-मूल्य वाले निर्णयों को उचित ठहराएं। सुरक्षित फ़ाइल प्रबंधन और अभिलेखीय सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें। एक ठोस डिजिटल पेपर ट्रेल न केवल आरोपों से बचाता है बल्कि नए टीम सदस्यों या लेखा परीक्षकों को किए गए निर्णयों को समझने और उनसे सीखने में सक्षम बनाता है।

6. निगरानी एवं पूर्वानुमान तकनीक के माध्यम से सतर्कता

आधुनिक सतर्कता केवल घटना-पश्चात जांच तक सीमित न रहकर सक्रिय जोखिम निवारण तक विस्तृत हो गई है। सिस्टम लॉग, पहुँच नियंत्रण और विशेषाधिकार प्रबंधन के माध्यम से मानवीय एवं डिजिटल गतिविधियों की निरंतर निगरानी, अनियमितताओं की शीघ्र पहचान को संभव बनाती है। जब इसे महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक और वित्तीय प्रक्रियाओं पर लागू पूर्वानुमानित विश्लेषण से सुदृढ़ किया जाता है, तो संभावित कमज़ोरियों की पहचान पहले से ही की जा सकती है। निगरानी और पूर्वानुमानित उपकरणों से प्राप्त अंतर्दृष्टि को प्रणालीगत सुधारों में भी समाहित किया जाना चाहिए - प्रक्रियाओं को परिष्कृत करते हुए, नियंत्रण की खामियों को दूर करते हुए और संस्थागत ढाँचे को निरंतर सुदृढ़ करते हुए। यह एकीकृत दृष्टिकोण केंद्रित पर्यवेक्षी हस्तक्षेप सुनिश्चित करता है और साथ ही निरंतर सुधार की संस्कृति को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे सतर्कता कदाचार और तकनीकी छेड़छाड़ के विरुद्ध एक दूरदर्शी सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित होती है।

7. सभी डिजिटल दस्तावेज़ों को सुरक्षित रूप से प्रबंधित और स्टोर करें

डिजिटल फ़ाइलों, ई-मेल, अनुबंधों और रिकॉर्ड को भौतिक दस्तावेजों के समान गंभीरता से लें। हानि या छेड़छाड़ को रोकने के लिए संस्करण नियंत्रण, एन्क्रिप्टेड स्टोरेज और नियमित बैकअप का उपयोग करें। भद्दे डिजिटल फ़ाइल हैंडलिंग से साक्ष्य, निरीक्षण या जवाबदेही का अपूरणीय नुकसान हो सकता है, जिससे अनजाने में नियामक उल्लंघन हो सकते हैं।

8. डिजिटल प्रक्रियाओं का अनुकूलन

कुशल, स्वचालित प्रक्रियाओं को बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाएं, जिससे नौकरशाही में देरी कम हो और भ्रष्टाचार या शॉर्टकट के लिए खिड़की कम हो। धीमी, कागजी या पुरानी डिजिटल प्रक्रियाएं न केवल उत्पादकता को बाधित करती हैं, बल्कि प्रक्रियात्मक बाधाओं के बहाने धोखाधड़ी की गतिविधि के लिए भी समय देती हैं।

9. पारदर्शी डिजिटल समितियाँ एवं सामूहिक निर्णय निर्माण

समिति बैठकों की कार्यवाही, निर्णय और तर्क को डिजिटल प्रणालियों में दर्ज करें। असहमति को भी रिकॉर्ड किया जाना चाहिए, ताकि सामूहिक उत्तरदायित्व सुनिश्चित हो सके।

10. शासन में डिजिटल पारदर्शिता

जहाँ संभव हो, खुले डेटा, ई गवर्नेंस डैशबोर्ड और सार्वजनिक प्रकटीकरण को अपनाएँ। पारदर्शिता भ्रष्टाचार के विरुद्ध सबसे प्रभावी निवारक है।

11. डिजिटल प्रदर्शन निगरानी के माध्यम से जवाबदेही

डैशबोर्ड और ऑडिट लॉग के माध्यम से अनुपालन, कार्य निष्पादन और दक्षता की निगरानी करें। यह आत्म सुधार और उत्तरदायित्व की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है।

12. सतत प्रशिक्षण एवं तकनीकी अद्यतन

अधिकारी एवं कर्मचारी नवीनतम कानूनी प्रावधानों, तकनीकी उपकरणों और क्ज्क द्वारा जारी अद्यतन दिशा निर्देशों पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लें। सतत क्षमता विकास ही प्रभावी सतर्कता की कुंजी है।

डिजिटल माध्यमों से संचालित शासन के इस युग में सतर्क प्रबंधक की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और जटिल हो गई है। यह लेख दर्शाता है कि सतर्कता अब केवल प्रतिक्रियात्मक अनुपालन का विषय नहीं, बल्कि एक सक्रिय, प्रौद्योगिकी सक्षम और मूल्य आधारित संस्कृति है। डिजिटल नैतिकता का पालन, सुदृढ़ अभिलेख प्रबंधन, पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण और सतत प्रशिक्षण-ये सभी आज के सार्वजनिक अधिकारी के लिए अनिवार्य अपेक्षाएँ हैं। अंततः, सतर्कता किसी एक पदाधिकारी का कार्य मात्र नहीं, बल्कि एक साझा उत्तरदायित्व, व्यावसायिक नैतिकता और जन विश्वास है, जिसे प्रत्येक प्रबंधक को भौतिक और डिजिटल-दोनों क्षेत्रों में दृढ़ संकल्प, निरंतरता और साहस के साथ निभाना चाहिए।

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित तमिल कवि - आर. वैरामुथु

ग्रेश विनिशिया
(पत्नी अगस्टिन अन्पुराज,
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी)

आर वैरामुथु रामस्वामी तमिल फिल्म उद्योग के में काम करने वाले एक भारतीय गीतकार, कवि और उपन्यासकार हैं। वह तमिल साहित्य जगत के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वैरामुथु का जन्म 13 जुलाई 1953 को तमिलनाडु के थेनी जिले के मेट्टूर गांव में एक कल्लर परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता श्री रामस्वामी थेवर और अंगम्मल जो कृषि-खेती करने वाले थे। 1957 में उनके परिवार को वदुगपट्टी जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने तमिल विद्वान और मीनाक्षी महिला कॉलेज में पूर्व प्रोफेसर पोनमणि से शादी की है। उनके दो बेटे हैं, मदन कार्की और कबिलन, जो दोनों तमिल फिल्मों के लिए गीतकार और संवाद लेखक के रूप में काम करते हैं। चेन्नई के पचैयप्पा कॉलेज में स्नातक की पढ़ाई के दौरान उन्हें एक वक्ता और कवि के रूप में सराहा गया। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से तमिल साहित्य में स्नातकोतर उपाधि हासिल की।

फिल्म करियर:

वर्ष 1980 में निर्देशक भारतीराजा द्वारा 'निषलगल' फिल्म के लिए गीतकार के रूप में आपका करियर शुरू हुआ। अपने करियर का पहला गाना 'पोन मालाइ पोषथु' था, जिसे 'इसैज्ञानी' इलैयाराजा ने संगीतबद्ध किया था और एस पी बालासुब्रमण्यम ने गाया था। उनका पहला गाना जो रिलीज़ हुआ था वह काली फिल्म से 'पत्राकाली उतमसीली' था, जो निषलगल से चार महीने पहले रिलीज़ हुई थी। वैरामुथु ने फिल्म उद्योग में पूर्णकालिक काम करने के लिए अनुवादक के रूप में अपना करियर छोड़ दिया।

वैरमुथु और इलैयाराजा ने बहुत ही सफल सहयोग की शुरुआत की जो आधे दशक से तमिल फिल्म को संगीतमय कर रहे है। भारतीराजा के साथ गीतकार और संगीतकार के संयोजन ने अधिक साउंड ट्रैक के साथ सफलता हासिल किया। वैरामुथु ने फिल्म 'तन्नीर तन्नीर' में संगीतकार एम एस विश्वनाथन के साथ भी काम किया। 1986 में उन्होंने 'नटपू' फिल्म के लिए पटकथा लेखक के रूप में शुरुआत की। 1991 में वैरामुथु ने अपने तीन प्रस्तुतियों के लिए एक गीतकार के रूप में काम किया जो अगले वर्ष रिलीज़ होने वाले थे 'वानमे एल्लई, अन्नामलाई और रोजा'। वैरामुथु को 90 के दशक और 2000 के दशक की शुरुआत में संगीतकार के साथ उनके काम के लिए तमिल फिल्म उद्योग में जाना जाता है। अपने लगभग 40 साल के करियर के दौरान उन्होंने 150 से अधिक संगीत निर्देशकों के साथ काम किया है। उन्होंने सिनेमा के लिए आठ हजार से अधिक गीत लिखे हैं। उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार के रूप में सात बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से

सम्मानित किया गया था। गीतों के अलावा, वैरामुथु ने कविताएँ भी लिखी हैं जो फिल्मों में संवाद का हिस्सा हैं। उन्होंने कई टेलीविजन शो के थीम गीत और विज्ञापनों के लिए जिंगल भी लिखे हैं। इनमें सबसे उल्लेखनीय तमिल सोप ओपेरा सित्ति है।

साहित्य में योगदान:

वैरामुथु ने तमिल भाषा में 37 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें कविता,गीत और उपन्यास भी है। इनमें से कई का अंग्रेजी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, रूसी और नॉर्वेजियन में अनुवाद किया गया है। आपको कई देशों में आयोजित प्रमुख तमिल सम्मेलनों में वक्ता भी बनाया गया है। साहित्य में उनके काम के लिए उन्हें भारत के पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 'कवि साम्राट' पुरस्कार, पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा 'कापिए कविग्नार' (महाकाव्य कवि) और पूर्व मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा 'कविपेरारसु' (कवियों का सम्राट) की उपाधि से सम्मानित किया गया था। आप ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित तीसरे तमिल साहित्यकार है। इसके पहले दिए गए पुरस्कार गद्य साहित्य के लिए रहे जबकि यह तमिल कविता के लिए दिया गया है। ज्ञानपीठ पुरस्कार घोषणा के बाद कवि ने कहा कि - मैं यह पुरस्कार आपनी मिट्टी और जनता को समर्पित करता हूँ। इस सम्मान ने मेरी आयु को नव- यौवन का अनुभव करा दिया है, यहाँ से आगे मेरी यात्रा एक नई ऊर्जा और ताज़गी भरी छलांग के साथ जारी रहेगी। वर्ष 2003 में पद्मश्री, वर्ष 2014 में पद्मभूषण और 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित आर वैरामुथु तमिल साहित्य एवं फिल्म जगत के सशक्त कलाकार एवं सम्राट भी है।

रचनात्मक कोना

पी. मिधुन बाबू
उप प्रबन्धक (सामग्री/एमएसएस)

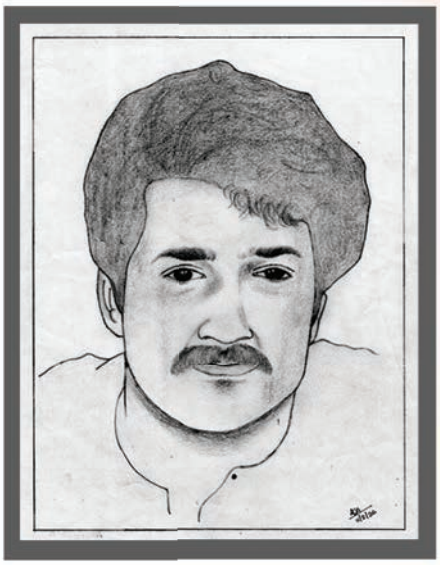

आतिरा के.ए.
वरि

प्रिया ज़क्करिया
(सहायक प्रबन्धक
(सिस्टम्स/सामग्री))

महान विचार, एक भाषा - हिंदी

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

भारत की प्रत्येक भाषा, भारत की संस्कृति का गहना है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है और किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी की प्रतिस्पर्धा नहीं है।
– अमित शाह (माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री)

15.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

मेरा आग्रह पूर्वक कथन है कि इस अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी भाषा के अध्ययन में लगाएं
– आचार्य विनोबा भावे

16.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।
– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

17.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले लोग सच्चे भारत बंधु है।
– महर्षि अरविंद

18.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

देवनागरी दुनिया की सर्वाभिक वैज्ञानिक लिपि है। हिंदी विश्व की महान भाषा है।
– राहुल सांकृत्यायन

19.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

भारतीय जनता के बीच काम करने के लिए हिंदी ही एक मात्र साधन है।
– लोकनायक जयप्रकाश नारायण

20.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात हिंदी।
– रवींद्रनाथ ठाकुर

22.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

हिंदी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।
– डॉ. ग्रियर्सन

23.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।
– नरेंद्र मोदी (माननीय प्रधान मंत्री)

24.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती:
– सुभाषचंद्र बोस

25.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

हिंदी भारतीय संस्कृति की भाषा है:
– कन्हैयालाल त्रिपाठी

26.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।"
– (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

29.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

हिंदी विश्व की महान भाषा है
– राहुल सांकृत्यायन

30.09.2025

हिन्दी माह समारोह 2025
सितंबर 01 से 30 तक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

पंजीकृत/निगमित कार्यालय एवं फैक्टरी, अंबलमुगल - 682302, एरणाकुलम जिला, केरल, भारत

दूरभाष : 0484 - 2720911-13, 2720844, वेबः www.hoclindia.com, फेसबुकः fb.me/hoclindia, ट्विटरः twitter.com/organic_ltd